खण्डिता

नायिका जिसका पति रात किसी
परायी स्त्री के साथ गुजारता है

एक अंतरधार्मिक जोड़े की अनूठी प्रेम-कहानी

डॉ. निर्जर वृन्द

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Nirjar Vrind 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7018-520-3

Cover design: Yash Singhal
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: May 2025

समर्पण

यह उपन्यास मेरे पूज्य दादाजी **स्वर्गीय गनौरी मंडल** एवं मेरी पूज्य दादी **स्वर्गीय तस्वीर देवी** की पावन स्मृति को समर्पित है, जिनकी प्रेरणा, आशीर्वाद व संस्कारों ने मुझे सदैव सत्य, सेवा और समर्पण के मार्ग पर चलने की दिशा दी I यद्यपि वे शारीरिक रूप से आज मेरे साथ नहीं हैं, परन्तु उनका आशीर्वाद और आदर्श मेरे जीवन और इस उपन्यास की यात्रा के हर पड़ाव पर मेरे साथ बना रहा I उनके प्रति मेरी यह विनम्र श्रद्धांजलि है I

अभिस्वीकृति

मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ उन सभी व्यक्तियों और संस्थाओं के प्रति जिनका योगदान इस उपन्यास के लेखन में अमूल्य रहा है I

सबसे पहले मैं अपने परिवार, विशेष रूप से बड़े पापा- **डॉ. सूर्य नारायण मंडल** व बड़ी माँ- **श्रीमती ममता नारायण** का धन्यवाद करता हूँ, जिनके आशीर्वाद के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता I

मैं अपने मार्गदर्शक व आदर्श, पिता- **श्री खगेन्द्र कुमार** व माँ- **श्रीमती सुधा कुमारी सिन्हा** का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सुझाव, सलाह व आशीर्वाद ने इस उपन्यास को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई I उनके बिना इस यात्रा की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी I

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपने गुरुजनों- **डॉ. जगधर मंडल** व **डॉ. कमल प्रसाद** का जिनके आशीर्वाद, सलाह व दृष्टिकोण ने मेरी लेखन यात्रा को एक नई दिशा दी I

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपने बड़े भाई- **मिस्टर ऋषि देवेश** और **डॉ. अतुल समीरण** का तथा भाभी- **गुड़िया कुमारी** का जिनके प्रोत्साहन ने मुझे पग-पग पर प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप मैं एक कल्पना को किताबी रूप दे पाया I

मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपनी बड़ी बहन- **कुमारी उर्वी नंदिनी** और **अर्चना कुमारी** का तथा बहनोई- **ई. सुमन सौरव** का जिनके विचार ने मेरे लेखन को प्रेरित किया I

मैं आभार व्यक्त करता हूँ मेरी मित्र- **मिस मारिया जहाँ** का जिसने इस लेखन यात्रा के दौरान कदम-कदम पर मेरा समर्थन किया I

मैं आभार व्यक्त करता हूँ भांजा- **अमृतांशु पटेल** व भतीजी- **कृति कनक** और **आर्या पृशा** का जिनके प्यार ने मुझे एक नई उर्जा दी I

मैं आभार व्यक्त करता हूँ उन नायकों व पात्रों का भी, जो कभी मेरे भीतर जीवित हुए और इस उपन्यास को आकार देने में मदद की I

और अंत में, मैं उन पाठकों का आभार व्यक्त करता हूँ, जो मेरे शब्दों में आत्मा और जीवन को खोजते हैं I आपकी प्रतिक्रिया और सराहना मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है I

प्रारंभ से पहले,

मेरे मन की बात

“कहते हैं प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन यह कथन हर परिस्थिति में सत्य नहीं ठहरता I अक्सर लोग आँखों से देखी बात को अंतिम सत्य मान लेते हैं, किन्तु जो दिखाई देता है वह हमेशा सत्य हो- यह जरूरी नहीं I कभी-कभी दृश्य भी भ्रम पैदा करते हैं, और सत्य की परख केवल देखने से नहीं, बल्कि विवेक, अनुभव और प्रमाण के आधार पर की जानी चाहिए I”

वर्तमान समय में हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ तकनीक, मीडिया और दृश्य प्रभावों की प्रधानता है I लोग जो देखते हैं, उसी पर विश्वास करने लगते हैं. लेकिन यह विश्वास हमेशा सही नहीं होता I कई बार जो हमें दिखाया जाता है, वह सत्य का केवल एक पक्ष होता है या कभी-कभी पूरी तरह से झूठ का आवरण भी हो सकता है I सोशल मीडिया पर वायरल होते वीडियो, फोटोशॉप की गई तस्वीरें, और झूठी ख़बरें प्रत्यक्ष की सत्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं I

इतिहास भी हमें बताता है कि कई बार आँखों देखी बात भी धोखा दे सकती है I मृगतृष्णा एक ऐसा प्राकृतिक उदाहरण है जिसमें व्यक्ति पानी को प्रत्यक्ष देखता है, जबकि वह केवल भ्रम होता है I यही बात जीवन के

कई पहलुओं पर लागू होती है I झूठी गवाही, भ्रमजाल और मानसिक पूर्वाग्रह भी प्रत्यक्ष अनुभव को असत्य बना सकते हैं I

इसलिए यह कहना कि प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, एक आदर्श स्थिति में तो सही हो सकता है, परन्तु यथार्थ जीवन में विवेक, तर्क और अन्य प्रमाणों की आवश्यकता बनी रहती है I हमें हर दृश्य का मूल्यांकन उसके पीछे के सन्दर्भ, उद्देश्य और स्रोत को जानकर ही करना चाहिए I

“यादें कभी मरती नहीं हैं, यह तब तक जिन्दा रहती है जब तक साँसे चल रही होती है I हाँ, यह वक्त के साथ फीकी जरुर पड़ जाती है I”

- इसी उपन्यास से

“असली दर्द तो **‘पीड़ा’** में है।"

क्रम-सूची

1. झड़प 1

2. मिलन.. 14

3. विदाई.. 25

4. स्वागत 36

5. प्रतिशोध 40

6. पीड़ा 97

7. खण्डिता 131

1. झड़प

अपनी हसरत को पूरा होते देख "आमिरा" 'फूली नही समा रही है'। आज करण के साथ उसकी शादी है, शादी- जिसके सपने युवतियों को बालपन से ही आते हैं। और यदि यह अपने मनपसंद आदमी से हो तो इस 'सपने को चार चाँद लग जाते हैं'। भिन्न-भिन्न धर्मों से आने वाले करण और आमिरा की पहली मुलाकात 11 वर्ष पूर्व एक कक्षा के दौरान हुई थी जब वे एक ही विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर का कोर्स कर रहे थे। जहाँ करण के मन को आमिरा की खूबसूरती ने मोह लिया था तो वहीँ करण की मासूमियत ने आमिरा को मंत्रमुग्ध कर दिया था।

शादी के सपनों में खोयी आमिरा को सहसा किसी ने आवाज़ दिया-

"तू कहाँ खोयी हुई है देख करण तुझे लेने आ गया है।"

सपनों में खोयी आमिरा सपने से बाहर निकलती है। "अरे निगार तू कब आई? मैं तुम्हारा फोन लगा-लगाकर परेशान हो गई लेकिन तुम्हारा फोन कनेक्ट ही नही हो रहा था और तू तो जानती है मै तुम्हारे बिना शादी कर ही नहीं सकती।" आमिरा ने उत्सुकता में कहा।

निगार...आमिरा और करण की कॉमन फ्रेंड तथा आमिरा की बेस्ट फ्रेंड है, ये तीनों एक साथ एक ही विश्वविद्यालय में पढ़ा करते थे। किसी ज़माने में करण की मासूमियत पर निगार भी फ़िदा थी लेकिन, अपने बेस्ट फ्रेंड की खुशी के लिए उसने अपने प्यार का बलिदान दिया था।

“मेरे फोन की बैटरी खत्म हो गई थी, अरे बाप मेरे बिना शादी नहीं कर सकती....तो मैं जाती हूँ तू कुंवारी रह जा।” निगार ने ठहाका लगाते हुए कहा।

“वो सब छोड़...देख के बता करण दूल्हा बना हुआ कैसा दिख रहा है?” आमिरा ने उत्सुकता में कहा।

निगार- “हमेशा की तरह ‘मासूम’ व ‘सौम्य’। "

आमतौर पर बिहारियों की बारात डी.जे. और नागिन डांस के बिना अधूरी मानी जाती है, जब तक डी.जे. की आवाज़ दिल को छेदकर आर-पार ना हो जाये बिहारियों की बारात सफल नहीं मानी जाती। करण की बारात नागिन डांस करते-करते तथा जमीन पर लोटते-लोटते महाराजा होटल तक पहुँच जाती है।

महाराजा होटल शहर के बड़े होटलों में से एक है, जिसमे आये दिन शहर के बड़े गणमान्य लोगों की पार्टी-फंक्शन का आयोजन होता रहता है।

करण के खास मित्रों में से एक ‘अमन’ जो अभी-अभी डांस करते हुए गुलाटियां खाया है, अपने कपड़ों को हाथ से झाड़ते हुए करण के पास आता है।

“रे करण तेरे ससुराल में गोमांस नही चलता है न, मुझे अभी ही बता दो, लुगाई बनेगी तेरी और तू धर्म भ्रष्ट करवाएगा हमलोगों का।" अमन ने चिंतित मुद्रा में कहा।

अमन...करण के बचपन का मित्र है, दोनों मित्र एक-दूसरे की बचपन से अब तक की आप बीती को भली-भांति जानते हैं।

“नहीं, तुम्हारे लिए पनीर की सब्जी बनवाई है मैंने।” करण ने ठहाका लगाते हुए कहा।

अंतरधार्मिक विवाह अपने साथ कई विवादों को जन्म देता है। करण और आमिरा के लिए भी अपने रिश्ते को शादी तक पहुँचाना कोई आसान काम नहीं था। आमिरा के पिता "अशरफ हुसैन" शहर के एक बड़े बिज़नसमैन के साथ-साथ एक कट्टर मुस्लिम, पांच वक्त के नमाज़ी आदमी हैं, आमिरा जब पहली बार अपने पिता के पास करण के साथ अपनी शादी की बात करने को गई तभी उसके पिता ने उसे खुले शब्दों में कह दिया था कि ये शादी असंभव है तथा ये शादी शहर में हिंदू-मुस्लिम विवाद को जन्म दे सकता है। कुछ यही हाल करण के साथ भी था, करण के पिता "राकेश शर्मा" विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, तथा इस शादी को ले कर उनके मन में भी धारणा कुछ अशरफ हुसैन से मिलती-जुलती थी।

करण और आमिरा के अथक प्रयास ने या यूँ कहें कि करण और आमिरा के सच्चे प्यार ने दोनों परिवार से शादी की रजामंदी तो दिलवा दी, परन्तु दोनों परिवार से शादी के लिए शर्तें निर्धारित की गई। आमिरा के पिता अशरफ साहब की शर्त थी की ये शादी मुस्लिम रीति-रिवाज़ से होनी चाहिए तथा करण के पिता राकेश साहब की ये शर्त थी कि ये शादी हिंदू रीति-रिवाज़ से होनी चाहिए। अंततः मसला इस शर्त पर हल हुआ कि पहले ये शादी हिंदू रीति-रिवाज़ से होगी तत्पश्चात मुस्लिम रीति-रिवाज़ के साथ।

अक्सर देखा जाता है कि बारातियों की झुण्ड में एक ऐसा ग्रुप होता है जो चोरी छिपे शराब पी लेता है, और शराब की एनर्जी से शुरू होती है बारातियों व शरातियों के बीच तांडव। करण के एक चचेरे अंकल हैं "प्रणव" जिनका कि बगल के राज्य झारखण्ड में ठेके का बिज़नस है। हालाँकि पहले उनका यह बिज़नस बिहार में ही फल-फूल रहा था परन्तु, सरकार द्वारा बिहार में की गई शराबबंदी ने बिहार में ठेके का बेताज बादशाह बनने की उनकी महत्वाकांक्षा को धराशाई कर दिया। करण के पिता राकेश साहब का सभी बारातियों को सख्त निर्देश था कि कोई भी शराब पी कर बारात में शामिल

नही होगा बावजूद इसके करण के चाचा प्रणव ने ना केवल खुद शराब पिया अपितु अपने साथ-साथ 3-4 अन्य बारातियों को भी शराब पिला गए।

शराबियों की एक महत्वपूर्ण खासियत होती है, इसे खासियत नही बल्कि आडम्बर कहें तो ज्यादा उचित होगा कि- "जब वो नशे में होते हैं तो जानबूझकर पब्लिक में अपना इम्प्रेसन बनाने के लिए आवश्यकता से अधिक बोलते हैं और यदि उसी बीच महिलाओं के दर्शन हो जाएँ तो क्या ही कहने।" तभी शरातियों में से किसी की नाक में शराब की महक घुसती है, और वह इस बात की पुष्टि में लग जाता है कि ये महक कहीं बारातियों में से किसी के मुख से तो नही! वैसे तो शराब का अत्यधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है तथा इस्लाम धर्म में तो शराब को हराम माना गया है। इसी बीच उस शराती को इस बात की पुष्टि हो जाती है कि शराब का सेवन बारातियों में से ही किसी ने किया है तथा शरातियों के बीच ये खबर "जंगल में लगे आग की तरह फ़ैल" जाती है।

आमिरा के पिता अशरफ साहब गुस्से में आग बबूला होते हुए राकेश साहब को ढूँढ़ते हुए आते हैं। तभी बारातियों को सँभालते हुए राकेश साहब पर उनकी नजर पड़ती है तथा वो गुस्से में भागते हुए राकेश साहब की तरफ जाते हैं।

"राकेश जी ये शादी नही हो सकती, आप अपने बेटे की बारात वापस ले जा सकते हैं।" अशरफ साहब ने चिल्लाते हुए कहा।

"क्या हुआ अशरफ साहब? आप इतने गुस्से में क्यूँ हैं?" राकेश साहब ने हैरानी भरे स्वर में कहा।

"आप हमारा धर्म भ्रष्ट कराना चाहते हैं, ये शादी नही हो सकती आप बारात ले कर वापस चले जाइये।" अशरफ साहब ने अपनी आवाज़ की तीव्रता को दुगुना करते हुए कहा।

माहौल की गहमा-गहमी से सारे बाराती और शराती एक जगह इकट्ठे हो गए, आते -जाते लोग भी रुक कर तमाशा देखने लगे।

सामान्यतः लोग किसी भी तमाशे का तब तक मजा लेते हैं जब तक कि बात उन पर ना आ जाये। कुछ मिनटों में ही उस जगह पर पूरा मेला लग गया जिसमे 99 फीसदी लोग मजे लेने वाले थे तथा 1 फीसदी लोग ही इस बहस से प्रभावित होने वाले थे।

“आप कैसी बातें कर रहे हैं अशरफ साहब?” राकेश साहब ने हताशा में कहा।

“मैं कैसी बातें कर रहा हूँ?? जैसे आपको कुछ पता ही नहीं, आपने शराबियों को हमारे घर लाकर हमारे धर्म को भ्रष्ट करने का प्रयास किया है।” अशरफ साहब ने गुस्से में चिल्लाते हुए कहा।

“आप मुझे 2 मिनट का समय दीजिए अशरफ साहब मैं सब कुछ सही कर देता हूँ।” राकेश साहब ने घबराहट में कहा।

“क्या दो मिनट दूँ आपको, क्या आप इस बात से अनजान हैं कि शराब हमारे लिए हराम है?” अशरफ साहब ने गुस्से में खीझते हुए कहा।

दोनों परिवारों के मुखिया के बीच होती गहमागहमी को देख कर दोनों परिवार के समर्थक भी इस बहस में शामिल हो जाते हैं तथा माहौल और भी ज्यादा गरमा जाता है। अशरफ साहब के समर्थक में से एक नौजवान “मारूफ” ने धार्मिक कट्टरपंथी दिखाते हुए कहा-

“हम तो आपको पहले ही बोले थे चाचा जान, काफिरों पर भरोसा करने का नही है, लेकिन आपने अपनी लाडली के सामने मेरी बातों को तवज्जो नही दिया, आज परिणाम आपके सामने है, हम तो कहते हैं बारात को वापस भेजिए।"

इस्लाम धर्म में "बातिल विवाह" जायज है, बातिल विवाह- मतलब ऐसा विवाह जिसमे अपने करीबी रक्त-संबंधों के साथ विवाह या निकाह की जा सकती है। मारूफ..... आमिरा का चचेरा भाई है, दोनों एक साथ बड़े हुए। एक साथ बड़े होते-होते मारूफ कब आमिरा की खूबसूरती पर मंत्रमुग्ध हो गया उसे खुद भी समझ नही आया। आमिरा व करण की होने वाली इस शादी से सबसे ज्यादा झटका यदि किसी को लगा था तो वो था "मारूफ"।

अब तक रक्षात्मक रवैया अपनाई हुई बारातियों की झुण्ड मारूफ के इस कथन के बाद उग्र हो गई। बारातियों व शरातियों से सजी ये महफ़िल धार्मिक अखाड़े का रूप लेने की ओर अग्रसर हो गई।

"हमलोग भरोसे के लायक नही हैं तो आपके कौम के लोगों ने अब तक कौन सा भरोसे का काम कर दिया है, गद्दारी ही की है अब तक आपके कौम के लोगों ने देश के साथ।" बारातियों में से एक तथा करण के दोस्त अमित ने मारूफ के कथन के प्रतिउत्तर में चिल्लाते हुए कहा।

बिहारियों की खासियत है कि वो लोग दोस्ती बड़ा तगड़े ढंग से निभाते हैं। एक दोस्त को इस जंग में कूदता देख बांकी दोस्त कहाँ पीछे रहने वाले थे, एक-एक कर के दोनों पक्षों के सभी मित्र इस जंग में कूदने लगे। बाराती पक्ष से एक मित्र राहुल जो पेशे से स्कूल टीचर है ने अपनी ज्ञान की गंगा को बरसाते हुए कहा-

"आपलोग कह दीजियेगा कि काफ़िर भरोसे के लायक नही है.... तो क्या आपके बोलने से हो जायेगा? भरोसा हमलोग से ही शुरू और हमलोग पर ही खत्म होता है।"

"अपना ज्ञान अपने पास रखिये और अपनी बारात ले कर निकल लीजिए नही तो वापस जाने लायक नही रहिएगा।" मारूफ ने शिक्षक महोदय के प्रतिउत्तर में गुस्साते हुए कहा।

“कौन माई का लाल हमलोगों को यहाँ से भगा देगा, हम भी देखते हैं?” अमित ने मारूफ को चेतावनी देते हुए कहा।

“इससे पहले की कुछ अनहोनी घटना हो जाये अपनी महफ़िल को यहाँ से लेकर निकल लीजिए अंकल जी।" शराती पक्ष के एक नवयुवक आसिफ ने कहा।

देखते-देखते वहाँ पर उपस्थित दोनों पक्षों के लोग लाठी-डंडा लेकर आ गए। बिगड़ते माहौल को देखते हुए दोनों पक्ष के मुखिया ने अपने-अपने लोगों को समझाने का बीड़ा उठा लिया।

“आपलोग कृपया शांत हो जाइये....हम अशरफ साहब से बात कर रहे है न!” राकेश साहब ने बारातियों को शांत कराते हुए कहा।

“आपलोग शांति बनाये रखिये....हम राकेश साहब से मिलकर इस मसले का शांत हल निकालेंगे।" अशरफ साहब ने अपने लोगों के बीच शांति प्रिय बात रखने का प्रयास करते हुए कहा।

बेशक अशरफ साहब अपने लोगों को शांत करने में लगे थे परन्तु उनकी ये शादी नही होने देने की पुरानी इच्छा फिर से जाग गई थी और वो इस बात की कोशिश में लगे थे कि ये शादी टूट जाये।

“देखिये राकेश साहब.....वक्त की नजाकत को समझिए ...ये झगडा मजहबी झगडा होने की ओर बढ़ चला है....इसके पहले की हमारे हाथों से बात निकल जाये आप ये बारात ले कर यहाँ से चले जाइये अभी तो हालात ऐसे बन गए हैं कि आप अपनी पगड़ी भी मेरे क़दमों में रख दोगे तो मेरे लिए ये शादी करना संभव नही हो पायेगा.......हमलोग बाद में फिर कोई सा भी वक्त निकाल के शादी की तारीख मुक़र्रर करेंगे।" अशरफ साहब ने अपनी

आंतरिक इच्छा को संतुष्ट करने के लिए मज़बूरी का सहारा लेते हुए राकेश साहब से कहा।

इन सब घटनाओं को थोड़ी दूर खड़ी दूल्हा-गाड़ी से निहारने वाला करण के सब्र का बाँध टूट गया तथा वो गाड़ी से उतरकर अपने पिताजी व होने वाले ससुर (जिनके ससुर होने पर अब संशय के बादल मंडरा रहे थे) के समीप आता है। करण की सबसे बड़ी खासियत है कि वह धरती का बड़े-से-बड़ा तकलीफ बर्दाश्त कर सकता है परन्तु अपने पिता राकेश साहब को हारा हुआ नही देख सकता।

"पिताजी हमलोग वापस घर चलते हैं, मेरी मोहब्बत सच्ची जरुर है लेकिन इतनी भी सच्ची नही कि आपके सम्मान से बड़ी हो जाये, मेरे लिए आपका सम्मान सर्वोपरि है। अशरफ अंकल पूरे बारातियों की तरफ से मैं आपसे माफ़ी मांगता हूँ। हमलोगों को माफ कर दीजिए।" करण ने आत्मविश्वास भरे स्वर के साथ राकेश साहब तथा अशरफ साहब से कहा।

राकेश साहब करण के इस निर्णय से हैरान थे, उन्हें अपने कानों तथा आँखों पर विश्वास नही हो रहा था कि ये शब्द उसी करण के हैं जो चंद दिनों पहले इस शादी के लिए इतना प्रयासरत था........साथ ही आज गर्व हो रहा था अपने बेटे पर की उनके बेटे ने प्यार के आगे उनके सम्मान को तरजीह दिया। लेकिन अपने बेटे के प्यार की कुर्बानी का गम राकेश साहब को सताने लगा।

"बेटे लेकिन आमिरा....तुम्हारी मोहब्बत .....तुम्हारी शादी उसका क्या? एक बार आमिरा से तो बात कर लो।" डबडबाई आँखों से राकेश साहब ने करण की ओर देखते हुए कहा।

“पिताजी आप उन सब बातों को छोड़िये, आपका सम्मान जिन्दा रहना मेरे लिए जरूरी है, हमलोग वापस घर चलते हैं। ऐ बारात वापस घुमाओ रे।” करण ने बारातियों को वापस लौटने का इशारा करते हुए कहा।

इस पूरे घटनाओं का बीज बोने वाले करण के अंकल प्रणव इन सभी घटनाओं से अनभिज्ञ अपने पंटरों के साथ शराब के नशे में धुत हो कर गाडी में पड़े हुए हैं......तभी बारातियों में से किसी ने उन्हें ये खबर दी कि आपके वजह से आपके भतीजे की शादी नही हो पाई तथा उसकी बारात बिना दुल्हन के वापस लौट रही है।

नशे में धुत प्रणव को यह सुनते ही एक तगड़ा झटका लगा की उनकी इस हरकत से उनके भतीजे का प्यार उससे दूर जा रहा है। वह गिरते-पड़ते भागते हुए अशरफ साहब के पास पहुचते हैं।

“मैं अपनी भूल के लिए आपसे माफ़ी मांगता हूँ समधी साहब, मुझसे भूल हो गई थी मेरा इरादा आपका धर्म भ्रष्ट करने का बिलकुल नही था।” प्रणव ने लड़खड़ाती आवाज़ में माफ़ी मांगते हुए कहा।

“समधी किसे कहा आपने? ये अब तक आपके समधी नही हुए हैं...और ना अब होंगे....जाइये आपके भतीजे की बारात अपने वापसी के सफर का आधा रास्ता मुकम्मल कर चुकी है....जल्दी निकलिए नही तो जैसी आपकी हालत है आपको बुलडोजर की मदद से घर पहुँचाना पड़ेगा।” मारूफ ने प्रणव पर फब्तियां कसते हुए कहा।

माहौल की संगीनता ने प्रणव के नशे को लगभग तोड़ दिया था। अब वो लड़खड़ाने की जगह ठीक-ठाक खड़े हो पा रहे थे। उन्हें अब तक इस बात का पूरी तरह अंदाज़ा हो गया था कि उनके एक बेवकूफी भरी हरकत उनके भतीजे की जिंदगी को खराब कर रही थी, तथा, वो खुद की नजर में गिरने

लगे थे। इसलिए, मारूफ की फब्तियों को इग्नोर करते हुए वो अशरफ साहब की ओर बढ़े।

अशरफ साहब गलती मेरी है....मै इसके लिए आपका पैर पकड़ कर माफ़ी मांगने को तैयार हूँ....ये शादी हो जाने दीजिए। "प्रणव ने लगभग गिड़गिड़ाते हुए अशरफ साहब से कहा।"

बारातियों में शामिल एक शराबी को अपनी गलती का एहसास हो गया था, परन्तु प्रणव उस बारात में शामिल एकलौते शराबी नही थे। ये मानमनौव्वल का दौर चल ही रहा था कि इतने में एक और शराबी "आकाश" जो कि प्रणव का पुत्र है का घटनास्थल पर नशे में लोटते हुए आगमन होता है।

"कौन बारात वापस भेज रहा है??? यहाँ पर गोली चलेगा।" आकाश ने नशे में चिल्लाते हुए कहा।

आकाश का ये कहना प्रणव के सारे प्रयासों पर पानी फेर देता है। उसका ये कथन शांत हुए झगड़े की आग को फिर से सुलगा देता है। और ये आग इस बार भयावह रूप ले कर आता है।

"कौन बीप...... गोली चलाएगा, यहीं काट के रख देंगे?" मारूफ के दोस्त आकिब ने माँ की प्रसिद्ध गाली का इस्तेमाल करते हुए कहा।

"कौन बीप ......माँ की गाली देता है सामने आओ..." आकाश ने भी बदले में आकिब का स्वागत उसी माँ की प्रसिद्ध गाली से किया।

जो झगडा अब तक शीत युद्ध की हद तक सीमित था वो अब कहीं-न-कहीं भीषण युद्ध का रूप लेने लगा था।

कुछ ही क्षणों में दोनों पक्षों की तरफ से लाठी-डंडे, तलवार, फरसा इत्यादि शस्त्र जमा होने लगे। शादी का एक खुशनुमा माहौल युद्ध के अखाड़े

में बदलने को तत्पर था। तटस्थ पर इस प्रकार का भयावह माहौल होना यह बताने को उत्सुक था कि दोनों पक्षों की तरफ से ऐसे हालात पैदा करने कि साजिश पहले ही की जा चुकी थी। इस विवाह के दुश्मन इसे सांप्रदायिक दंगे का रूप देना चाहते थे।

“मारो काफिरों को।" मारूफ ने अपने खेमे को आदेश देते हुए कहा।

मारूफ के इतना कहते ही आकिब ने बाराती पक्ष पर पहला लाठी चला दिया। लाठी की तीव्रता इतनी तेज थी की जमीन पर टकराते ही लाठी दो टुकड़ों में बंट गई। वो तो गनीमत रहा की कोई लाठी के प्रहार के बीच में नही आया वरना लाठी की तीव्रता से उसके भी दो टुकड़े हो जाते। बहरहाल आकिब के इस प्रहार ने युद्ध के लिए शंखनाद का काम किया, इस प्रहार ने बाराती पक्ष की तरफ से शराबियों के अलावा कुछ सामान्य बारातियों को भी इस युद्ध में शामिल होने के लिए उकसाने का काम किया। दोनों तरफ से हाथापाई जारी है।

“रे शुभम लाओ खंती रे....मारेंगे खंती से इ अकिब्बा को दो फांक कर देंगे I” अमित ने हुंकार भरते हुए कहा।

“हाँ भिया वन मिनट ......लाते हैं खंती।” शुभम ने अमित की बात का समर्थन करते हुए कहा I

अक्सर ऐसा होता है कि जब दो पक्ष लड़ रहे होते हैं तो वहाँ कुछ लोग झगडा़ छुडवाने वाले भी होते हैं.....यहाँ भी दोनों पक्षों की तरफ से ऐसे लोग मौजूद हैं तथा उन्होंने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया। परन्तु, कट्टरपंथी के नशे में चकनाचूर ये युवा पीढ़ी कब का अपने संस्कारों का पुतला दहन कर चुकी है, उनलोगों को शांति समिति की कोई बात समझ नही आई। हाथापाई अनवरत जारी है। डी.जे. वाले, डांसर, सिंगर सभी कोई मूकदर्शक बने हुए हैं।

"ओ सिंगर बाबु, गाना गाओ....." झुण्ड में से किसी ने कहा।

सिंगर को कानों में आवाज़ तो आई परन्तु माहौल को देखते हुए उसने कोई संज्ञान नही लिया।

"ए सिंगर सुनाई नही देता....गाना लगाओ।" भीड़ में से फिर किसी ने सिंगर को आदेश दिया।

सिंगर ने फिर से उसकी बात को अनसुना कर दिया। सिंगर की उदासीनता को देखते हुए भीड़ में से किसी ने उसपर पत्थर चला दिया। पत्थर सिंगर के जिस्म पर तो नही लगा परन्तु इस पत्थर ने सिंगर के दिल में खौफ भर दिया।

"कौन सा गाना ....सर?" सिंगर ने डरते हुए कहा।

"हर कदम पर कोई कातिल है...कहाँ जाये कोई???" भीड़ में से आवाज़ आई।

"ए लगाओ म्यूजिक रे...." सिंगर ने बाजे वाले से कहा।

पूरी महफ़िल "हर कदम पर कोई कातिल है....कहाँ जाये कोई" गाने से गूँज उठी। गाना चलवाने वाले ने भी माहौल को देखते हुए बड़ा सटीक गाना चलवाया.....लगातार होती हाथापाई..... उस पर से ये गाना......महफ़िल लूट लिया इस गाने ने। माहौल को भयावह होता देख किसी ने पुलिस की हेल्प लाइन नंबर 112 पर कॉल कर दिया। पुलिस की गाडी भी मुस्तैदी दिखाते हुए 5 मिनट के अंदर घटनास्थल पर पहुँच गई। पुलिस की गाडी़ देखते ही दोनों पक्ष के उग्र लोगों को अचानक सांप सूंघ गया। माहौल ने 180 डिग्री पर कुछ यूँ पलटी मारी जैसे यहाँ कुछ हुआ ही ना हो। 112 नंबर की गाड़ी के इन्चार्ज राजीव ने सिंघम स्टाइल में एंट्री लिया।

"क्या हो रहा है यहाँ पर...किसने फोन किया था?" इन्चार्ज राजीव ने कड़क आवाज़ में पूछा।

वातावरण में शांति बनी रही .... तब तक लोकल थाने की पुलिस भी मौके पर पहुँच गई, चूँकि पुलिस को किसी ने दंगा भडकने की सूचना दी थी इसलिए दंगा नियंत्रण वाहन को भी बुला लिया गया और देखते-ही-देखते पूरा क्षेत्र पुलिस छावनी में तब्दील हो गया।

"किसने फोन किया था सामने आओ?" इन्चार्ज राजीव ने चिल्लाते हुए कहा।

फोन करने वाले ने शांति स्थापित करने के उद्देश्य से पुलिस को फोन तो कर दिया था परन्तु उसे इस बात का भय था कि पुलिस के जाने के बाद दोनों पक्ष के लोग कहीं उसे ही बलि का बकरा ना बना दें। इसलिए वो भीड़ में खुद को छिपाए हुए था।

"किसकी शादी हो रही है यहाँ पर?" थानेदार प्रिंस ने भीड़ से पूछा।

"मेरे बेटे की ....मेरी बेटी की......" भीड़ में से दो आवाज़ आई।

आवाज के साथ-साथ दो शख्स भीड़ से बाहर आये। एक शख्स राकेश साहब थे तथा दूसरे शख्स थे अशरफ साहब।

2. मिलन

बाहर के उलझनों से अनजान, दुल्हन का जोड़ा पहने महाराजा पैलेस के कमरे में अपने मोहब्बत का इंतजार कर रही आमिरा के सब्र का बाँध टूट गया।

"निगार, ये लोग अब तक बाहर ही हैं....थोडा देख न ....बात क्या है?" आमिरा ने परेशानी की मुद्रा में निगार से कहा।

"ठीक है मैं देखती हूँ, तू परेशान मत हो।" निगार ने आमिरा को दिलासा देते हुए कहा।

निगार ने होटल की बालकनी से झाँक कर देखा, कुछ लोगों की भीड़ के साथ-साथ उसे कुछ पुलिस वाले दिखे। उसे कुछ विशेष समझ नही आया लेकिन वह इतना समझ गई की यहाँ पर सब कुछ सामान्य नही है। मामले की तह तक जाने के लिए वो होटल के नीचे घटनास्थल की ओर कूच कर गई।

नीचे घटनास्थल पर पुलिस के समक्ष राकेश साहब तथा अशरफ साहब के बीच एक-दूसरे पर दोषारोपण का दौर जारी है।

"बाराती खेमे के लोग ने शराब का सेवन कर हमारे धर्म को भ्रष्ट करने का प्रयास किया है, हमारे लोगों ने इन्हीं बातों का विरोध किया जिसके परिणामस्वरूप उनके लोग मार-पीट के लिए आमादा हो गए।" अशरफ साहब ने राकेश साहब पर आरोप लगाते हुए कहा।

"मैं मानता हूँ पहली गलती हमारे लोगों की तरफ से हुई है जिसके लिए मैंने और मेरे लोगों ने माफ़ी भी मांग लिया था, लेकिन इनके लोगों ने धार्मिक अभद्रता किया जो कि इस झगड़े का मूल कारण है।" राकेश साहब ने अपने बचाव की बात व अशरफ साहब पर झगड़े का ठीकरा एक साथ फोड़ते हुए कहा।

"आपदोनों शहर के रसूखदार व जिम्मेदार आदमी हैं, आपका आपस में झगड़ना शोभा नही देता। लोग आपलोगों का अनुकरण करते हैं आपलोगों को आपसी प्रेम व भाईचारा कायम रखनी चाहिए ना कि धार्मिक कट्टरता फैलानी चाहिए।" इन्चार्ज राजीव ने राकेश साहब व अशरफ साहब को समझाते हुए कहा।

"बात चाहे जो भी रही हो...गलती जिसकी भी रही हो ....कानून का उलंघ्घन तो हुआ है आपदोनों को थाना चलना होगा।" थानेदार प्रिंस ने राकेश साहब व अशरफ साहब से कहा।

"तो चलिए थानेदार साहब।" अशरफ साहब व राकेश साहब ने एक स्वर में थानेदार प्रिंस से कहा।

हुड़दंग मचाने वाले लगभग सभी हुड़दंगी मौका पाकर भाग गए। कुछेक रह गए थे जिसे पुलिस अपने साथ उठाकर थाने ले गई। दूसरी तरफ, होटल के कमरे में परेशान आमिरा, निगार की राह देख रही है। तभी दौड़ती-हांफती निगार का कमरे में आगमन होता है।

“क्या हुआ तू इतनी घबरायी हुई क्यूँ है?" आमिरा ने उत्सुकता में निगार से पूछा।

200 किमी प्रति घंटा की रफ़्तार से भाग कर आई हुई निगार के मुंह से सांस के अलावा दूसरा कोई आवाज़ नही निकल रहा है। आमिरा उसे पकड़ कर पास खड़े कुर्सी पर बिठाती है।

“बैठ पहले तू...सांस ले ले अच्छे से।”आमिरा ने निगार को पास खड़ी कुर्सी पर बिठाते हुए कहा।

निगार का भागते हुए आना, चेहरे की अजीब-सी घबराहट आमिरा को ये बताने के लिए पर्याप्त थी कि बाहर जरुर कोई अनहोनी हुई है....फिर भी वो निगार को सामान्य हालत में लाने को अपनी प्राथमिकता समझ रही थी।

“पानी पिएगी?" आमिरा ने निगार की केयर करते हुए पूछा।

"नहीं, मै ठीक हूँ ...लेकिन बाहर जो हुआ वो जानने के बाद तू ठीक नही रहेगी I" निगार ने हांफते हुए कहा।

बाहर की गतिविधियों को जानने की अभिलाषा के साथ-साथ आमिरा की हार्ट-बीट भी बढती जा रही है।

"क्या हुआ...बोल न?" आमिरा ने जिज्ञाषा का भाव लिए निगार से पूछा।

"अशरफ अंकल और करण के पापा को पुलिस पकड़ कर ले गई, अब तेरी शादी नही हो सकती।" निगार ने हांफते हुए कहा।

"पुलिस पकड़ कर ले गई...लेकिन क्यूँ?" आमिरा ने बेचैनी का भाव लेते हुए पूछा।

"मुझे ज्यादा पता नही है...कुछ हिंदू-मुस्लिम दंगा-फसाद सा माहौल बन आया था। तू करण को फोन कर के पूछ न कि क्या बात हुई है?" निगार ने अपनी तेज चलती सांस को थोडा नियंत्रित करते हुए कहा।

"ठीक है..मै करण से पूछती हूँ"। आमिरा ने टेबल पर रखे फोन को उठाते हुए कहा।

"हेलो! हेलो! हाँ करण.....कहाँ हो तुम?" आमिरा ने फोन पर करण से कहा।

"मै पुलिस थाने में हूँ.....क्यूँ क्या हुआ?" करण ने झुंझलाते हुए कहा।

"थाने में तुम हो...और तुम मुझसे पूछ रहे हो क्या हुआ?" आमिरा ने अपनी आवाज की तीव्रता को बढ़ाते हुए कहा।

"हमारी शादी नही हो सकती...." करण ने गुस्से में खीझते हुए फोन को डिस्कनेक्ट करते हुए कहा।

अगर कोई परेशान हो और उस परेशानी में यदि सामने वाला अपना फ्रसट्रेशन दिखाए तो और ज्यादा गुस्सा आता है। करण का खीज कर फोन रखने से आमिरा का गुस्सा अपने चरम सीमा पर पहुँच जाता है। और वह गुस्से में करण को फिर से फोन लगाती है। इस बार करण ने फोन नही उठाया, एक-के-बाद-एक करके आमिरा ने करण को 17 कॉल किया...17 वें कॉल में करण ने आमिरा का फोन उठाय। तब तक आमिरा का गुस्सा उफान मार रहा था।

"अंधे हो गए हो या बहरे हो गए हो जो तुम्हे मेरा कॉल ना दिखाई दे रहा है और ना ही सुनाई दे रहा है????" आमिरा ने फोन की दूसरी तरफ वाले व्यक्ति की आवाज़ सुने बिना गुस्से से चिंघाड़ते हुए कहा।

"आमिरा मैं हूँ अमन... करण दरोगा जी के पूछ-ताछ में व्यस्त है, इसलिए उसने अपना फोन मुझे दे रखा है।" अमन ने फोन पर फुसफुसाते हुए कहा।

"हाँ तो तुम अंधे-बहरे हो जो तुम्हे मेरा फोन ना दिखाई दे रहा है और ना ही सुनाई दे रहा है?" आमिरा ने अमन के फुसफुसाहट का जवाब अपनी चिंगाढ़ से दिया।

"आमिरा यहाँ माहौल सही नही है...पुलिस अशरफ अंकल और राकेश अंकल पर धारा 295 A लगाने जा रही है तथा ये दोनों आपस में ही बार-बार उलझ रहे हैं।" अमन ने माहौल का हवाला देते हुए अपना दुखड़ा सुनाते हुए कहा।

"धारा 295 A ये तो हिंसा भडकाने वाली धारा है न?" आमिरा ने धारा की पुष्टि करने के उद्देश्य से पूछा।

"हाँ! प्रणव अंकल और मारूफ को हाजत में डाल दिया गया है.... करण जब फ्री होगा तो मै कहूँगा कि वो तुमसे बात कर लेगा।" अमन ने आमिरा को दिलासा देते हुए कहा तथा फोन काट दिया।

दिन भर अपनी शादी के जश्न में डूबी आमिरा के लिए ये घटना एक सदमे की तरह था। वो मेहँदी, बिंदी, गहने, लाली ये सारे श्रृंगार फीके हो चले थे। उसकी जिंदगी का सबसे खुशियों वाला पल सबसे घटिया व भयावह पल बनने की ओर अग्रसर हो चला था। आज पहली बार उसे अपने प्यार को खोने का डर सताने लगा था। ये डर उसे तब भी नही था जब उसके माता-पिता करण के साथ शादी के लिए राज़ी नही हो रहे थे। उसे उसके पिता की बात याद आ रही है.... "ये शादी धार्मिक विवाद को जन्म देगी, ये शादी हिंदू-मुस्लिम दंगे को जन्म देगी।" आज उसे ये बात सच प्रतीत होती दिख रही थी...माहौल ही कुछ ऐसा बन चला था। मन में बहुत सी उलझन ने घर कर लिया था... आज उसे करण के साथ शादी के अपने फैसले पर पहली बार थोडा़ पछतावा हो रहा था। काश! मै करण से शादी का फैसला नही करती तो आज मेरे अब्बू को मेरी वजह से इस संगीन इल्जाम में जेल नही

जाना पड़ता। काश, मैं उनकी बात मान लेती, मुझे इस रिश्ते को आगे बढ़ने ही नही देना चाहिए था। मै अच्छी बेटी नही हूँ। लेकिन, इन सब में करण का क्या दोष है...? उसने तो मुझे प्यार किया था बेइंतहा प्यार... फिर उसके अब्बू को भी तो जेल हो रही है.... क्या वो भी मेरी तरह स्वार्थी हो कर सोच रहा है? नहीं..मैं ना तो अपने अब्बू को जेल होने दूंगी और ना ही उसके अब्बू को.... और ना ही ये शादी टूटेगी।

कहते हैं नारी शक्ति पूरे ब्रह्माण्ड की सबसे बड़ी शक्ति है, ब्रह्माण्ड की बड़ी-से-बड़ी शक्तियां भी नारी शक्ति के सामने दम तोड़ देती है। नारी चाहे तो क्या नही कर सकती! नारी चाहे तो सावित्री बन कर यमराज से अपने मृत पति के प्राण को छीन लाए....नारी चाहे तो दुर्गा बन कर महिषासुर जैसे अजेय असुर का संहार कर दे....नारी चाहे तो द्रौपदी बन कर अधर्म के नाश की जिम्मेदारी ले ले....नारी चाहे तो झाँसी की रानी बन कर अकेले अंग्रेजों से लोहा ले ले ...नारी चाहे तो नर्क को स्वर्ग कर दे।

आमिरा अपने मिशन को पूरा करने के लिए निगार के साथ थाने की ओर कूच कर जाती है।

इधर थाने में थानेदार प्रिंस ने थाने में लाए गए सारे बारातियों व शरातियों को हाजत में बंद कर रखा है।

"थानेदार साहब आप एक प्रोफेसर को हाजत में नहीं डाल सकते...।" राकेश साहब ने थानेदार पर चिल्लाते हुए कहा।

“माफ कीजियेगा प्रोफेसर साहब ये मेरा पुलिस स्टेशन है.... आपके विश्वविद्यालय का क्लास रूम नहीं और ना ही मै आपका विद्यार्थी हूँ... आपने तथा आपके लोगों ने कानून तोड़ा है तो खामियाजा भुगतना ही पड़ेगा।" थानेदार प्रिंस ने राकेश साहब को चेतावनी देते हुए कहा।

“क्या कानून तोड़ा है हमलोगों ने.... वो हमारा पारिवारिक विवाद था हमलोग मिलकर समस्या का हल कर रहे थे, आपने बीच में आ कर हमलोगों को उठा लिया।" अशरफ साहब ने थानेदार प्रिंस से कहा।

“सड़क के बीचों-बीच तलवार, कुदाल, खंती, शराब ले कर आप कौन-सा पारिवारिक समस्या का हल कर रहे थे अशरफ साहब....क्या आपको ज्ञात नही है कि हमारे प्रदेश में शराब-बंदी है? चुपचाप शांति से खड़े रहिये...वर्ना एक धारा और आपलोगों का इंतजार कर रही है।" थानेदार प्रिंस ने अशरफ साहब को चेतावनी देते हुए कहा।

“सर, शराब हमने पिया था...इस बात की जानकारी ना राकेश भैया को थी और ना ही समधी साहब को थी... इनलोगों का कोई दोष नही है, इन्हें जाने दीजिए।" प्रणव ने थानेदार प्रिंस से अनुरोध करते हुए कहा।

प्रणव के मुंह से समधी साहब शब्द का निकलना मारूफ के कान को फिर से चोट कर गया। उसके मन में प्रणव के लिए “रस्सी जल गई पर बल नही गया” वाला मुहावरा चरितार्थ होने लगा। वह मन ही मन प्रणव को गाली दे रहा था परन्तु, थानेदार के डर से गाली उसकी जुबान पर नही आ पा रही थी। तभी थाने में निगार के साथ आमिरा का आगमन होता है.।

“सर..मैं आमिरा...मेरी ही शादी होने वाली थी... आपने मेरे होने वाले शौहर, मेरे अब्बू, मेरे होने वाले ससुर समेत मेरे कई रिशेदार को अरेस्ट कर लिया है। कृपया उन्हें छोड़ दीजिए।" आमिरा ने थानेदार प्रिंस से कहा।

थानेदार ने आमिरा को नीचे से उपर तक देखा और पान चबाते हुए कहा-

“अच्छा तो आप हैं दुल्हन। मैडम पुलिस को शौक नही है किसी को यूँ ही उठाने का... संगीन जुर्म किया है आपके इन रिश्तेदारों ने।" थानेदार प्रिंस ने आमिरा से कहा।

“कैसा जुर्म?"

“शराब पी कर धार्मिक दंगे भड़काने की कोशिश करी है आपके इन रिश्तेदारों ने।" थानेदार प्रिंस ने आमिरा को आँख दिखाते हुए कहा।

“क्या आपके परिवार में झगड़ा नही होता?" ये हमारे परिवार का झगड़ा था... इसमें पुलिसिया कारवाई की आवश्यकता नही थी।" आमिरा ने थानेदार से कहा।

“पारिवारिक झगड़े सड़क पर नही होते मैडम... और शराब भी पी रखा है आपके परिवार के लोगों ने।" थानेदार प्रिंस ने कहा।

“किसने शराब पी रखा है....क्या करण ने शराब पीया या मेरे अब्बू ने या फिर राकेश अंकल ने...किसने शराब पीया है?" आमिरा ने थानेदार प्रिंस पर चिल्लाते हुए कहा।

“चिल्लाइये मत मैडम..... अन्यथा पुलिस की कारवाई में दखल देने के मामले में आपको भी हवालात की सैर करनी पड़ जायेगी।" थानेदार प्रिंस ने आमिरा को धमकाते हुए कहा।

“जिसके अब्बू... जिसका शौहर हवालात में हो उसे हवालात का डर मत दिखाइए सर, जितनी जल्दी हो सके मुझे भी हवालात के अंदर ले लीजिए।" आमिरा ने थानेदार प्रिंस के प्रतिउत्तर में कहा।

“मैडम जज्बाती मत बनिए....आप जाइये ... हमें हमारा काम करने दीजिए।" थाने के ही एक दरोगा धर्मेन्द्र ने आमिरा से कहा।

“नहीं सर...मैं आई हूँ तो अपने पिता और पति को ले कर ही जाउंगी, अन्यथा मुझे भी गिरफ्तार करो आप..... मुझे समझ नही आता कि मेरे पति और पिता का दोष क्या है जो आप उन पर इतनी संगीन धारा लगाने जा रहे हो....या तो उन्हें बाहर करो या फिर मुझे भी अंदर करो।" आमिरा ने दरोगा धर्मेन्द्र से कहा।

आमिरा के मुंह से करण को लेकर बार-बार शौहर का संबोधन मारूफ के कानों को खटक रहा था, पुलिस का भय उसके मन में चल रहे विकार को बाहर नही आने दे रहा था। अंततः उसके सब्र का बाँध टूट गया।

“करण तुम्हारा शौहर नहीं हुआ है अब तक, तुम बार-बार उसे अपना शौहर कह कर मर्यादा लांघ रही हो।" मारूफ ने चिल्लाते हुए आमिरा से कहा।

चूँकि आमिरा इस बात को जानती थी कि मारूफ उसे बचपन से पसंद करता है और वो नहीं चाहता है कि करण से उसकी शादी हो इसलिए उसे इस बात का अब तक आभास हो चला था कि धार्मिक उन्माद फ़ैलाने का जड़ कहीं-न-कहीं मारूफ ही है।

“तुम अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाओगे मारूफ....करण मेरी जिंदगी है...और हमारे रिश्ते की एक्सपायरी डेट और मेरी जिंदगी की एक्सपायरी डेट दोनों सेम है। अपनी गन्दी नजर को हमारे रिश्ते से दूर रखो।" आमिरा ने मारूफ को चेतावनी देते हुए कहा।

आमिरा की ये चेतावनी मारूफ के गाल पर एक करारा तमाचा था। पुलिस के भय से वह अभी तो चुप था लेकिन उसके मन में आमिरा से बदला लेने की भावना घर कर गई थी। फ़िलहाल, आमिरा का लक्ष्य एक ही है.... अपने परिवार को जेल जाने से बचाना। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने हमारे देश

को सत्याग्रह के रूप में एक ऐसा हथियार दिया है जो सरकार तथा सरकार के किसी भी तंत्र से लड़ने में कारगर है।

“हाँ तो इंस्पेक्टर साहब क्या दोष है मेरे पति, मेरे पिता और मेरे ससुर का? और यदि इस प्रोग्राम का मुखिया होना इनका दोष है तो मै भी दुल्हन हूँ आप मुझे भी गिरफ्तार करो...आपको अच्छे से पता है कि मेरे पति, मेरे पिता और मेरे ससुर ने कोई कानून नही तोड़ा है फिर भी आपने बिना सोचे-समझे इन्हें हाजत में डाल दिया है। आप या तो इन्हें मुक्त करो या नहीं तो मुझे भी जेल के अंदर डालो...और लगाओ जितनी संगीन धारा आप लगा सकते हो अन्यथा आपके खिलाफ मेरी सत्याग्रह कल के अखबार की सुर्खियाँ होंगी।" आमिरा ने थानेदार प्रिंस को धमकाते हुए कहा।

चूँकि पुलिस इस बात से भलीभांति परिचित थी कि राकेश साहब, अशरफ साहब तथा करण ने ना तो शराब पीया था और ना ही दंगा भड़काने में इनकी कोई भूमिका थी.... उन्होंने इन्हें सिर्फ इसलिए गिरफ्तार किया था क्यूंकि ये लोग इस प्रोग्राम के मुखिया थे तथा इस प्रोग्राम में होने वाली किसी भी प्रकार की अनहोनी के लिए जिम्मेदार व्यक्ति। आमिरा का अपने परिवार के लिए कुछ भी कर गुजरने का अंदाज़ थानेदार प्रिंस को काफी भा गया और फिर वे दोषी भी तो नहीं थे...उन तीनों ने तो मामले को संभालने का प्रयास ही किया था।

“ठीक है.... मैं प्रणव तथा मारूफ के अलावा सभी को छोड़ने के लिए तैयार हूँ...ये दोनों अभी हमारे कस्टडी में ही रहेंगे तथा आपकी और करण की शादी हमारे देख-रेख में होगी। संजीव जी इनलोगों को बाहर निकालिए।" थानेदार प्रिंस ने हवलदार संजीव को राकेश साहब, अशरफ साहब, करण समेत अन्य लोगों को बाहर निकालने का आदेश दिया।

आमिरा ने आज एक बार फिर नारी शक्ति के सर्वोपारि होने का प्रमाण दिया। आमिरा ने आज एक अच्छी बेटी, अच्छी बहु व अच्छी जीवन साथी होने का फ़र्ज़ निभाया। एक लगभग टूट चुके रिश्ते को टूटने से बचाया। दो परिवार की डूबती इज्जत को डूबने से बचाया। आज आमिरा ने फिर से इस बात को साबित कर दिखाया कि ‘‘नारी चाहे तो कुछ भी कर सकती है।"

पुलिस की कड़ी निगरानी तथा दोनों परिवारों के अत्यंत करीबी लोगों के बीच आमिरा तथा करण का विवाह हिन्दू रीति-रिवाज़ से संपन्न हुआ।

3. विदाई

चूँकि अशरफ साहब की तरफ से करण-आमिरा के विवाह की शर्त ये निर्धारित थी कि हिंदू रीति-रिवाज़ से विवाह होने के बाद ये विवाह मुस्लिम रीति-रिवाज़ से भी होगा। इसलिए अशरफ साहब अपनी लड़की की विदाई तब तक करने को तैयार नहीं थे जब तक कि मुस्लिम रीति-रिवाज़ से विवाह ना हो जाये। उनका कहना भी जायज़ था, जब विवाह की बुनियाद ही इस शर्त पर रखी गई थी तो इस शर्त का बेपरवाह पालन दोनों पक्षों की जिम्मेदारी बनती थी।

“शादी तो हो गई अब दुल्हन के विदाई की इजाजत दीजिए अशरफ साहब”। राकेश साहब ने अशरफ साहब से कहा।

“राकेश साहब हम निकाह की कोई तारीख मुक़र्रर कर आपको अवगत कराएँगे, हम निकाह के बाद ही आमिरा की विदाई करेंगे।" अशरफ साहब ने राकेश साहब से कहा।

बारात बिना दुल्हन के वापस आ जाये तो समाज में ये बहुत बड़ी बेइज्जती का प्रतीक मानी जाती है। पहले ही इस शादी में बहुत से तमाशे हो चुके हैं...राकेश साहब अब किसी भी नए तमाशे के लिए बिलकुल तैयार नहीं है। राकेश साहब के सामने विकट स्थिति आन पड़ी है, उनकी पूरी कोशिश है कि दुल्हन की विदाई अभी ही हो जाये। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने अशरफ साहब को यह प्रस्ताव दिया कि करण और आमिरा का निकाह भी अभी ही करा लिया जाये तथा आमिरा की विदाई आज ही

की जाये। परन्तु, पांच वक्त के नमाज़ी अशरफ साहब मुहूर्त को मानने वाले लोग हैं...और बात जब उनके कलेजे के टुकड़े के भविष्य की हो तो वो किसी भी प्रकार के समझौते के लिए तैयार नहीं हैं।

“अशरफ साहब बच्चों के निकाह की प्रक्रिया आज ही संपन्न करा ली जाये, आपकी भी बात रह जायेगी और दुल्हन की विदाई भी हो जायेगी।" राकेश साहब ने कहा।

“ऐसे कैसे आज ही निकाह करवा दूँ राकेश साहब, आज निकाह का कोई शुभ मुहूर्त नही है और बिना मुहूर्त के मैं निकाह नहीं करूँगा और बिना निकाह के मैं आमिरा कि विदाई नही करूँगा।" अशरफ साहब ने कहा।

“ये हमारे खानदान के इज्जत का सवाल है अशरफ साहब, हमारे खानदान में आज तक किसी की बारात बिना दुल्हन के वापस नहीं लौटी है... यदि ऐसा हुआ तो अनर्थ हो जायेगा।" राकेश साहब ने कहा।

“आपके खानदान में आज तक किसी की अंतरधार्मिक विवाह भी नहीं हुई है ये पहला मौका है जब ऐसा हो रहा है...तो समझ जाइये ये उसी का फल है।" अशरफ साहब ने कहा।

महाराजा पैलेस के अपने-अपने कमरे में बैठे दोनों दूल्हा-दुल्हन इस इंतजार में हैं कि कब विदाई करने की खबर आएगी और उन दोनों का साथ रहने का वर्षों पुराना व हसीं सपना साकार होगा।

“निगार देख के आ क्या हो रहा बाहर, फिर से कोई प्रॉब्लम तो नही आ गई।" आमिरा ने निगार से बाहर की स्थिति बताने को कहा।

“अमन देख के आ बाहर क्या चल रहा है?" करण ने अमन से कहा।

अमन व निगार अपने-अपने कमरे से निकल कर बाहर हॉल में स्थिति का जायजा लेने पहुँचते हैं, और बाहर बने माहौल को समझने के बाद उलटे पाँव अपने-अपने कमरे में चले जाते हैं।

“तेरी शादी पर पनौती छाई हुई है।" निगार ने आमिरा से कहा।

“अभी क्या हो गया...शादी तो हो चुकी हमारी।" आमिरा ने कहा।

“हाँ लेकिन विदाई नहीं हो पायेगी तुम्हारी।" निगार ने कहा।

“ऐसा क्यूँ....शादी हुई तो विदाई भी होगी ही...तू मेरे साथ मजाक कर रही है।" आमिरा ने ठहाका लगाते हुए कहा।

“अशरफ अंकल ने विदाई करने से मना कर दिया है... कह रहे हैं जब तक निकाह नहीं होगा तब तक विदाई नहीं होगी।" निगार ने आमिरा से कहा।

“तो उसमे क्या है...आज ही निकाह हो जायेगी...मैं अब्बू से बात करती हूँ।" आमिरा ने कहा।

करण के कमरे में:

“तेरा वो खडूस ससुर आमिरा की विदाई नही कर रहा, बोल रहा बिना निकाह के विदा नहीं करेगा।" अमन ने करण से कहा।

“तो अभी ही निकाह कर लेते हैं....पापा क्या बोल रहे हैं?" करण ने कहा।

“पता नहीं यार...जा के देख मेरे तो समझ से बाहर है।" अमन ने कहा।

“हाँ मैं बात करता हूँ।" करण ने कहा।

करण और आमिरा अपने-अपने कमरे से निकल कर हॉल की तरफ बढते हैं जहाँ राकेश साहब, अशरफ साहब समेत दोनों परिवारों के बड़े-बुजुर्ग पहले से उपस्थित हैं।

“अशरफ साहब मैं आपसे विनती करता हूँ मेरे बहू की विदाई कर दीजिए, फिर आप कल वापस उसे अपने पास बुला लीजियेगा। ये हमारे खानदान के इज्जत का सवाल है।" राकेश साहब ने अशरफ साहब से अनुरोध करते हुए कहा।

“बेशक आप आमिरा को अपनी बहू कह सकते हैं लेकिन जब तक करण और आमिरा का निकाह नहीं हो जाता हम करण को अपना दामाद नहीं मानते, आपलोग घर जाइये निकाह की तारीख मुक़र्रर कर आपको सूचित कर दिया जायेगा।" अशरफ साहब ने राकेश साहब से कहा।

“अब्बू ये आप कैसी बातें कर रहे हैं....करण मेरे शौहर हैं और उनका घर मेरा घर है...उनके घर की इज्जत मेरी इज्जत है मुझे जाना ही होगा, मुझे उनके घर जाने से मत रोकिये प्लीज़।" आमिरा ने अपने पिता अशरफ साहब से कहा।

“तुम्हारी हर जिद मानी जाये ये जरुरी नही... तुमने करण से शादी करने की जिद्द किया हम उसके लिए तैयार हो गए... लेकिन जब तक हमारे रीति-रिवाज़ से तुम्हारी शादी नहीं हो जाती हम तुम्हे विदा नहीं करेंगे, फिर भी तुम जाना चाहती हो तो जा सकती हो... लेकिन उसके बाद तुम्हें हमें और हमारे इस पूरे पारिवार को भूल जाने के लिए तैयार रहना होगा।"

“तो आप आज ही हमारा निकाह करवाएं अब्बू।"

“आज ये निकाह नही हो सकता तुम अंदर कमरे में जाओ.....शबनम (आमिरा की माँ) आप आमिरा को कमरे में ले कर जाइये।"

“हाँ हमारी तो यही भूमिका है इस परिवार में....गुलामी करना.....अंदर चल बेटी।" आमिरा की माँ ने फुसफुसाते हुए कहा।

करण को ये बात समझ आ गई थी कि इस समस्या का समाधान इतना आसान नहीं है, अशरफ साहब इतने जिद्दी हैं कि वो आमिरा की विदाई नहीं करेंगे और यदि बिना दुल्हन के बारात वापस लौटी तो उसके पिता राकेश साहब की इज्जत खत्म हो जायेगी। करण कुछ भी सह सकता है लेकिन अपने पिता को हारा हुआ नहीं देख सकता।

“अमन....तेरी सेटिंग को फोन कर न।" करण ने अमन की कान में कहा।

“कौन-सी वाली?" अमन ने भी करण के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

“वही आलिया.....काजी साहब की बेटी।" करण ने कहा।

“अरे वो भाई बोलती है मुझे...मैं बहन मानता हूँ उसको।" अमन ने कहा।

आलिया ....अमन की अच्छी दोस्त के साथ-साथ मुहबोली बहन है तथा शहर के काजी साहब की इकलौती बेटी है। अशरफ साहब ....काजी साहब के किसी भी बात को नहीं टालते हैं ऐसा कभी करण ने आमिरा के मुंह से सुना था। उसे लगा की इस वक्त अशरफ साहब को कोई समझा सकता है तो वो क़ाज़ी साहब ही हैं, तथा वो जानता था कि आलिया...अमन की अच्छी दोस्त है। करण के लिए अपनी बात को काजी साहब तक पहुँचाने का जरिया आलिया से बेहतर और कोई नहीं हो सकता था।

“हाँ, जो भी है...फोन कर न उसे।" करण ने कहा।

“लेकिन क्यूँ?" अमन ने कहा।

“उसे फोन कर के बोल न की वो अपने पापा से कहेगी की वो अशरफ अंकल को आमिरा की विदाई को लेकर समझाएं।" करण ने कहा।

“तू पागल हो गया है...वो तो इस शादी के लिए तैयार भी नहीं थे...बात नहीं बनेगी तुम्हारी...तू घर चल.....विदाई बाद में करा लेना।" अमन ने कहा।

“तू एक बार बात तो कर...काजी साहब न्यायप्रिय इंसान हैं...वो अशरफ अंकल को जरुर समझायेंगे।" करण ने कहा।

“ठीक है मैं प्रयास करता हूँ।" अमन ने करण को दिलासा देते हुए कहा।

अमन और करण होटल के बाहर निकल आता है। अमन अपनी जेब से फोन निकाल कर आलिया को फोन मिलाता है।

“हेलो आलिया...मैं अमन।" अमन ने फोन पर आलिया से कहा।

“हाँ भैया...कैसे हो आप...बहुत दिनों बाद कैसे याद किया?" आलिया ने अमन से कहा।

“सुनो न एक मदद चाहिए तुमसे...करोगी क्या?" अमन ने कहा।

“हाँ भैया 10 मदद करूँगी....1 कौन पूछता है?" आलिया ने कहा।

अमन- “करण और आमिरा की शादी हुई है....।”

“तो इसमें मैं क्या मदद कर सकती हूँ भैया?" आलिया ने अमन को बीच में टोकते हुए कहा।

“अरे पहले सुनो तो पूरा।" अमन ने खीझते हुए कहा।

“हाँ बोलो बोलो।" आलिया ने कहा।

अमन ने करण और आमिरा की शादी से सम्बंधित सभी घटना को क्रमवार आलिया को बताया।

“हाँ अब्बू ने मुझे बताया था कि आमिरा की शादी होने वाली है...तो फाइनली शादी हो गई तो मेरी तरफ से बधाई दे दीजियेगा उनको।" आलिया ने कहा।

“काजी साहब जैसे ज्ञानी आदमी के घर तुम जैसी बकलोल कैसे पैदा हो गई?" अमन ने आलिया पर चिल्लाते हुए कहा।

“इसमें बकलोल की क्या बात है भैया....शादी हो गई तो नए जोड़े को मैंने बधाई दे दिया...इसमें बुरा क्या है?" आलिया ने कहा।

“अरे शादी तो हो गई...विदाई नहीं हो पा रही उनकी।" अमन ने कहा।

“क्यूँ?" आलिया ने कहा।

“अशरफ अंकल का कहना है कि जब तक निकाह नहीं होगा तब तक विदाई नही करेंगे।" अमन ने कहा।

“तो निकाह करवा दीजिए।" आलिया ने कहा।

“अरे मेरी माँ....इतना आसान होता सब कुछ तो तुमसे मदद क्यूँ मांगता?" अमन ने कहा।

“क्या मदद करूं?" आलिया ने कहा।

“अपने अब्बू से कहो न कि वो अशरफ अंकल को विदाई के लिए समझाएं हमलोगों को पता है अशरफ अंकल क़ाज़ी साहब की बात नहीं टालेंगे।" अमन ने कहा।

“अच्छा ऐसी बात है...ठीक है मैं अब्बू से बात करती हूँ। लेकिन, उम्मीद कम है कि वो मानेंगे क्यूंकि वो खुद इस शादी के खिलाफ थे...उन्होंने

अशरफ अंकल को अंतरधार्मिक विवाह करने से मना किया था लेकिन आमिरा के जिद के आगे अशरफ अंकल को झुकना पड़ गया था।"

“काजी साहब न्यायप्रिय इंसान हैं...तुम उनसे कहो वो जरुर अशरफ अंकल को समझायेंगे।" अमन ने आलिया से कहा।

“ओके।" इतना कहते ही आलिया ने फोन डिस्कनेक्ट कर दिया।

आलिया का घर:

काजी साहब बिस्तर पर आराम फरमा रहे हैं। आलिया उनके करीब आती है, उन्हें सोता देख वो उनके कमरे से वापस बाहर निकलने लगती है। आलिया के पैरों की आहट से काजी साहब की नींद खुल जाती है।

“कोई बात थी बेटी?" काजी साहब ने आलिया से पूछा।

“नहीं कुछ विशेष नहीं अब्बू ..... आप आराम कीजिये मैं बाद में बात कर लूंगी।" आलिया ने कहा।

“मैं मेरी बेटी को बखूबी जानता हूँ... बोलो बात क्या है?" काजी साहब ने कहा।

“अब्बू वो अशरफ अंकल अपने बेटी की विदाई नहीं कर रहे।" आलिया ने कहा।

“क्यूँ?" काजी साहब ने आश्चर्यचकित हो कर पूछा।

आलिया ने काजी साहब को वो पूरी कहानी क्रमवार तरीके से सुनाया जो अमन ने आलिया को सुनाया था।

“अच्छा ऐसी बात है....जब शादी हो गई तो विदाई में क्या हर्ज...? मैं अशरफ साहब से बात करता हूँ।" काजी साहब ने कहा।

“शुक्रिया अब्बू।" आलिया ने मुस्कुराते हुए कहा।

महाराजा पैलेस:

अशरफ साहब की जिद मानो पत्थर की लकीर.....मजाल नहीं कि मिट जाये। सारे तंत्र, सारे पैंतरे उन्हें समझा नहीं सके....करण, राकेश साहब, अमन समेत बाराती पक्ष के उपस्थित सभी लोग बिना दुल्हन के वापस आने की तैयारी कर रहे थे। होटल के कमरे में आमिरा तथा उसकी माँ अपने किस्मत पर रो रही थी...सहसा अशरफ साहब के फोन की घंटी बजती है।

“अस्सलामु अलैकुम काजी साहब”। अशरफ साहब ने काजी साहब का फोन उठाते ही कहा।

“वालेकुम अस्सलाम अशरफ साहब....बेटी के विवाह की मुबारकबाद।" काजी साहब ने हँसते हुए कहा।

“शुक्रिया काजी साहब...आपसे तो कुछ छिपा नहीं है....आप तो जानते ही हैं कि किस हालात में ये शादी हुई है।" अशरफ साहब ने कहा।

“हाँ लेकिन मैंने सुना कि आप विदाई नहीं कर रहे।" काजी साहब ने कहा।

“हाँ काजी साहब आपने ठीक ही सुना है....जब तक मुस्लिम रीति-रिवाज़ से निकाह नहीं हो जाता मैं विदाई नहीं करूँगा।" अशरफ साहब ने दो टूक जवाब दिया।

“अशरफ साहब क्या आपने इस शादी से पहले ये शर्त रखी थी कि आप अपनी बेटी की विदाई तभी करेंगे जब उसका निकाह होगा?" क़ाज़ी साहब ने अशरफ साहब से पूछा।

“नहीं...मैंने ऐसा कोई शर्त नहीं रखा था....लेकिन, हाँ मैंने इस शादी के लिए इस शर्त पर हामी भरी थी कि ये शादी मुस्लिम रीति-रिवाज़ से भी होनी चाहिए।" अशरफ साहब ने सफाई देते हुए कहा।

“फिर ये बात तय है कि आपने विदाई के लिए कोई शर्तें निर्धारित नहीं की थी।" काजी साहब ने कहा।

अशरफ साहब- “लेकिन!"

“लेकिन-वेकिन छोड़िये जनाब बेटी का विवाह हिंदू रीति-रिवाज़ से ही सही किन्तु हो चुका है....और बिना दुल्हन के बारात को वापस भेज देना... ये दोनों परिवार के नाक को कटाने का मामला है। इसलिए आप बेटी की विदाई कर दीजिए।" काजी साहब ने अशरफ साहब को समझाते हुए कहा।

“लेकिन काजी साहब आमिरा का निकाह नहीं हुआ अब तक...आप निकाह के मूल्य को अच्छी तरह जानते हैं....मैं कैसे विदा कर दूँ अपनी बेटी?" अशरफ साहब ने काजी साहब से कहा।

“मैं निकाह और शादी दोनों के मूल्यों को अच्छी तरह समझता हूँ...इसलिए आपसे कह रहा हूँ....आप बेटी को विदा कर दीजिए....तथा एक दिन बाद उसे अपने पास वापस बुला लीजियेगा और साथ ही ये शर्त रहेगी कि उस एक रात के लिए बेटी और दामाद एक कमरे में एक साथ नही रहेंगे। फिर जब एक बार निकाह हो जायेगा तत्पश्चात वो एक-दूसरे के साथ मियां-बीवी के तौर पर रह सकते हैं। इससे आपके निकाह का मूल्य भी बना रहेगा और उनके शादी का मूल्य भी।" काजी साहब ने अशरफ साहब को सुझाव देते हुए कहा।

“शुक्रिया काजी साहब, मैं आपके इस सुझाव से इत्तेफाक रखता हूँ....ठीक है मैं इस शर्त पर आमिरा को विदा करने के लिए तैयार हूँ।"

एक बंद कमरे में करीबी लोगों के बीच आमिरा की विदाई इस शर्त पर निर्धारित की गई कि आमिरा अगले ही दिन अपने मायके वापस आ जायेगी तथा आमिरा और करण एक ही कमरे में एक साथ नहीं रहेंगे। निकाह के बाद ही उन्हें एक-दूसरे के साथ रहने की इजाजत दी जायेगी और जब तक उनदोनों का निकाह नहीं हो जाता तब तक वो दोनों किसी भी प्रकार से एक-दूसरे के संपर्क में नहीं रहेंगे। तथा, इन शर्तों का सही से पालन हो इसके लिए आमिरा का छोटा भाई अदनान....आमिरा के साथ उसके ससुराल जायेगा। अंततः आमिरा की विदाई हो जाती है।

4. स्वागत

करण का घर:

नई दुल्हन के स्वागत के इंतजार में करण की माँ, बहन, रिश्तेदार, मोहल्ले वाले सभी करण के घर पर इकट्ठा हैं। जरुरत से ज्यादा वक्त बीत गया, लोगों में हलचल है कि बारात अब तक वापस नहीं लौटा है। फोन पर कोई भी कुछ भी बताने को तैयार नहीं है। मोहल्ले के कुछ लोग रोजमर्रा का काम निपटाने के लिए अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान करने लगे हैं। इंतजार करने वाले में अधिकतर महिलायें हैं।

“राकेश की दुल्हन ..... नई दुल्हन को आने में और कितनी देर है?" मोहल्ले की एक बुजुर्ग महिला ने राकेश साहब की पत्नी व करण की माँ उषा से पूछा।

“ये लोग अब आते ही होंगे चाची....थोड़ी देर पहले बात हुई थी उस वक्त ये लोग निकल चुके थे।" उषा ने बुजुर्ग महिला से कहा।

“कुछ ज्यादा देर नहीं हो गया उषा जी, सब कुछ ठीक है न?" मोहल्ले की रहने वाली उषा की हमउम्र महिला ने कहा।

“नहीं जी कोई परेशानी वाली बात नहीं है...सब कुछ ठीक है...रस्मों-रिवाज़ निभाने में वक्त लग गया होगा...अब आते ही होंगे सभी लोग।" उषा ने झूठी मुस्कान दिखाते हुए कहा।

समाज में सभी तरह के लोग होते हैं कुछ अच्छे तो कुछ बुरे, कुछ हितैषी तो कुछ अहित चाहने वाले, कुछ मृदुभाषी तो कुछ कटुवाणी बोलने वाले, कुछ सहानुभूति रखने तो कुछ ताना मारने वाले। ऐसा होना भी जरुरी है, ऐसा होने से सामाजिक संतुलन बना रहता है।

"हुई होगी कुछ अनहोनी, इसलिए ये लोग कुछ बताने के लिए तैयार नही हैं.. हमने समझाया था राकेश भाई को कि मियां से शादी ना करवाएं अपने करण की, अब भुगतो।" पास बैठी एक महिला ने ताना मारते हुए कहा।

"नहीं दीदी ऐसी कोई बात नहीं है, आमिरा और उसके परिवार वाले बहुत अच्छे और सम्मानित लोग हैं।" उषा ने सफाई देते हुए कहा।

"जाने भगवान।" उक्त महिला ने मुंह घुमाते हुए कहा।

"आपलोग चाय पीजिए न आंटी।" करण की बहन स्वाति ने चाय की ट्रे आगे बढ़ाते हुए कहा।

ताना, सहानुभूति, सफाई तमाम तरह के गॉसिप्स के बीच करण की बारात का दुल्हन के साथ आगमन होता है। चर्चाओं में डूबी हुई महिलाएं अपने-अपने स्थान से उठ कर खड़ी हो गई। सभी का प्राथमिक प्रयास यह है कि दुल्हन के मुखड़े के दर्शन हो जाएँ। दुल्हन का चेहरा परंपरा के स्वरुप चुनरी से ढंका हुआ है, महिलाएं अलग-अलग एंगल बना कर दुल्हन का चेहरा देखने के प्रयास में लगी है कि कहीं से एक झलक मिल जाये तो यह बताना आसान हो जाये की फलना की बहू मेरे बहू से सुन्दर है या नहीं...फलना के बहू के चेहरे का कटिंग मेरे बहू से अच्छा है या नहीं...फलना के बहू का नाक मेरे बहू के नाक इतना लंबा है या नहीं। हालाँकि इस प्रकार से तुलना करने की प्रवृत्ति महिलाओं के जीन में शामिल है, इसमें इनका भी कोई दोष नही।

द्वार की रश्मों को निभा कर आमिरा की एंट्री करण के घर तथा अपने ससुराल में होती है।

करण का घर मतलब आमिरा के द्वारा पिछले 11 साल में देखे गए सपनों का घर। आमिरा ने इस घर को लेकर ढेर सारे सपने सजाये थे। इसलिए वो यहाँ रहने को लेकर अति उत्साहित थी। लेकिन, वो जानती थी कि वो सिर्फ 1 दिन के लिए ही यहाँ रह पायेगी इसलिए उसका उत्साही मन अपने सपनों के घर में भी खुशियाँ नहीं मना पा रहा था। लेकिन, आमिरा ने यह निर्णय लिया कि एक दिन में ही वो अपने ससुराल में सब का दिल जीतेगी। आमिरा ने अपने इस एक दिन में अपने ससुराल वालों के लिए वो सारा काम किया जो एक आदर्श बहू को करना चाहिए, बदले में ससुराल वालों की तरफ से भी उसे भरपूर प्यार और सम्मान मिला।

अशरफ साहब के शर्त के मुताबिक आमिरा और करण एक साथ एक कमरे में नहीं रहे...जिसके कारण उन दोनों की बहुप्रतीक्षित सुहागरात की प्रतीक्षा अनवरत जारी है। उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही उनका निकाह होगा और ये प्रतीक्षा भी खत्म होगी।

फिलहाल रात ढल गई.....अशरफ साहब के शर्त को पूरा करने के लिए आमिरा को आज अपने मायके वापस लौटना है। सुबह उठते ही घर के सारे जरुरी कामों को निपटा कर आमिरा अपने मायके जाने को रेडी हो जाती है।

‘‘करण... आमिरा को उसके मायके छोड़ आ।" राकेश साहब ने करण से कहा।

‘‘जी पापा।" करण ने हाँ में सर हिलाया।

तभी राकेश साहब के फोन की घंटी बजी, फोन पर दूसरी तरफ अशरफ साहब हैं।

“गुड मॉर्निंग समधी साहब।" राकेश साहब ने कहा।

“गुड मॉर्निंग गुड मॉर्निंग, आपको हमारी शर्त तो याद है न समधी साहब।" अशरफ साहब ने राकेश साहब को अपनी शर्तें याद दिलाते हुए कहा।

“हाँ समधी साहब....आमिरा बस मायके के लिए निकलने ही वाली है।" राकेश साहब ने अशरफ साहब को आश्वस्त करते हुए कहा।

बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त कर आमिरा अपने भाई अदनान को ले कर करण के साथ अपने मायके की ओर निकल गई।

5. प्रतिशोध

आमिरा का मायके:

आमिरा के मायके में आमिरा का बेसब्री से इंतजार हो रहा है। अशरफ साहब व आमिरा की माँ शबनम की नजर हॉल में लगे दीवार घड़ी पर जा रही है, कब आमिरा का आगमन होगा और कब वो उसके ससुराल के अनुभव को जान पाएंगे। जहाँ शबनम के मन में आमिरा के लिए उसके ससुराल के रीति-रिवाज़ तथा उसके ससुराल वालों का व्यवहार के अनुभव के बारे में जानने की अभिलाषा है तो वहीँ अशरफ साहब के मन में इस बात को जानने की जिज्ञासा है कि उनके शर्तों का पालन हुआ है या नहीं, कहीं आमिरा व करण की सुहागरात तो नहीं हो गई। एक पिता का अपनी पुत्री के लिए ओवर थिंकर होना एक मायने में सही भी है। अपने बच्चों के लिए पिता की ये ओवर थिंकिंग बच्चों को सही मार्ग से भटकने से बचाती है। परन्तु, कुछ मौकों पर ओवर थिंकिंग सही नहीं होती है। हालाँकि करण व आमिरा के सुहागरात वाले मामले में अशरफ साहब की ओवर थिंकिंग सरासर गलत है क्यूंकि वे दोनों कानूनन पति-पत्नी हैं... परन्तु अंग्रेजी में एक कहावत है- “Men will be men”, आदमी ....आदमी ही रहेगा... उसकी शर्तें उसके आत्म सम्मान के बराबर हो जाती हैं।

“पता नहीं...आमिरा ने मेरे शर्त का लाज रखा होगा या नही?" अशरफ साहब ने शबनम से कहा।

“आप भी हद करते हैं....वो दोनों अब मियां-बीबी हैं...आपको ऐसी शर्त रखनी ही नहीं चाहिए थी।" शबनम ने कहा।

जब आप किसी अहंमानी या आत्म-केंद्रित पुरुष के किसी बात को झुठलाने या गलत बताने का प्रयास करते हैं तो उस पुरुष को ऐसा लगता है कि उसके अस्तित्व को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है, फिर वो अपने बात को सत्य साबित करने के लिए भूखे शेरनी की तरह टूट पड़ता है।

“मेरे शर्त पर सवाल मत उठाओ....मेरे लिए करण अब भी मेरा दामाद नहीं है और जब तक निकाह नहीं हो जाता मैं उसे ना तो अपना दामाद मानूंगा और ना ही उसे दामाद का कोई अधिकार दूँगा। तुम्हारे लिए निकाह के मूल्य फीके पड़ गए होंगे मेरे लिए निकाह के मूल्य आज भी सर्वोपरि हैं। इसलिए मेरी शर्तों पर सवाल मत उठाओ, मैं वही कर रहा हूँ जो आमिरा के लिए सही है।" अशरफ साहब ने हाथों से अखबार को टेबल पर पटकते हुए एक सांस में पूरी बात कह दी।

पुरुष-प्रधान समाज अक्सर महिलाओं को बोलने की इजाजत नहीं देता। फिर भी ऐसे समाज में जो महिलाएं बोल गई वो बुलंदियां ही छूती हैं। अशरफ साहब से शबनम का निकाह 35 वर्ष पूर्व हुआ था। अशरफ साहब के पिता मरहूम मंसूर अली खान साहब भी कट्टर धार्मिक, दीन-इस्लाम को मानने वाले लोग थे तथा गुस्सा उनके नाक पर रहता था तो ये चीजें तो अशरफ साहब को विरासत में मिली हुई थी। शिक्षित खानदान होने के बावजूद भी इस खानदान की महिलाएं पुरुषों द्वारा शोषित ही रहीं, जहाँ महिलाओं को किसी भी मामले में निर्णय लेने का अधिकार नहीं था, महिलाएं केवल घर के चौका-बर्तन व पुरुषों की सेवा का साधन ही मानी गई। आमिरा का जन्म 30 वर्ष पूर्व हुआ था। आमिरा .... अशरफ साहब व शबनम की मन्नत से प्राप्त संतान है। इसलिए, आमिरा अशरफ साहब के

काफी करीब रही....अशरफ साहब व शबनम ने बड़े नाज़ से पाला था आमिरा को...उसे हर वो चीज करने की आज़ादी मिली जो आज तक इस खानदान में किसी महिला को नहीं मिली। अशरफ साहब को अपनी आमिरा पर बहुत विश्वास था, उन्होंने कभी सपने में भी नही सोचा था कि उनकी बेटी उनके विश्वास को यूँ चकनाचूर करेगी।

“मैं आपके शर्तों पर सवाल नहीं उठा रही। लेकिन, इतना तो भरोसा रखिये अपनी बेटी पर।" शबनम ने चाय का प्याला टेबल पर रखते हुए कहा।

“बहुत भरोसा था मुझे उस पर...गुरुर थी वो मेरी...लेकिन काफ़िर को अपना शौहर चुन कर उसने मेरे सारे भरोसे का मिट्टी-पलीद कर दिया।" अशरफ साहब ने कहा।

“करण बहुत अच्छा लड़का है, अच्छे खानदान से है.....आप उसे अच्छी तरह जानते हैं फिर आप अपनी बेटी की पसंद पर सवाल क्यूँ उठा रहे हैं?" शबनम ने कहा।

“वो कलेक्टर ही क्यूँ ना हो...उससे हमें क्या....हमारे धर्म का तो नहीं है न...है तो काफ़िर ही।" अशरफ साहब ने चिल्लाते हुए कहा।

“आप क्या काफ़िर-काफ़िर लगा रखे हैं....दामाद है वो इस घर का...आमिरा ने वायदा किया था न आपसे कि वो करण को 5 वक्त का नमाज़ी बना देगी, और करण भी सच्चा इंसान है वो जानता है कि अल्लाह और भगवान एक हैं तथा आमिरा के प्यार के लिए वो नमाज़ी भी बन जायेगा....आपको भरोसा हो या ना हो मुझे मेरी बेटी पर पूरा भरोसा है।" शबनम ने अशरफ साहब की तुलना में दुगुनी आवाज़ के साथ चिल्लाते हुए कहा।

पुरुष-प्रधान समाज में जब औरत की आवाज़ ऊंची हो जाती है तो मर्द को लगता है कि उसकी नींव हिल गई। ऐसी स्थिति में पहले तो वो औरत की आवाज़ को पुनः दबाने की कोशिश करता है परन्तु, जब वह अपने इस मकसद में कामयाब नहीं हो पाता है तब वह औरत का सामना करने से बचने का प्रयास करने लगता है। औरत की ऊंची आवाज़ मर्द को स्वीकार्य नहीं होती। वह सोचता है...स्त्रीलिंग शब्द पुल्लिंग शब्द पर कैसे हावी हो सकता है? विडंबना है कि मर्द इस बात को भूल जाता है कि जिस मूंछ पर ताव दे कर मर्द अपनी मर्दानगी दिखाता है...वास्तव में वो मूंछ खुद भी स्त्रीलिंग है। ऐसे समाज के मर्द इस बात को भूल जाते हैं कि बिना औरत के उसके जीवन का कोई अस्तित्व नहीं हैं। ऐसे समाज के मर्द यह भूल जाते हैं कि धरती पर उनका आगमन भी उसी औरत की योनि से ही हुआ है जिस औरत को वो अपने पैर की जूती समझते हैं। ऐसे समाज के मर्द यह भूल जाते हैं कि उनकी ये छरहरी काया भी उसी औरत के स्तन के दूध की वजह से है जिस औरत को वो कमजोर समझते हैं।

“आप अपने रोजमर्रा के काम में लग जाइये....ये सामाजिक बातें हैं, आपके पल्ले नहीं पड़ेगी।" अशरफ साहब ने बातों को टालने का प्रयास करते हुए कहा।

औरत सहनशीलता की मूरत होती है। परन्तु, संसार में प्रत्येक चीजों की एक हद होती है। भगवान श्रीकृष्ण ने भी शिशुपाल को उसके 100 वें अपराध तक माफ किया था। जब भगवान पूर्णतया सहनशील नहीं हो पाए तो इंसान की क्या बिसात? इंसान तब तक सहन करता है जब तक सहन करने की क्षमता होती है, उसके बाद ना तो वो रिश्तों को जरुरी समझता है और ना ही अपनों को।

“क्यूँ आप मर्द हैं तो समझदारी का ठेका आपने ले रखा है, मैं नारी हूँ इसलिए नासमझ हूँ? हम हैं तो आप हैं साहब...हम नहीं रहेंगे तो आपका अस्तित्व नहीं बचेगा। जिस शाख पर घोंसला बनाये हो साहब उस शाख को ही काटने का प्रयास करते हो...ऐसी गलती ना करो, खुद का वजूद खत्म हो जायेगा। हम नारी हैं साहब....हम सृजन करते हैं तो हमें विनाश करना भी आता है। आइंदा हमें कमजोर समझने की भूल मत कीजियेगा।" शबनम ने पूरे 35 वर्ष का गुस्सा एक ही बार में निकाल दिया।

शबनम के इस अवतार को अशरफ साहब ने पिछले 35 वर्षों में कभी नहीं देखा था। बात जब बच्चों की खुशी की हो तो एक माँ अपने भगवान से भी लड़ जाये, उस वक्त उसे नहीं दिखता कि सामने कौन है...उस वक्त उसे केवल एक ही चीज़ नजर आती है- अपने बच्चे की खुशी। एक माँ के लिए बच्चे की खुशी के आगे ना तो कोई धर्म है और ना ही कोई जात, अपने बच्चे की खुशी के लिए माँ सभी बंदिशें सभी जंजीरें तोड़ देती हैं। फ़िलहाल आमिरा की गाड़ी दरवाज़े पर दस्तक देती है।

गाड़ी से उतरते ही हँसती-खिलखिलाती आमिरा अपने अब्बू के पास जाती है। अब्बू के पास पहुंचते ही उन्हें झप्पी देने का प्रयास करती है, अभी-अभी बीवी के बातों का मार खाए अशरफ साहब का गुस्सा अपनी बेटी आमिरा पर निकल आता है तथा वो एक झटके में आमिरा को खुद से अलग कर देते हैं।

“अदनान कहाँ है...मुझे पहले उससे बात करनी है?" अशरफ साहब ने बीवी का गुस्सा आमिरा पर निकालते हुए कहा।

नाजों से पली आमिरा को पिता का ये रुष्ट व्यवहार काफी आहत करता है, फिर भी पिता का भावनाओं का कद्र करते हुए तथा अपनी भावनाओं को नियंत्रित करते हुए वह अदनान को आवाज़ लगाती है।

“अदनान गाड़ी से उतर कर अंदर आओ...अब्बू बुला रहे हैं।"

इन सभी करम-कांडों में बेवजह पिसता हुआ अदनान .... आमिरा की आवाज़ पर नाक धुनता हुआ घर के अंदर एंट्री लेता है। इससे पहले कि वो कुछ बोलता, आमिरा की माँ शबनम ने पूछा-

“करण नहीं आया?"

“आये हैं...बाहर खड़े हैं।" अदनान ने कहा।

“बाहर क्यूँ खड़ा है...उसे अंदर बुलाओ?" शबनम ने कहा।

“वो अंदर नहीं आएगा...जब तक आमिरा से उसका निकाह नहीं हो जाता वो मेरे घर नहीं आएगा।" अशरफ साहब ने शबनम के बात को बीच में ही काटते हुए कहा।

बच्चों के बीच घर के मुखिया की तौहीन ना हो इसलिए शबनम खून का घूँट पी कर रह गई, उसने अशरफ साहब के इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। वरना आज तो शबनम के अंदर साक्षात् काली विराजमान थी। चूँकि आमिरा अपने पिता के जिद से वाकिफ थी इसलिए उसने भी इस मामले पर चुप्पी साध रखा था। तभी सन्नाटे में से एक आवाज़ आई।

“जीजू नेक इंसान हैं अब्बू।" अदनान ने लंबी सांस लेते हुए कहा।

अशरफ साहब का सख्त मिजाज भी इस बात को भली-भांति जानता था कि करण एक बेहद ही नेक लड़का है, यदि वो दूसरे धर्म का नहीं होता तो अशरफ साहब खुद ही आमिरा का हाथ करण के हाथ में दे देते। लेकिन एक अहंमानी व्यक्ति के सिद्धांत ही उसके लिए सर्वोपरि होते हैं भले ही उस सिद्धांत में हजार त्रुटियाँ क्यूँ ना हो।

"आपको जिस काम के लिए वहाँ भेजा था आपने वो ठीक ढंग से किया या नहीं?" अशरफ साहब ने अदनान से कहा।

"हाँ अब्बू जीजू रात भर मेरे साथ थे और आमिरा बाजी स्वाति जी (करण की बहन) के साथ, आपके शर्तों का पालन पूरी सिद्दत के साथ किया गया है।" अदनान ने कहा।

अशरफ साहब को अपने बेटे की आँखों में सच्चाई नजर आई। इस सच्चाई ने अशरफ साहब के चोट खाए दिल पर मरहम लगाने का काम किया। कल से ही परेशान मन को एक सुकून मिला, जैसे बंजर भूमि को बरसात, चिलचिलाती धूप को बरगद की छांव।

वक्त बीतता गया, देखते-ही-देखते 1 वर्ष बीत गए.... वक्त गुजरने के साथ-साथ अशरफ साहब के दिमाग में वर्षों से घर करने वाले अहंमानी विचार भी गुजरते गए। वक्त गहरे-से-गहरे जख्म भर देता है, उनका ध्यान भी अब केवल इस बात पर केंद्रित हो गया कि उनके बच्चे खुश रहें।

अशरफ साहब ने फोन उठाया और राकेश साहब को फोन मिलाया।

"हेलो....नमस्कार समधी साहब।" अशरफ साहब ने राकेश साहब से कहा।

"नमस्कार समधी साहब...कैसे हैं आप...सब खैरियत....शबनम जी कैसी हैं....और मेरी बहू आमिरा कैसी है?" राकेश साहब ने एक सांस में सभी का खैरियत पूछ डाला।

"माशाल्लाह हमलोग सब अच्छे हैं....वहाँ सब खैरियत?" अशरफ साहब ने बेहद शालीनता से जवाब दिया।

"हाँ यहाँ भी सब कुछ ठीक है।" राकेश साहब ने कहा।

“मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं आपकी बहू को आपके पास भेजना चाहता हूँ, जिसके लिए मैंने निकाह की तारीख मुक़र्रर कर लिया है।" अशरफ साहब ने मुस्कुराते हुए कहा।

अशरफ साहब की ये बात सुन कर राकेश साहब की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। राकेश साहब को याद है वो दिन जब पुलिस ने पूरी महफ़िल को पकड़ कर जेल में डाल दिया था तो किस बहादुरी और समर्पण के साथ आमिरा ने सभी को जेल से मुक्त कराया था। राकेश साहब को तभी एहसास हो गया था कि आमिरा से बेहतर बहू उनके परिवार के लिए कोई और नहीं हो सकती।

“सच समधी साहब...कब की तारीख है?" राकेश साहब ने खुशी से झूमते हुए कहा।

“बस इसी महीने की 25 तारीख को।" अशरफ साहब ने उत्साह में कहा।

“25 तारीख को.....आज तो 22 हो गया न...इतनी जल्दी हमलोग कैसे तैयारी कर पाएंगे?" राकेश साहब ने उत्साहित होते हुए कहा।

“तैयारी क्या करना है....आप करण के साथ 25 को आइये और अपनी बहू ले के जाइये।" अशरफ साहब ने खुशी से मुस्कुराते हुए कहा।

राकेश साहब के घर में करण व आमिरा के निकाह की खबर मिलते ही खुशियों की लहर दौड़ पड़ी। वर्षों से बंद पड़े खुशियों के दरवाज़े आज पुनः खुलने को अग्रसर थे। समाज ने भी इस परिवार को बहुत ताना मारा था। पिछड़ा परिवार हो या हो मध्यमवर्गीय.....उच्च मध्यमवर्गीय हो या हो हाई क्लास फॅमिली.....सामाजिक ताने-बाने से कोई नहीं बच पाया। हाँ, ये बात सत्य है कि हाई क्लास फॅमिली व उच्च मध्यमवर्गीय फॅमिली पर इन चीजों

का अपेक्षाकृत कम असर पड़ता है। राकेश साहब के लिए आज का दिन खुशियों की सौगात ले कर आया है। बहुत ताने मारे थे समाज ने कि- इनकी बहू ससुराल नहीं आती...अपनी बिरादरी में शादी किये हुए होते तो घर-परिवार बहू-बच्चों से फल-फूल रहा होता इत्यादि। फ़िलहाल राकेश साहब के लिए इन सब बातों पर विराम लगाने का वक्त आ गया है।

पिछले 1 वर्षों में बहुत-कुछ बदल गया है। साल बदल गए, लोग बदल गए, लोगों के नीयत बदल गए, जज्बात बदल गए, अगर कुछ नहीं बदला तो वो था- "आमिरा के दिल में करण के लिए मोहब्बत।" अब वक्त आ गया था उसकी मोहब्बत पूरी तरह से पूरी होने जा रही थी।

दूसरी ओर निकाह के इस फैसले से करण के मन में एक अजीब-सी ख़ामोशी है, एक अजीब-सा सूनापन छाया हुआ है दिल में, जैसे मानो किसी अपरिचित के साथ उसका निकाह कराया जा रहा हो, जैसे मानो वो आमिरा के साथ निकाह करना ही नहीं चाहता हो। उसके मन में बहुत से उधेड़बुन चल रहे हैं- नहीं मैं यह निकाह नहीं कर सकता, मैं इस वक्त निकाह के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं हूँ, मैं आमिरा से यह बात कह दूँगा कि मुझे वक्त चाहिए।

"आमिरा तक अपनी बातों को पहुंचाऊं कैसे....अशरफ अंकल ने तो हमारे संपर्क के तमाम दरवाज़ों को अपने शर्तों से बंद कर रखा है। लेकिन, आमिरा से यह कहना अति आवश्यक है कि मैं अभी निकाह नहीं कर सकता। आज मैं उनके शर्तों को तोड़ दूँगा, आज मैं आमिरा से बात करूँगा।" करण ने स्वयं से कहा।

मन जब अशांत होता है तो उस वक्त मन की शांति से बड़ी कोई चीज नहीं होती। अशांत मन से लोग उजाले में भी खो जाते हैं। मन पानी की तरह है, जब यह अशांत रहता है, तो इसे देखना मुश्किल हो जाता है। जब यह

शांत हो जाता है, तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। मन जब अशांत हो तो इंसान भीड़ में भी तन्हा होता है, अशांत मन को खुशियों का कोई मोल नहीं रह जाता। वास्तव में अशांत मन एक नर्क की तरह है जिसमे केवल कष्ट-ही-कष्ट है...असहनीय कष्ट। जिस प्रकार दीमक लकड़ी की मोटी-से-मोटी सिल्ली को खोखला कर देता है, उसी प्रकार अशांत मन मजबूत-से-मजबूत इंसान को खोखला कर देता है। पहले तो इंसान ऐसी परिस्थिति से लड़ता है और बाहर निकलने का प्रयास करता है, और जब नहीं लड़ पाता वो परिस्थिति के आगे घुटने टेक देता है। फ़िलहाल, करण का प्रयास इस परिस्थिति से निकलने का है....वो जल्द-से-जल्द आमिरा को कह देना चाहता है कि वो अभी मानसिक रूप से निकाह करने के लिए तैयार नहीं है।

आमिरा को फोन करने के लिए करण अपने मोबाइल फोन को उठाता है और कुछ देर सोचने के बाद आमिरा को फोन मिलाता है। फोन की घंटी बजती है लेकिन सामने से कोई जवाब नहीं आता। करण....आमिरा के व्हाट्सएप पर मैसेज लिखता है-

“मैं इस वक्त निकाह के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं हूँ...मुझे थोड़ा वक्त चाहिए। इस वक्त मैं एक भंवर में फंसा हुआ हूँ, मैं जब तक इस भंवर से निकल नहीं जाता मैं निकाह नहीं कर सकता। तुम अपने अब्बू को समझा देना...मैं अपने पापा से कह दूँगा। आशा करता हूँ कि तुम मेरी भावनाओं को समझोगी।" कांपते हाथों से करण ने आमिरा के लिए मैसेज लिखा।

जब आप मन की शांति के लिए किसी से बात करना चाहते हो और उस वक्त उससे आपकी बात नहीं हो पा रही हो तो मन की अशांति और ज्यादा बढ़ जाती है। करण का हाल भी कुछ ऐसा ही है, मन की शांति के लिए उसने आमिरा को मैसेज तो कर दिया परन्तु, आमिरा की तरफ से किसी भी प्रकार का प्रतिक्रिया ना पाना उसके अशांत मन की अशांति को और

ज्यादा बढा देता है। उसका अशांत मन अब उसके मोबाइल फोन की तरफ केंद्रित हो जाता है। वह बार-बार अपने मोबाइल फोन की तरफ देखता है कि कभी आमिरा का फोन या मैसेज आ जाये। घंटों बीत जाते हैं आमिरा का कोई जवाब नहीं आता....करण की बेचैनी बढती जाती है। तभी करण के फोन की घंटी बजती है, फोन की स्क्रीन पर ‘जन्नत’ लिखा हुआ आ रहा है। करण ने अपने फोन में आमिरा का नम्बर जन्नत के नाम से सेव कर रखा था...करण का मानना था कि आमिरा का प्यार जन्नत की खुशियों के बराबर है। स्क्रीन पर ये नाम दिखते ही करण की ह्रदय गति बहुत तेज हो जाती है। मानवीय प्रवृत्ति यही तो है कि पहले तो हम वर्षों किसी के इंतजार में व्याकुल रहते हैं और फिर जब वो सामने आ जाता है तो हम उसे कुछ भी कहने या बताने से डरने लगते हैं कि पता नहीं सामने वाले की प्रतिक्रिया क्या होगी?

करण की मनोदशा भी इस वक्त कुछ ऐसी ही है। वह सोच रहा है...मैं फोन उठाऊंगा तो आमिरा का क्या जवाब होगा, क्या वो मेरी भावनाओं को समझ पायेगी, क्या वो इस वक्त मेरे निकाह नहीं करने के निर्णय से सहमत हो पायेगी? कहीं वो मेरे इस निर्णय से टूट कर बिखर ना जाये, कहीं वो मुझसे नफरत ना करने लगे! लेकिन, मैं क्या कर सकता हूँ? अभी मैं जिस भंवर में फंसा हुआ हूँ, जब तक मैं वहाँ से निकल नहीं जाता मैं आमिरा से निकाह नहीं कर सकता, फिर चाहे परिणाम जो भी हो। फोन कॉल्स के 30 सेकेंड के रिंग में करण ने दुनिया भर की चीजें सोच लीं।

“हेलो! कैसे हो?" आमिरा ने करण से पूछा।

“मैं ठीक हूँ, तुम कैसे हो?" करण ने आमिरा से कहा।

“ये क्या मैसेज किया तुमने?" आमिरा ने कहा।

“वही जो तुमने पढ़ा।" करण ने नर्वस होते हुए कहा।

“क्यूँ कोई दूसरी पसंद आ गई?" आमिरा ने हँसते हुए कहा।

“न...नहीं।" करण ने सकपकाते हुए कहा।

“तो इतना घबरा क्यूँ रहे हो?" आमिरा ने पूछा।

“नहीं...घबरा कहाँ रहा हूँ, तुम कुछ भी बोलती हो।" करण ने सफाई देते हुए कहा।

“तो क्यूँ नहीं करना निकाह और भंवर वाली क्या बात है?" आमिरा ने पूछा।

भंवर की बात सुन कर करण थोड़ा भयभीत हो गया, मानों इनकम टैक्स डिपार्टमेंट वालों की रेड पड़ी हो और करण के पास ढेर सारी संपत्ति हो, जिसका करण के पास कोई लेखा-जोखा ना हो।

“हमारी बात पिछले एक साल से नहीं हुई और अभी अचानक तुम्हारे अब्बू ने हमारी निकाह की तारीख तय कर दी, तो मैं अभी निकाह के लिए मानसिक रूप से बिलकुल भी तैयार नहीं हूँ....इसलिये मुझे वक्त चाहिए।" करण ने अपना बचाव करते हुए कहा।

"हमारा एक-दूसरे से बात नहीं करना ये अब्बू की शर्त थी, अब चूंकि हमारा निकाह होने वाला है तो अब हमलोग इस शर्त से बाहर निकलने वाले हैं। तुम्हें तो खुशी होनी चाहिए, इस दिन का हम दोनों ने कितना इंतजार किया है और आज तुम कह रहे हो कि तुम निकाह के लिए तैयार नहीं हो।" आमिरा ने करण को समझाते हुए कहा।

"तुम कुछ भी कह लो, मैं इस वक्त निकाह के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं हूँ। और, हो सके तो कुछ दिनों के लिए मुझसे दूर रहना।" करण ने झुंझलाते हुए कहा।

जब प्रेम सच्चा हो तो सामने वाले की वो बातें भी महसूस कर ली जाती हैं जो जुबां पर नहीं आती। प्रेम एक अलौकिक भावना है, एक अद्भुत एहसास। जिसने सच्चा प्रेम किया है वही इस भावना को व्यक्त करने में सफल हो पाता है। आज के दौर में प्रेम विरले ही मिलते हैं, मिलती है तो केवल वासना और स्वार्थ युक्त प्यार जो प्रेम से बेहद ही निम्न स्तर का है। सच्चे प्रेम की भावना को समझने के लिए प्रेमी होना आवश्यक है। किसी के प्रति प्रेम के सत्यापन के लिए, उनकी भावनाओं को समझने के लिए उसका अनुभव आवश्यक है। आमिरा इस बात को बखूबी समझ पा रही है कि करण किसी गंभीर मुसीबत में है अन्यथा, एक पल भी उससे दूर नहीं रह पाने वाला इंसान आज उसकी परछाईं से भी भाग रहा है।

"ठीक है! ठीक है! मैं तुम्हारी भावनाओं को समझ पा रही हूँ। लेकिन, अब्बू से क्या कहूंगी... उन्होंने तो निकाह की सारी तैयारियां शुरू कर दी हैं?" आमिरा ने कहा।

दोनों तरफ से थोड़ी देर तक सन्नाटा छाया रहा, करण के पास आमिरा के इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

"बोलो न, अब्बू से क्या कहूंगी.... कि करण अभी मानसिक रूप से निकाह करने को तैयार नहीं है।" आमिरा ने डपटते हुए कहा।

"हाँ यही कह देना।" करण ने पीछा छुड़ाने का प्रयास करते हुए कहा।

करण का इस तरह का बर्ताव आमिरा को थोड़ा चोट कर गया। औरत समुदाय की आत्मा बेहद कोमल होती है, हल्के चोट से ही आंखों में आंसू आ जाते हैं। तथा, जब चोट दिल पर लगी हो तो प्रकाश की गति से आंखों में आंसू आते हैं।

"करण.... पत्नी हूँ मैं तुम्हारी, वर्षों इंतजार किया है मैंने तुम्हारा और तुम मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हो।" आमिरा ने रोते हुए कहा।

" ऐसी बात नहीं है, मुझे थोड़ा वक्त चाहिए फिर सब कुछ सही हो जाएगा। तब तक वहाँ का मामला तुम संभाल लो और यहाँ का मामला मैं संभाल लूंगा। और, प्लीज मेरे पर भरोसा रखना।" करण ने आमिरा को दिलासा देते हुए कहा।

"मुझे तुम पर खुद से भी ज्यादा भरोसा है करण। ठीक है मैं अब्बू से बात कर लूंगी। और, तुम्हें कभी मेरी जरूरत पड़े तो मुझे याद करना।" आमिरा ने आंसू पोछते हुए कहा।

अशरफ साहब का कमरा:

अशरफ साहब अपने कमरे में लगे आराम कुर्सी पर आँखे बंद कर मनन कर रहे हैं। उनके दिमाग में अपने निर्णय को ले कर समीक्षा चल रही है। वो इस नाप-तौल में लगे हैं कि करण उनकी बेटी के लिए कितना सही रहेगा? उनके सामने करण के साथ की गई सारे दुर्व्यवहार की तस्वीरें ताज़ा हो रही हैं। उन्हें याद आ रहे हैं वो सारे पल जहाँ-जहाँ पर उन्होंने करण को नीचा दिखाने का प्रयास किया था, साथ ही उन्हें आभास हो रहा है उन बातों का उन तमाम बेइज्जती को झेलने के बाद भी उस लड़के ने एक उफ्फ तक नहीं किया, उनके शर्तों का लाज रखने के लिए अपनी मोहब्बत अपनी पत्नी से वर्षों दूर रहा। ये कृत्य कोई नेक इंसान ही कर सकता है, इतनी सहिष्णुता अल्लाह के किसी नेक बंदे में ही हो सकती है। तो क्या हुआ यदि वो हमारे कौम का नहीं है....तो क्या हुआ यदि वो पांच वक्त का नमाज़ी नहीं है....तो क्या हुआ यदि वो मस्जिद नहीं जाता। वो अल्लाह के द्वारा तराशा गया एक नायाब हीरा है जिसे अल्लाह ने मेरे परिवार रूपी खजाने की चमक को बढ़ाने

के लिए मेरे हिस्से में डाला है। करण से बेहतर कोई लड़का नहीं हो सकता मेरी आमिरा के लिए।

विचलित आमिरा के कदम अशरफ साहब के कमरे में दस्तक देते हैं, पिता को आराम करता देख आमिरा अपने कदम को वापस खींच लेती है। मन में चल रहे अनगिनत विचारों से आमिरा का मन काफी परेशान है....वो किस मुंह से अपने अब्बू से यह कहेगी कि करण इस वक्त निकाह के लिए तैयार नहीं है? वो अपने अब्बू से यह कैसे कह पायेगी कि जिस करण की तरफदारी करते हुए वह हमेशा उनकी खिलाफत करती रही...वही करण अभी उससे निकाह नहीं करना चाहता? क्या वो ऐसा कह सकती है...और यदि उसने ऐसा कह दिया तो क्या उसके मायके में करण की इज्जत रह पायेगी? नहीं! नहीं! वो अपने अब्बू के सामने करण का नाम नहीं लेगी, इस पूरे प्रकरण का इल्जाम वो अपने सर पर ले लेगी लेकिन, करण के इज्जत पर कोई आंच नहीं आने देगी। लेकिन, मैंने आज तक अपने अब्बू से कोई झूठ नहीं बोला मैं उनसे झूठ नहीं बोल सकती, मैं उन्हें सब कुछ सही-सही बता दूंगी फिर चाहे परिणाम जो भी हो।

आमिरा के कदम अभी अशरफ साहब के कमरे से ठीक से बाहर निकले भी नहीं थे कि आमिरा के कानो में अशरफ साहब की पुकार सुनाई दी।

“आमिरा, इधर आओ।"

“जी अब्बू।" आमिरा ने अपने कदम को वापस अशरफ साहब के कमरे की ओर मोड़ते हुए कहा।

“मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।" अशरफ साहब ने चेहरे पर मीठी मुस्कान लिए हुए कहा।

“जी अब्बू, कहिये न।" आमिरा ने झेंपते हुए कहा।

“यहाँ आओ...मेरे पास आ कर बैठो।" अशरफ साहब ने पास खड़ी दूसरी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा।

पिछले एक वर्ष में ऐसा एक भी दिन नहीं आया था जिस दिन आमिरा ने अपने अब्बू के मुंह से करण के खिलाफ बातें ना सुनी हो। पिछले एक वर्ष में आमिरा के लिए आमिरा के अब्बू कहीं खो से गए थे। आज उनके आँखों में आमिरा को वही पुराना प्यार, पुराना लगाव, पुराना समर्पण नजर आ रहा था।

यदि किसी की प्यारी चीज कहीं खो जाती है और लंबे अरसे के बाद जब वो मिलती हुई नजर आती है तो आँख व दिल दोनों भर आता है। अब्बू के प्यार को वापस मिलता देख आमिरा की आँखे व दिल भी भर आई।

“जी अब्बू।" आमिरा ने भावनाओं को नियंत्रित करते हुए पास खड़ी कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

“मैं तुमसे और करण से माफ़ी माँगना चाहता हूँ। मैंने तुम्हे और करण को बहुत बुरा-भला कहा है। आज मैं ये महसूस कर पा रहा हूँ कि करण अल्लाह का नेक बन्दा है, उससे बेहतर लड़का तुम्हारे लिए और कोई नहीं हो सकता। मुझे फख्र है तुम्हारी पसंद पर।" अशरफ साहब ने डबडबाई आँखों से एक ही सांस में पूरी बात कह दी।

वैसे तो इंसान की जिंदगी में बहुत से बुरे वक्त आते हैं तथा ये बुरे वक्त अलग-अलग रूपों में आते हैं। कभी आर्थिक तंगी, कभी मानसिक परेशानी, कभी रिश्तों में कोई मन-मुटाव, कभी अपनों का बिछड़ जाना, कई तरह के और भी अनचाही घटनाओं का घट जाना इत्यादि। परन्तु, इन सब बुरे वक्तों में किसी इंसान के लिए जो सबसे ज्यादा बुरा वक्त होता है या यूँ कहें कि

किसी बच्चे के लिए उसकी जिंदगी का जो सबसे ज्यादा बुरा वक्त होता है वो यह होता है कि बच्चों के सामने उसके पिता की आँखों में आंसू। कोई पिता जब बच्चों के सामने रोता है तो बच्चे को लगता है कि उससे बड़ा दुर्भाग्यशाली इंसान इस धरती पर कोई नहीं, कोई पिता जब बच्चों के सामने रोता है तो बच्चे को लगता है व्यर्थ है ये जिंदगी जिसमें मुझे अपने बाप के आंसू देखने पड़े, कोई पिता जब बच्चों के सामने रोता है तो बच्चे को लगता है ऐसी जिंदगी से मौत बेहतर है, कोई पिता जब बच्चों के सामने रोता है तो बच्चे को लगता है संसार के सारे सुख खरीदकर अपने पिता के क़दमों में रख दूँ कि कोई भी दुःख उनकी आंखों में आंसू ना लाने पाए। पिता अपने बच्चों के लिए उनका पहला रोल मॉडल होता है। प्रत्येक बच्चा जब बालपन में होता है तो वो अपने पिता की तरह बनना चाहता है। पिता सिर्फ एक शब्द नहीं है या पिता सिर्फ एक रिश्ते तक सीमित नहीं है। पिता अपने बच्चों के लिए एक पूरा ब्रह्माण्ड होता है। ब्रह्माण्ड...जिसमे उसके बच्चे चाँद-सितारे बन कर खिलखिलाते रहते हैं और वो एक आशुतोष की भांति अपने बच्चों को देख कर खुश होता रहता है।

साल 2012 में दिग्गज अभिनेता अक्षय कुमार व परेश रावल अभिनीत एक फिल्म '***ओ माय गॉड***' आई थी जिसमें अक्षय कुमार ने भगवान का किरदार निभाया था तथा परेश रावल ने एक माध्यम वर्गीय व्यापारी का जो कि एक नास्तिक (भगवान को नहीं मानने वाला) भी है। इस फिल्म में एक संवाद है जिसमें अक्षय कुमार (भगवान) ....परेश रावल (व्यापारी) से कहते हैं कि- "एक सच्चा नास्तिक एक सच्चा आस्तिक भी बन सकता है" तथा फिल्म के अंत तक परेश रावल एक सच्चे नास्तिक से एक सच्चे आस्तिक भी बन जाते हैं। इस फिल्म का यह संवाद रियल जिंदगी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि रील वाले जिंदगी में। बात सिर्फ नास्तिक या

आस्तिक की नहीं है, बात किसी भी परिप्रेक्ष्य में हो जो जितना नकारात्मक होता है वो उतना ही सकारात्मक भी हो सकता है।

पिता की इस अभिव्यक्ति ने आमिरा के नियंत्रित भावनाओं को पूरी तरह से अनियंत्रित कर दिया। आंसू टूटे हुए माला की मोतियों जैसे उसके आँखों से झड़ने लगे। उसे इस बात का बोध हो चला था कि उसके पिता को करण पर बहुत ज्यादा भरोसा हो गया है और यदि वो इस वक्त उन्हें ये बताएगी की करण उससे अभी निकाह नहीं करना चाहता है तो शायद उन्हें गहरा सदमा लग सकता है।

“मैं अपने अब्बू को कोई सदमा नहीं दे सकती, ना ही मैं अपने अब्बू के आँखों में आंसू देख सकती हूँ। मैं फिर से करण से बात करुँगी उसे समझाऊँगी फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।" आमिरा ने सोचा।

“आप कैसी बातें कर रहे हैं अब्बू, आप हमारे वालिद हैं आप माफ़ी मत मांगिये...आप हमें आदेश दीजिए, और आप तो जानते हैं न मुझे आपकी आँखों में आंसू बिलकुल भी पसंद नहीं है।" आमिरा ने अशरफ साहब के आंसू को पोंछते हुए कहा।

करण का घर: करण सुबह से ही अपने पिता राकेश साहब का विश्वविद्यालय से वापस आने का इंतजार कर रहा है। वो उनसे कह देना चाहता है कि वो अभी निकाह नहीं कर सकता। मन में अनगिनत सवाल, असंख्य दुविधाएं उसकी बेचैनी को और भी ज्यादा बढ़ा रहे हैं। बेचैन मन शरीर को भी स्थिर नहीं रहने देता है। करण कभी घर की बालकनी में जा कर अपने पिता का इंतजार कर रहा है तो कभी दरवाज़े पर खड़े हो कर अपने पिता की राह देख रहा है। कभी घर के ओसारे पर कदमताल कर रहा है तो कभी मकान के छत की लम्बाई-चौड़ाई को अपने क़दमों से नाप रहा है। करण की माँ उषा को ये बात अच्छे से समझ आ रही थी कि करण किसी

परेशानी में है, फिर भी उसने इस बात को इतना तवज्जो नहीं दिया उसे लगा निकाह की तारीख तय हो गई है, इसलिए थोड़ा नर्वस हो रहा होगा, फिर भी एक माँ होने के नाते उसने करण की परेशानी को पूछना अपनी जिम्मेदारी समझा।

“कोई बात है...परेशान दिख रहे हो?" उषा ने करण से कहा।

“नहीं कोई बात नहीं, पापा कब तक आयेंगे?" करण ने कहा।

“आज उन्हें थोड़ा देर होगा।" उषा ने करण को चाय का प्याला पकड़ाते हुए कहा।

इन्तजार की घड़ी जब बढ़ने लगती है तो दिमागी फ्रस्ट्रेशन भी बढ़ने लगता है और कई बार यह भौतिक रूप में भी नजर आने लगता है।

“क्यूँ देर होगा....रोज तो इस वक्त तक आ जाते हैं, आज मुझे उनसे जरुरी काम है तो उन्हें देर हो रहा है?" करण ने चिल्लाते हुए कहा।

“तुम इतना गुस्सा क्यूँ कर रहे हो....मुझे बताओ क्या काम है?" उषा ने कहा।

“कोई बात नहीं है, मुझे पापा से एक पर्सनल काम है।" करण ने बात को सँभालते हुए कहा।

“तो पापा को फोन कर लो, इसमें इतना गुस्सा होने वाली क्या बात है।" उषा ने कहा।

“ये बताइए कि वो आयेंगे कब तक?" करण ने कहा।

“आज विश्वविद्यालय में कोई मीटिंग है इसलिए देर शाम को आयेंगे।" उषा ने कहा।

करण के पास फिलहाल अपने पिता राकेश साहब का इंतजार करने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं था। इन बात-चीत के दौरान करण ने अपने चाय के प्याले को समाप्त कर लिया था। प्याला समाप्त होते ही करण अपने कमरे में चला गया। करण की मनोदशा देख उषा ने राकेश साहब को फोन लगाया।

“हेलो! आप कितनी देर में आ रहे हैं?" उषा ने फोन पर राकेश साहब से कहा।

“अभी तो मीटिंग शुरू भी नहीं हुई है....मुझे रात हो जायेगी।" राकेश साहब ने कहा।

“करण कुछ परेशान लग रहा है।" उषा ने कहा।

“उसे क्या हो गया?" राकेश साहब ने कहा।

“मुझे कुछ बता नहीं रहा...बोल रहा है आपसे ही बात करेगा, आप उसे एक फोन कर लीजिए न।" उषा ने कहा।

“ठीक है, मैं उससे बात कर लेता हूँ। तुम परेशान मत होना।" राकेश साहब ने कहा।

“ओके।" उषा ने कहा।

उषा का फोन डिसकनेक्ट होते ही राकेश साहब ने करण को फोन लगाया।

“हेलो! हाँ करण, क्या हुआ बेटे तुम्हारी माँ कह रही थी तुम कुछ परेशान से हो, कोई बात?" राकेश साहब ने फोन पर करण से कहा।

“हाँ पापा मुझे आपसे जरुरी बात करनी है, आप कब तक घर आओगे?" करण ने कहा।

“अभी तो मेरी एक मीटिंग है...जो पता नहीं कब तक खत्म होगी, तो मुझे आते-आते रात हो जायेगी।" राकेश साहब ने कहा।

“तो क्या मैं अभी आपसे वो बात शेयर कर सकता हूँ पापा?" करण ने संकोच करते हुए कहा।

“हाँ बेटे...बोलो न।" राकेश साहब ने कहा।

“पापा वो मेरी निकाह के बारे में मुझे कुछ कहना है।" करण ने कहा।

जब किस्मत किसी के साथ खेल-खेल रही होती है तो क्षण-क्षण में जिंदगी में ट्विस्ट आते हैं। करण का भी वही हाल है। आज जब करण को अपने पिता से बात करनी है तो आज उसके पिता को ऑफिस से आने में देरी हो रही है, और जब वो फोन पर बात करने का प्रयास करता है तो तभी उसके पिता को मीटिंग के लिए बुलावा आ जाता है।

“राकेश जी वी.सी. साहब आ गए, मीटिंग के लिए पहुंचिए।" राकेश साहब के साथी मेहरा साहब ने राकेश साहब से कहा।

“सुनो बेटा...मैं मीटिंग खत्म कर के तुमसे बात करता हूँ।" राकेश साहब ने करण से कहा।

“ठीक है पापा।" करण ने निराशा में कहा।

अपने पिता से बात करने के दौरान करण को आमिरा का फोन आ चुका था। पिता का फोन डिसकनेक्ट होते ही करण ने आमिरा को फोन किया।

“हेलो! हाँ तुमने फोन किया था।" करण ने आमिरा से कहा।

“हाँ।" रुआंसी आवाज़ में आमिरा ने कहा।

“क्या हुआ...तुम्हारी आवाज़ में ये दर्द कैसा?" करण ने कहा।

“काश तुम इस दर्द को समझ पाते करण।" आमिरा ने कहा।

“क्या हुआ...बताओ भी।" करण ने कहा।

“मैं अब्बू से नहीं कह पायी करण और ना कह पाऊँगी।" आमिरा ने रोते हुए कहा।

“क्यूँ....ऐसा क्या हो गया?" करण ने कहा।

“करण...अब्बू बहुत भरोसा करते हैं तुम पर...वो ये सुन के टूट जायेंगे कि तुम निकाह नहीं करना चाहते।" आमिरा ने कहा।

“ये कब हुआ...तुम्हारे अब्बू मुझ पर कब से भरोसा करने लगे, वो तो कहते थे काफिर भरोसे के लायक नहीं होते।" करण ने चुटकी लेते हुए कहा।

“करण तुम चीजों को इतने हल्के में क्यूँ लेते हो, क्या तुम सीरियस नहीं हो सकते?"

“सीरियस ही हूँ यार।" करण ने कहा।

“नहीं हो तुम सीरियस, यदि होते इतने सीरियस टॉपिक पर यूँ मजाक नहीं करते।" आमिरा ने करण को डांटते हुए कहा।

“सीरियस से तुम्हारा क्या मतलब है? यदि मैं तुम्हारी किसी बात की प्रतिक्रिया में अपने चेहरे पर गंभीरता, माथे पर पसीने की बूँद तथा होठों पर कम्पन्न ले आऊंगा...तब तुम मानोगी कि मैं सीरियस हूँ।" करण ने खीझते हुए कहा।

“करण तुम अभी निकाह क्यूँ नहीं कर सकते, प्लीज़ कर लो न मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ, प्लीज़ कर लो न। मुझमें हिम्मत नहीं अब्बू को ये बात बताने की।" आमिरा ने करण के आगे गिड़गिड़ाते हुए कहा।

“मैं समझ सकता हूँ तुम्हारी मज़बूरी....लेकिन तुम्हें भी मेरी मज़बूरी समझनी पड़ेगी न।" करण ने कहा।

“क्या मज़बूरी है...मुझे बताओ.....मुझे तो बता सकते हो न?" आमिरा ने कहा।

“नहीं मैं अभी तुम्हें कुछ नहीं बता सकता लेकिन, समय आने पर तुम्हें जरुर बताऊंगा।" करण ने कहा।

“तो तुम अभी क्या कर सकते हो....मुझे मरता हुआ छोड़ सकते हो या मेरे अब्बू को?" आमिरा ने चिल्लाते हुए कहा।

“तुम छोटी-सी बात को बड़ा बना रही हो।" करण ने कहा।

“रियली....ये तुम्हें छोटी बात लगती है करण...इतनी ही छोटी बात है तो तुम ही आ कर बात कर लो न....या अपने पापा को बोल के मना करवा दो, मुझ में हिम्मत नहीं है अपने अब्बू से इस बारे में बात करने की।" आमिरा ने रोते हुए कहा।

“अच्छा तुम रोना बंद करो...मैं आज अपने पापा से इस बारे में बात करने वाला हूँ।" करण ने पल्ला झाड़ने का प्रयास करते हुए कहा।

“तुम बदल गए हो करण, तुम ऐसे नहीं थे।" आमिरा ने कहा।

“मैं वैसा ही हूँ जैसा पहले था, बस मुझे देखने का तुम्हारा नजरिया बदल गया है।" करण ने कहा।

“तुम मुझे क्यूँ नहीं बताना चाहते कि तुम्हारी जिंदगी में क्या चल रहा है?" आमिरा ने कहा।

“वक्त आने पर जरुर बताऊंगा और यकीन मानो उस दिन तुम्हें अपने करण पर बहुत गर्व होगा।" करण ने कहा।

“जिंदगी रहेगी पहले.......तब न गर्व होगा।" आमिरा ने निराशा में कहा।

“तुम्हारी यही बहकी-बहकी बातें मुझे पसंद नहीं है...क्या होगा तुम्हारी जिंदगी को, क्या तुम्हें मुझ पर इतना भी भरोसा नहीं है, कहीं तुम ऐसा तो नहीं सोच रही कि मैं तुम्हें धोखा दे रहा हूँ?" करण ने कहा।

“बात धोखे की नहीं है करण...बात अब्बू के मोहब्बत की है, बात उनके इज्जत की है, बात उनके कमिटमेंट की है और सबसे महत्वपूर्ण ये है कि बात उनके भरोसे की है...भरोसा जो वो तुम पर करते हैं।" आमिरा ने कहा।

“मैं ना उनका भरोसा तोड़ रहा हूँ और ना तुम्हारा....हालात ने मुझे तोड़ रखा है.....मैं जिस दिन हालात के इस जंजीर को तोड़ दूँगा उसी दिन तुमसे निकाह करूँगा।" करण ने कहा।

“पता नहीं...क्या सीन चल रहा है तुम्हारा...बताते भी नहीं हो कुछ! मुझमें हिम्मत नहीं...तुम कर सको इस मामले में कुछ तो कर लेना। अब मैं तुमसे तब तक बात नहीं करुँगी जब तक हमारा निकाह नहीं हो जाता, ना ही मैं अब तुम्हारे पास कोई याचना लेकर आउंगी, क्यूंकि अब सूख गए मेरे शब्द, आंसू और भाव। नफरत नहीं करुँगी तुमसे लेकिन अब मोहब्बत भी पहले जैसी नहीं होगी। करो वही...जो मन आये, मेरी तरफ से कोई पाबन्दी नहीं होगी।" आमिरा ने यह कहकर फोन रख दिया।

मर्द की पसंदीदा स्त्री जब कटाक्ष करती है तो कटाक्ष सीधे दिल पर लगता है। आमिरा की बातें करण के दिल पर लग गई थी...लेकिन वो अपने हालात से मजबूर है। और उसे इंतजार है रात होने का जब उसके पापा घर आयेंगे।

करण के लिए एक-एक पल काटना मुश्किल हो रहा है, वो कह देना चाहता है अपने पिता से अपने दिल की बात, जल्द-से-जल्द खत्म कर देना चाहता है अपने मन में घर की हुई अशांति को।

"कुछ भी हो मैं आज पापा से कह कर रहूंगा कि मैं अभी ये निकाह नहीं कर सकता।" करण ने अपने आप से कहा।

तभी किसी अनजान नंबर ने करण के फोन पर दस्तक दिया। ये अनजान नंबर करण के लिए अनजान नहीं था, इस नंबर ने करण की जिंदगी में भूचाल ला दिया था। इसलिए इसे अनजान नंबर ना कह कर अनचाहा नंबर की संज्ञा दी जाए तो ज्यादा बेहतर होगा। करण ने इस अनचाहे नंबर को इग्नोर करने का प्रयास किया। लेकिन, इस अनचाहे नंबर से एक-के-बाद-एक फोन आते रहे। अंततः करण ने माथे पर आए पसीने की बूंदों को पोंछते हुए फोन रिसीव किया।

"कब तक दूर भागोगे मुझसे?" अनचाहे नंबर वाले व्यक्ति ने करण से कहा।

"कौन हो तुम, क्यों परेशान कर रहे हो मुझे?" करण ने ऊंची आवाज में कहा।

"आवाज नीचे मिस्टर करण वर्ना आप तो जानते ही हैं मैं क्या कर सकता हूँ?" अनचाहे नंबर वाले व्यक्ति ने धमकाते हुए कहा।

"क्या कर सकते हो तुम, कुछ नहीं कर सकते हो तुम।" करण ने चिल्लाते हुए कहा।

"यदि कुछ नहीं कर पाता तो आप इतने अंडर प्रेशर नहीं आते मिस्टर करण।" अनचाहे नंबर वाले व्यक्ति ने कुटिलता प्रदर्शित करते हुए कहा।

" डरपोक हो तुम, सामने आकर बात करो।" करण ने कहा।

"आउंगा, एक दिन आपके सामने जरूर आउंगा। फिलहाल आप मेरी बातों का ध्यान दीजिएगा, निकाह मत कीजिएगा अन्यथा आपका कच्चा-चिट्ठा दुनिया के सामने होगा।" अनचाहे नंबर वाले व्यक्ति ने ये कहकर फोन रख दिया।

जब कोई व्यक्ति ईमानदार होता है तो उसे किसी भी धमकी का भय नहीं होता, किंतु जब कोई व्यक्ति किसी भी स्तर पर थोड़ा भी बेईमान होता है तो वह मिलने वाली धमकी पर भयभीत हो उठता है। करण की जिंदगी फिलहाल भय की दुनिया में चल रही है। कश्मकश से भरी जिंदगी करण को बोझिल लगने लगी है। यदि वह निकाह नहीं करता है तो आमिरा के लिए जिंदगी भर के लिए अपराधी बन जाएगा और यदि वह निकाह करता है तो इस अनचाहे व्यक्ति का डर कि कहीं "इतिहास" वर्तमान और भविष्य को चौपट ना कर दे।

"मेरे पास दो रास्ते हैं... या तो मैं निकाह नहीं करूँ या नहीं तो मैं आमिरा को सब कुछ सच-सच बता दूँ कि मैं किस भंवर में फंसा हुआ हूँ। लेकिन, यदि मैं आमिरा को सब कुछ बता देता हूँ तो क्या मेरी जिंदगी सामान्य रह पाएगी, क्या आमिरा मुझे माफ कर पाएगी, क्या आमिरा से यह तकलीफ बर्दाश्त हो पाएगा? नहीं मैं आमिरा को इतनी बड़ी तकलीफ नहीं दे सकता। मैं निकाह नहीं करूँगा, मैं पापा को स्पष्ट शब्दों में कह दूंगा कि मुझे थोड़ा वक्त चाहिए"। करण ने स्वयं से कहा।

रात के 8 बज रहे हैं। करण की माँ उषा व उसकी बहन स्वाति रसोईघर में रसोई बना रही है।

"माँ, करण भैया के लिए कौन-सी सब्जी बनानी है वो तो भिंडी नहीं खाएंगे?" स्वाति ने भिंडी की सब्जी काटते हुए कहा।

"आलू का भुजिया बना लेना उसके लिए और अंडे रखे हुए हैं, ऑमलेट बना देना।" उषा ने रोटी बेलते हुए कहा।

"मैं भी आमलेट खाउंगी"। उषा ने कहा।

"तो तुम अपने लिए भी बना लेना।" स्वाति ने कहा।

"ये लो माँ भिंडी कट गई, अब मैं भुजिए के लिए आलू काट देती हूँ।" स्वाति ने कहा।

"करण ने तुम्हें कुछ बताया है क्या?" उषा ने स्वाति से पूछा।

"नहीं तो, क्यूँ कुछ हुआ क्या?" स्वाति ने कहा।

"पता नहीं .... जब से निकाह की बात सुना है तभी से परेशान दिख रहा है।" उषा ने कहा।

"भैया नर्वस हो रहे होंगे माँ, इसलिए परेशान होंगे।" स्वाति ने कहा।

"हो सकता है, कह रहा था पापा से बात करना चाहता है।" उषा ने कहा।

"पापा से याद आया, पापा नहीं आए अभी तक?" स्वाति ने कहा।

"पता नहीं कहाँ है, बोल रहे थे वी. सी. के साथ मीटिंग है।" उषा ने कहा।

"फोन कर के पूछो न कहाँ हैं? मीटिंग तो शाम तक खत्म हो जानी थी, अभी तो रात हो गई।" स्वाति ने कहा।

"एक रोटी बनाने को बची है। ये बन जाए फिर फोन करूंगी।" उषा ने कहा।

"ठीक है।" स्वाति ने कहा।

आखिरी रोटी बनने के बाद उषा ने राकेश साहब को फोन लगाया।

"कहाँ हैं आप, मीटिंग चल ही रही है?" उषा ने कहा।

"नहीं मीटिंग कब का खत्म हो गई, मैं अभी करण के ससुराल में हूँ।" राकेश साहब ने हंसते हुए कहा।

"करण के ससुराल... अचानक???" उषा ने चौंकते हुए कहा।

"हाँ वो रास्ते में अशरफ साहब मिल गए थे, उन्होंने जिद किया तो मैं आ गया, सोचा आमिरा से भी मिलता चलूंगा।" करण साहब ने कहा।

"ठीक है समधी साहब को मेरा प्रणाम कहिएगा और आमिरा को मेरा प्यार दीजिएगा।" उषा ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ठीक है, रखता हूँ।" राकेश साहब ने कहा।

"अच्छा आखिरी सवाल... कितना समय लगेगा आपको घर आने में?" उषा ने कहा।

"बस यहाँ से निकलूंगा थोड़ी देर में।" राकेश साहब ने कहा।

"ठीक है आइए।" उषा ने इतना कहते ही फोन रख दिया।

"पापा क्या बोले, कितना देर लगेगा?"आलू भुजिया काटती हुई स्वाति ने अपनी माँ से पूछा।

"अभी करण के ससुराल में हैं, थोड़ी देर में निकलेंगे वहाँ से।" उषा ने कहा।

" अचानक वहाँ?" स्वाति ने कहा।

" आमिरा के पापा मिल गए थे रास्ते में, वही घर तक ले गए।"

"अच्छा! ये लो भुजिए के लिए आलू कट गई।" स्वाति ने कहा।

"ठीक है, ऑमलेट के लिए प्याज काट लेना, मैं जरा करण के कमरे से आती हूँ।" उषा ने कहा।

करण का कमरा:

उलझे दिमाग से लड़ते-लड़ते तथा पिता का इंतजार करते-करते करण की आँख कब लग गई करण को पता ही नहीं चला। जब हमारा दिमाग किसी उलझन की वजह से परेशान रहता है तो नींद उस परेशान दिमाग के लिए बूस्टर डोज़ का काम करती है। नींद किसी भी इंसान के लिए मौत के बाद सबसे प्यारी अवस्था है। मौत हो जाने के बाद इंसान की भावभंगिमा रुक जाती है। इंसान सभी जिम्मेदारियों, परेशानियों व भावनाओं से मुक्त होकर एक गहरी और सुकून की नींद में सो जाता है। इंसानी फितरत तो देखिये... इंसान यह जानता है कि मौत सा सुकून किसी भी चीज में नहीं है फिर भी वो मौत से डरता है। नींद भी लगभग मौत की तरह ही होती है। इंसान जब तक नींद में होता है तब तक वो पूरी दुनिया और दुनिया की जिम्मेदारियों से कटा हुआ होता है। मौत और नींद में फर्क सिर्फ इतना है कि मौत हमें स्थिर कर देती है, परन्तु नींद में हम अस्थिर होते हैं। मौत हमारी साँसे छीन लेती है, लेकिन नींद में हमारी साँसे चलती रहती है।

"सो रहे हो करण?" उषा ने कहा।

करण की ओर से कोई जवाब ना आने पर उषा को लगा कि करण सो गया है। आमतौर पर इस घर में सभी 11 बजे रात के बाद ही सोने को बिस्तर पर जाते हैं। करण का इतनी जल्दी सोना उषा को कुछ अटपटा लगा। एक माँ बच्चे के मामले में कभी कोई कम्प्रोमाइज़ नहीं करती है। बच्चों के मामले में थोड़ा भी असहज होने पर एक माँ जांच- पड़ताल में जुट जाती है। उषा ने

करण का बुखार मापने के लिए करण के माथे को छुआ। माँ के स्पर्श ने करण को नींद से जगा दिया।

"अरे माँ आप।" करण ने चौंकते हुए कहा।

"तुम्हारी तबियत ठीक है, आज इतनी जल्दी सो गए?" उषा ने कहा।

" थोड़ा सर में दर्द था माँ, वो चश्मा खो गया है न इसलिए।" करण ने एक्सक्यूज देते हुए कहा।

"ठीक है आराम करो।" उषा ने कहा।

"पापा आए?" करण ने कहा।

"नहीं अभी।" उषा ने कहा।

"अभी तक नहीं, इतनी देर?" करण ने हतप्रभ होते हुए पूछा।

"मीटिंग के बाद तुम्हारे ससुराल चले गए।" उषा ने कहा।

"मेरे ससुराल चले गए.... क..क... क्यों?" करण चौंक कर उठ गया।

"क्या हुआ, ससुराल के नाम पर तुम इतने चौंक क्यों गए?" उषा ने कहा।

"कुछ नहीं मां, बस ऐसे ही अचानक चले गए तो मुझे लगा कि ऐसा क्या हो गया कि उन्हें अचानक जाना पड़ा।" करण ने मामले को संभालते हुए कहा।

"बेटा, माँ हूँ मैं तुम्हारी कोई परेशानी है तो मुझसे कहो।" उषा ने कहा।

"नहीं माँ कुछ विशेष नहीं।" करण ने कहा।

दरवाजे पर हॉर्न की आवाज आ रही है। उषा व उसके बच्चों के लिए हॉर्न की ये आवाज नई नहीं है।

"लगता है तुम्हारे पापा आ गए।" उषा ने कहा।

"हाँ मैं दरवाजा खोल कर आता हूँ।" करण ने कहा।

"तुम आराम करो, मैं दरवाजा खोल देती हूँ। थोड़ी देर में खाने पर आ जाना।" उषा ने करण के कमरे से बाहर निकलते हुए कहा.

देश को चलाने के महत्वपूर्ण फैसले संसद में लिए जाते हैं। अक्सर संसद में तीखी बहस देखने को मिलती है। विधेयक यहीं प्रस्तावित किये जाते हैं और विधेयक कानून का रूप भी उसी संसद के द्वारा लेता है। भारतीय मध्यम वर्गीय परिवार में डिनर टेबल ही संसद होता है। इसी टेबल पर घर के सांसद अपने विचारों को रखते हैं, इसी टेबल पर घर के सांसदों के बीच रखे हुए विचारों पर तीखी बहस होती है, तथा इसी टेबल पर महत्वपूर्ण घरेलू मुद्दों पर निर्णय लिया जाता है।

‘‘हाँ करण तुम्हें मुझसे क्या बात करनी थी बेटे?" राकेश साहब ने भिन्डी की सब्जी मुंह में डालते हुए कहा।

‘‘जी पापा....कहनी तो है एक बात, लेकिन कहने में संकोच कर रहा हूँ और बिना कहे रह भी नहीं पा रहा।" करण ने ऑमलेट तोड़ते हुए कहा।

‘‘हाँ बेटा बोलो न, ऐसी भी क्या बात है?" राकेश साहब ने कहा।

‘‘आमिरा कैसी है और वहाँ सब लोग कैसे हैं?" उषा ने बीच में टोकते हुए कहा।

“सब कोई ठीक हैं वहाँ, अशरफ साहब ने आज दिल जीत लिया...लग ही नहीं रहा था कि ये 1 साल पुराने वाले अशरफ साहब हैं।" राकेश साहब ने मुस्कुराते हुए कहा।

“ऐसा क्या कर दिया उन्होंने?" उषा ने कहा।

“वैसे तो बहुत-सी अच्छी बातें की उन्होंने, लेकिन उन्होंने करण की जिस प्रकार तारीफ की उसका कायल हो गया मैं। आमिरा से बेहतर बहू और अशरफ साहब से बेहतर रिश्तेदार नहीं मिल सकते हमें।" राकेश साहब ने कहा।

“भैया और ऑमलेट लेंगे?" स्वाति ने करण की खत्म होते ऑमलेट को देख कर कहा।

“नहीं चाहिए।" करण ने कहा।

“हाँ अब मात्र 3 दिनों की तो बात है फिर हमारी बहू हमारे घर होगी।" उषा ने खुशी से झूमते हुए कहा।

“हाँ एक बार बहू घर आ जाये फिर दामाद लाने की तैयारी की जायेगी।" राकेश साहब ने स्वाति को छेड़ने के लिए हँसते हुए कहा।

“क्या पापा।" स्वाति ने शर्माते हुए कहा।

“हाँ करण तुम बोलो न क्या बोलने वाले थे?" राकेश साहब ने कहा।

परिवार के लोगों को मुस्कुराता-खिलखिलाता देख करण की हिम्मत नहीं हो रही थी कि उन्हें ये बता सके कि वो इस वक्त निकाह नहीं कर सकता। फिर भी उसने अपने अंदर की पूरी उर्जा को एकत्रित कर के कांपते हुए कहा-

“पापा मैं आमिरा से निकाह नहीं कर सकता।"

करण के इस कथन ने परिवार के खुशनुमा माहौल को स्तब्ध कर दिया। हर कोई करण का मुंह देखने लगा. किसी को भी करण से इस कथन की उम्मीद नहीं थी। परिवार के लोगों के लिए यह एक झटके की तरह था...ठीक वैसा ही झटका जब करण ने पहली बार कहा था कि- 'उसे आमिरा से शादी करनी है'।

परिस्थितियां अब पहले से ठीक विपरीत हो गई हैं। पहले की परिस्थिति में करण को आमिरा से शादी करनी थी और उसके परिवार वाले शादी के लिए राज़ी नहीं थे। अब की परिस्थिति में उसके परिवार वाले करण का निकाह आमिरा से कराना चाहते हैं और करण आमिरा से निकाह नहीं करना चाहता। इन दोनों परिस्थिति में जो चीज़ कॉमन है वो है 'झटका'। झटका....जो करण के परिवार वालों पर पहले भी लगा था और आज भी।

"क्यूँ बेटा...क्या हो गया?" राकेश साहब ने आश्चर्य में कहा।

"पापा मैं निकाह के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं हूँ।" करण ने कहा।

"आमिरा तुम्हारी पत्नी है बेटा...हमलोग यह प्रक्रिया केवल अशरफ साहब के मूल्यों का मान रखने के लिए कर रहे हैं, इसमें मानसिक रूप से तैयार होने या ना होने की तो कोई बात नजर नहीं आती है मुझे। इसलिए चिंता मत करो, हमलोग हैं न सब कुछ अच्छे से हो जायेगा, तुम दिमाग पर ज्यादा लोड मत लो।" राकेश साहब ने करण को समझाते हुए कहा।

"हाँ भैया...आप ज्यादा लोड ले रहे हो....आप ज्यादा मत सोचो।" स्वाति ने कहा।

"पापा, क्या ये निकाह कुछ दिनों तक टल नहीं सकता?" करण ने राकेश साहब से अनुरोध करते हुए कहा।

“नहीं बेटा....निकाह को टालना अभी संभव नहीं है। यदि हमलोग अभी ऐसा करते हैं तो समाज में और तुम्हारे ससुराल में गलत सन्देश जायेग। इसलिए इसे टालना अभी संभव नहीं है।" राकेश साहब ने कहा।

“अचानक क्या हो गया है तुम्हें? जिस लड़की को दुल्हन बना कर घर लाने के लिए तुम इतने प्रयत्नशील थे, आज जब वो घर आ रही है तो तुम मना कर रहे हो।" उषा ने करण से कहा।

“ऐसी कोई बात नहीं है माँ, मैं मना नहीं कर रहा, बस मुझे कुछ दिनों के लिए आराम चाहिए. फिर आपलोग जैसा कहेंगे मैं वैसा करने के लिए तैयार हूँ।" करण ने अपनी माँ से कहा।

“तारीख आगे नहीं बढ़ सकती बेटा, निकाह उसी तारीख को होगी जिस तारीख को अशरफ साहब ने निकाह होना सुनिश्चित किया है, तथा मैंने भी इस सन्दर्भ में अपनी हामी भरी है। समाज में, मोहल्ले में, रिश्तेदारों में सभी को ये बात बता चुका हूँ कि 25 तारीख को बहू घर आ रही है, हर कोई निमंत्रित है। इतने दिनों बाद बहू का घर आना सुनिश्चित हुआ है, इसलिए तारीख आगे बढ़ने का सवाल ही नहीं होता।" राकेश साहब ने रोटी का आखिरी निवाला मुंह में डालते हुए कहा।

“लेकिन पापा!" करण ने कुछ कहने का प्रयास किया।

“लेकिन वेकिन कुछ नहीं, यदि तुम मेरी इज्जत खराब करना चाहते हो तो बेशक तुम निकाह के लिए मना कर सकते हो।" राकेश साहब ने करण की बात को बीच में ही काटते हुए कहा।

बात जब पिता के इज्जत की हो तो करण कुछ भी कर सकता है, अपनी जान दे भी सकता है और किसी की जान ले भी सकता है।

घरेलू संसद ने कुल मिलाकर यह बात तय किया कि निकाह की तारीख आगे नहीं बढ़ेगी। डिनर के बाद सभी अपने- अपने कमरे में सोने के लिए चले गए।

निकाह की तारीख बढाने को लेकर पिता के इंकार ने करण को और भी ज्यादा हतोत्साहित कर दिया था। करण के कुछ समझ नहीं आ रहा कि वो अब क्या करे। उसे उम्मीद थी कि उसके पिता उसकी बातों को समझेंगे, लेकिन फिर ये सवाल भी कि वो उसकी बातों को कैसे समझेंगे, जब उसने अपने पिता को सच बताया ही नहीं और वो सच बताए तो बताए कैसे? सच कहने की उसकी हिम्मत नहीं।

दिमाग में जब कोई विकार व समस्याएं चल रही होती हैं तथा जब हम उसके समाधान पर नहीं पहुंच पाते हैं तो हम भावनात्मक रूप से टूट जाते हैं। भावनात्मक रूप से टूटना भी अपने आप में बहुत जरुरी होता है। इस वियोग के बाद हम पुनः मजबूती से खड़े हो पाते हैं, जैसे पतझड़ के बाद पुनः हरे पत्तों का निकल आना। जब हम भावनात्मक रूप से टूटते हैं तो उसे फिर से खड़ा होने के लिए एक मजबूत सहारे की जरुरत होती है। सहारा भी ऐसा होना चाहिए जो हमारी भावनाओं को समझे और भंवर से निकलने में हमारी मदद करे। ये सहारा किसी रक्त सम्बन्ध का मोहताज़ नहीं है। कई बार हमारे माता-पिता, भाई-बहन यहाँ तक की पत्नी भी हमारी भावनाओं को नहीं समझ पाते हैं और ना ही हम उन्हें समझा पाते हैं। कुछ बातें ऐसी होती है जिनका जिक्र हम उक्त रिश्तों के साथ नहीं कर सकते। इन रिश्तों से इतर भगवान ने एक बेहद खूबसूरत रिश्ता बनाया है ‘दोस्ती’ का। सुखी जीवन जीने के लिए जिंदगी में एक सच्चे दोस्त का होना बहुत जरुरी होता है। हम अपने दोस्तों के साथ उन बातों का भी जिक्र कर सकते हैं, जिनका जिक्र हम अपने पैरेंट्स के सामने भी नहीं कर सकते। एक अच्छा पैरेंट्स बनने के लिए पैरेंट्स का दोस्त बनना बहुत जरुरी होता है।

दोस्ती एक अनमोल रिश्ता है जो बिना किसी शर्त और स्वार्थ के होता है। यह जीवन के सबसे सुन्दर और कीमती रिश्तों में से एक है। दोस्ती का कोई रूप, कोई सीमा या कोई बंधन नहीं होता, यह दिल से दिल तक की यात्रा है। जब दो लोग एक-दूसरे को समझते हैं, समर्थन करते हैं और हर अच्छे-बुरे वक्त में साथ होते हैं, तब वही सच्ची दोस्ती कहलाती है। दोस्ती एक गहने की तरह है जिसे कठिनाइयों और समय की कसौटी पर परखा जाता है। एक सच्चे दोस्त का होना जीवन को और भी रंगीन और सुखमय बना देते है। करण को ऐसे ही सच्चे दोस्त की जरुरत है, और बात जब सच्चे दोस्त की हो तो करण के लिए अमन से बेहतर कोई दोस्त नहीं। अमन वो इंसान है जिसे करण की हर वो बात पता है जिसे करण दुनिया से छिपा कर रखा है।

“मुझे अमन से बात करनी चाहिए...शायद मेरा मन कुछ हल्का हो जाये।" करण ने अपने-आप से कहा।

“अमन...कहाँ हो भाई?" करण ने फोन पर अमन से पूछा।

“चौक पर...फजलु की दुकान पर सिगरेट पी रहा हूँ भाई।" अमन ने सिगरेट का धुआं का छल्ला बनाते हुए कहा।

“सुन न...बहुत टेंशन में हूँ भाई।" करण ने कहा।

“क्या हो गया...आ न फजलु के दुकान पर, साथ में सुट्टा मारेंगे सारी थकान दूर हो जायेगी।" अमन ने कहा।

“अरे नहीं यार...इतनी रात में कहाँ बाहर निकलूंगा....फिर घर वालों के सैंकडों सवाल जवाब।" करण ने बाहर ना निकल पाने की अपनी मज़बूरी को बताते हुए कहा।

“अच्छा ये बता...हुआ क्या? तू टेंशन में क्यूँ है?" अमन ने कहा।

“क्या बताऊँ यार...पापा निकाह की तारीख आगे बढ़ाने को राज़ी नहीं हैं, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि अब मैं क्या करूँ?" करण ने निराशा में कहा।

“वो अनजान नंबर वाला आदमी अभी भी तुम्हें फोन कर रहा है”? अमन ने कहा।

“हाँ यार।" करण ने कहा।

“ओह! अभी क्या बोल रहा?" अमन ने कहा।

“वही...निकाह मत करो वरना....।" करण ने कहा।

“मुझे यह विशुद्ध धमकी लग रही...तुम तो अपनी जिंदगी को ले कर लोयल हो...देने दो उसे धमकी...क्या फर्क पड़ता है?" अमन ने करण को समझाते हुए कहा।

“ये धमकी नहीं है यार...उसे उस रात के बारे में सब कुछ पता है. मैं बहुत तगड़े भंवर में फस गया हूँ...यदि उसकी बात नहीं मान कर निकाह कर लिया तो उसके एक्शन का डर और यदि उसकी बात मान कर निकाह नहीं किया तो पापा, अशरफ अंकल और आमिरा के एक्शन का डर। मैं बहुत बुरा फंस गया हूँ यार, मुझे इस भंवर से निकाल दो प्लीज़।" करण ने अपनी तकलीफ को बताते हुए कहा।

“भाई... देख, यदि तू निकाह नहीं किया तब अंकल और आमिरा कुछ दिनों के लिए नाराज़ हो सकती है, लेकिन यदि तूने निकाह कर लिया और तुम्हारे निकाह करने से उसने अपनी धमकी को सही साबित कर दिया तो तू जिंदगी भर के लिए अपने घर वालों, ससुराल वालों और आमिरा के नजर से गिर जायेगा। इसलिए मेरी मान तू निकाह ना कर।" अमन ने कहा।

“भाई...मैं आमिरा के बिना नहीं रह सकता, वो पत्नी है मेरी। उस आदमी ने शर्त रखा है कि मुझे आमिरा को तलाक देना पड़ेगा। मैं आमिरा के बिना जी नहीं पाउँगा। मुझे कुछ नहीं सूझ रहा, मुझे इस भंवर से निकलने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा, मैं खुद को खत्म कर लूँगा और दोनों परिवार की इज्जत बचा लूँगा।" करण ने कहा।

“पागल मत बन, खुद को खत्म करना कोई समस्या का समाधान नहीं है, ऐसे में समस्या और बढ़ेगी और यदि खत्म होना ही है किसी को तो उस आदमी को खत्म होना होगा।" अमन ने करण को दिलासा देते हुए कहा।

“भाई ये तू क्या बोल रहा है?" करण ने हैरान होते हुए कहा।

“ठीक ही तो बोल रहा हूँ...ऐसे लोगों का समाज में क्या काम...और मेरे दोस्त मरना ही होगा तो वो मरेगा...तुम क्यूँ मरोगे?" अमन ने कहा।

“देख भाई...मरना-मारना को छोड़....तू उसे डरा, उसे धमकी दे ...उससे बोल कि मुझे परेशान करना बंद करे।" करण ने कहा।

“हाँ, लेकिन कुछ पता चला कि वो है कौन?" अमन ने कहा।

“नहीं...अब तक तो नहीं।" करण ने कहा।

“तब कैसे होगा...पहले ये पता करना होगा न कि वो है कौन?" अमन ने कहा।

“निकाह में सिर्फ 2 दिन बचे हैं जो करना है जल्दी कर।" करण ने कहा।

“क्या हमलोग पुलिस की मदद ले सकते हैं?" अमन ने कहा।

“नहीं...पुलिस नहीं, मैं और बुरे तरीके से फंस जाऊंगा।" करण ने कहा।

“मैंने उसकी कॉल को रिकॉर्ड किया है...तू सुन यदि आवाज़ से तेरी कुछ समझ आये तो...मुझे तो थोड़ी जानी-पहचानी लगती है उसकी आवाज़,

लेकिन मुझे ध्यान नहीं आ रहा कि ये आवाज़ मैंने कहाँ सुनी है?" करण ने कहा।

“ठीक है भेजो।" अमन ने कहा।

“व्हाट्स एप कर दिया है तुझे।" करण ने कहा।

“ठीक है, मैं सुन के करता हूँ तुझसे बात।" अमन ने कहा।

अमन ने करण द्वारा भेजे गए ऑडियो रिकॉर्डिंग को बड़े ध्यान से सुना। इस रिकॉर्डिंग को सुनते-सुनते अमन की बहुत-सी चीजें स्पष्ट होती जा रही थीं। और आखिर में वो इस बात की पुष्टि कर चुका था कि इस धमकी भरे फोन कॉल के पीछे किसका हाथ है? अमन ने तुरंत करण को फोन मिलाया।

“तुम्हें इस प्रकार के फोन कॉल्स कब से आ रहे हैं?" अमन ने उत्सुकतावश पूछा।

“यही कोई 2-4 दिनों से....निकाह की तारीख तय होने के 1 दिन पहले से....उसके पास उस रात की तस्वीरें भी हैं।" करण ने कहा।

“तस्वीरें तो होंगी ही, ये उस रात उसी जगह पर था जहाँ वो घटना हुई थी।" अमन ने कहा।

“लेकिन, ये है कौन?" करण ने उत्सुकता से पूछा।

“ये वही है....आमिरा का भाई उर्फ आशिक उर्फ मारूफ।" अमन ने कहा।

मारूफ नाम ही करण को चौंकाने के लिए काफी था.....ये नाम सुनने के बाद करण की नींव हिल गई। इस इंसान ने आमिरा को करण से अलग करने के कई हथकंडे अपनाए थे, लेकिन वो आमिरा तथा करण का प्यार व एक-दूसरे के प्रति विश्वास ही था कि उसके सारे हथकंडे धराशाई हो गए।

लेकिन, इस बार करण भयभीत है उस रात घटी घटना से जिसके कुछ प्रमाण मारूफ के हाथ लग गए हैं।

“क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि ये मारूफ ही है।" करण ने कहा।

“शत प्रतिशत।" अमन ने पूरे कांफिडेंस में जवाब दिया।

“तुम इतने विश्वास के साथ कैसे कह सकते हो?" करण ने कहा।

“तुमने जितनी भी रेकॉर्डिंग्स भेजी है, सभी रेकॉर्डिंग्स में उसने बार-बार कहा है कि ‘इश्क और जंग में सब कुछ जायज़ है’ आमिरा से ये पागलपन वाला इश्क मारूफ के अलावा कोई और नहीं कर सकता, और उस रात मैंने उस घटनास्थल के पास भी इसे देखा था।" अमन ने कहा।

“प्यार तो प्रीतम को भी था आमिरा से....तो फिर वो क्यूँ नहीं हो सकता....मारूफ ही क्यूँ हो सकता है?" करण ने कहा।

“प्रीतम हर कथन में इंशाल्लाह नहीं बोल सकता...तू रिकॉर्डिंग को ध्यान से सुन...हर एक कथन में तुम्हें इंशाल्लाह सुनाई देगा। और सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य बात ये है कि ‘ये मारूफ की आवाज़ है मैं इस आवाज़ को अच्छे से पहचानता हूँ’...तेरे बारात में उसके द्वारा दी गई धमकियों की आवाज़ आज भी मेरे जेहन में ताज़ा है। ये मारूफ ही है, तू आमिरा से पूछ कि मारूफ कहाँ है...अभी ही उसका हिसाब-किताब कर लिया जायेगा।" अमन ने कहा।

“ओके।" करण ने कहा।

मारूफ के लोकेशन का पता लगाने के लिए करण ने आमिरा को फोन किया। निकाह के पहले करण से बात नहीं करने का प्रण लेने वाली आमिरा ने करण के फोन का कोई जवाब नहीं दिया। हताश करण ने पुनः अमन को फोन मिलाया।

“भाई...आमिरा फोन नही उठा रही।" करण ने हताशा में कहा।

“क्यूँ...फिर से ट्राय कर।" अमन ने कहा।

“मैंने 25 कॉल किया उसे।" करण ने निराशा में कहा।

“तो अभी कैसे पता लगाया जाए उसका?" अमन ने कहा।

“मेरी समझ से परे की बात है...देख तेरा भाई मुसीबत में है...तू ही कुछ कर यार।" करण ने लगभग रोते हुए कहा।

“तू परेशान मत हो...मैं कोशिश कर रहा हूँ...कहीं से भी ढूँढ निकालूँगा उसे।" अमन ने करण को दिलासा देते हुए कहा।

“ठीक है भाई...जो करेगा अब तू ही करेगा।" करण ने कहा।

“ओके...अभी फोन रख, मुझे काम पर लगने दे।" अमन ने कहा।

हम जिस भी क्षेत्र में काम करते हैं, हमें उस क्षेत्र के व्यक्तियों के व्यक्तित्व के बारे में ज्यादा पता होता है। उदाहरण के लिए- एक शिक्षक को अपने साथी शिक्षक के बारे में ज्यादा पता होता है, एक आई.ए.एस. ऑफिसर को अपने साथी आई.ए.एस. के बारे में, एक पुलिस ऑफिसर को अपने साथी पुलिस ऑफिसर के बारे में तथा एक बदमाश को एक बदमाश के बारे में ज्यादा बेहतर पता होता है। यहाँ पर बदमाश का तात्पर्य इस बात से है कि वैसे लोग जो आधिकारिक रूप से समाज व कानून की सूची में खुद को बदमाश के रूप में शामिल कर चुके हैं। अमन ने ऐसे ही किसी एक जानने वाले को मारूफ के लोकेशन के लिए फोन मिलाया।

“हाँ, अमन भाई बोलो।" फोन पर उपस्थित सामने वाले व्यक्ति ने अमन से कहा।

“एक इन्फोर्मेशन चाहिए थी।" अमन ने कहा।

“किसी की सुपारी ले रहे हो क्या भाई?" सामने वाले व्यक्ति ने मजाकिया लहजे में कहा।

“हाँ...तुझे दे दूँ सुपारी...लेगा?" अमन ने कहा।

“क्या बात करते हो भाई...किसकी?" सामने वाले व्यक्ति ने कहा।

“अरे...किसी की नहीं...सिर्फ ये बताओ..मारूफ इस वक्त कहाँ मिलेगा?" अमन ने कहा।

“मारूफ...कौन......अशरफ का भतीजा?" सामने वाले व्यक्ति ने दुविधा में पूछा।

“हाँ..वही।" अमन ने कहा।

“अभी टाइम क्या हो रहा है....12 बजने को है.... वो इस वक्त बेलाल के ढाबे पर होगा।" सामने वाले व्यक्ति ने कलाई की घड़ी की ओर देखते हुए कहा।

“ठीक है, ओके।" अमन ने कहा।

“लेकिन, बात क्या है?" सामने वाले व्यक्ति ने कहा।

“कुछ विशेष नही...बस उससे मिलने की इच्छा है।" अमन ने कहा।

“इस वक्त।" सामने वाले व्यक्ति ने हैरान होते हुए कहा।

“हाँ, इस वक्त।" अमन ने कहा।

“लगता है तू भी अब हमलोगों के जैसा ही आदमी हो गया है।" सामने वाले व्यक्ति ने चुटकी लेते हुए कहा।

“चल अब रखता हूँ...और हाँ....मारूफ को बता नहीं दियो कि अमन उसका पता पूछ रहा था।" अमन ने कहा।

“अरे नहीं भाई।" सामने वाले व्यक्ति ने कहा।

‘वो दोस्त ही क्या...जो जरुरत के वक्त अपने दोस्त के काम ना आये’। इस लाइन को मिसाल मान कर अमन निकल पड़ा मारूफ की तलाश में बेलाल के ढाबे की ओर, इस बात से बिलकुल बेफिक्र होकर कि रात के 12 बज रहे हैं और वो अकेला है। दोस्ती क्या न करवाए!

बेलाल का ढाबा:

ढाबे पर कोई भीड़ नहीं है। छोटे शहरों में रात के 12 बजे किसी ढाबे पर विरले ही भीड़ नजर आएगी। कभी-कभी देर रात आती बस वहाँ पर रूकती है तो कुछ यात्री जलपान के लिए ढाबे में आते हैं। इस ढाबे की बिरयानी पूरे शहर में मशहूर है, दिन के समय लंबी-लंबी लाइनें लगती हैं बिरयानी के लिए। इस ढाबे की खासियत है..जो एक बार यहाँ की बिरयानी खाता है वो यहीं का हो कर रह जाता है। मारूफ की तलाश में अमन इस ढाबे पर पहुँचता है, लेकिन उसे मारूफ कहीं नहीं दिख रहा है।

“मारूफ तो कहीं नजर नहीं आ रहा, शायद ढाबे वाले को पता हो लेकिन सीधे-सीधे मारूफ के बारे में पूछना सही नहीं होगा। ऐसा करता हूँ पहले बिरयानी लगवाता हूँ फिर बातों में उलझा कर जानने की कोशिश करूँगा।" अमन ने सोचा।

“एक प्लेट बिरयानी लगाना बेलाल भाई।" अमन ने कहा।

“बिरयानी तो खत्म हो गई भाईजान।" बिरयानी के हंडे का ढक्कन बंद करते हुए बेलाल ने कहा।

“आज मेरी किस्मत सही नहीं है। आज आपकी दुकान का बिरयानी खाने का दिल हुआ और आपकी बिरयानी ही खत्म हो गई।" अमन ने चेहरे पर निराशाभाव लाते हुए कहा।

“आपने देर कर दिया भाईजान, अभी-अभी मारूफ और उसके दोस्त बिरयानी खा कर गए हैं....थोड़ा बच गया था तो वो भी मैंने उन्हें ही दे दिया। दुकान बढ़ाने का वक्त हो गया है न।" बेलाल ने कहा।

अमन को इस बात का अंदाजा नहीं था कि बेलाल से इतनी जल्दी और बिना पूछे मारूफ के बारे में जानकारी मिल पायेगा। लेकिन इतनी सी जानकारी पर्याप्त नहीं थी।

“मारूफ कौन...वो अशरफ साहब का भतीजा क्या?" अमन ने अनजान बनते हुए पूछा।

“हाँ वही...हमारे परमानेंट ग्राहक हैं।" बेलाल ने मुस्कुराते हुए कहा।

“मैंने भी बहुत नाम सुना है आपके ढाबे का।" अमन ने कहा।

“ठीक है भाईजान दुकान बढ़ाने का समय हो गया है, अल्लाह हाफिज।" बेलाल ने ढाबे का शटर गिराते हुए कहा।

“अल्लाह हाफिज।" अमन ने कहा।

“स...सुनिए भाईजान।" अमन ने घर की ओर जाते बेलाल को पीछे से टोका।

“जी भाईजान कहिये।" बेलाल ने कहा।

“मारूफ का फोन नंबर होगा क्या आपके पास? बहुत दिनों से मुलाकात नहीं हुई है उससे।" अमन ने कहा।

“जी, लिखिए।" बेलाल ने अपने फोन से मारूफ का नंबर अमन को लिखाते हुए कहा।

“जी शुक्रिया भाईजान।" अमन ने कहा।

“आप मारूफ को कब से जानते हैं?" बेलाल ने कहा।

“बचपन में हम साथ ही पढ़ते थे, फिर मैं बाहर चला गया था तो संपर्क टूट गया था”. अमन ने कहा।

“अच्छा आप बचपन के साथी हैं।" बेलाल ने कहा।

“जी।" अमन ने हाँ में सर हिलाया।

“ठीक है..आप बात कर लीजिए उनसे...पिछले कुछ दिनों से कुछ परेशान चल रहे हैं वो। " बेलाल ने कहा।

“परेशान...क्यूँ?" अमन ने कहा।

“शायद उनकी प्रेमिका का विवाह हो रहा है, इसलिए।" बेलाल ने कहा।

“कौन है उसकी प्रेमिका?" अमन ने कहा।

“इतना तो मैं नहीं जानता...लेकिन उनके दोस्तों के बीच जो उनकी बातें होती हैं उन बातों को सुन कर तो यही लगता है।" बेलाल ने कहा।

“ठीक है मैं उससे कल ही मिलता हूँ।" अमन ने कहा।

“ठीक है भाईजान...अल्लाह हाफिज।" बेलाल ने कहा।

“अल्लाह हाफिज।" अमन ने बेलाल के जवाब में कहा।

अमन की मारूफ से मुलाकात की अभिलाषा अभी भी अधूरी ही थी। लेकिन वो मारूफ से आज ही मिलना चाहता है, वो कोई रिस्क नहीं ले सकता। 2 दिनों के बाद करण का निकाह है यदि उसने आज मारूफ का इलाज़ नहीं किया तो करण की जिंदगी तबाह हो जायेगी। वो अपने दोस्त की

जिंदगी को यूँ तबाह नहीं होने देगा वो लड़ेगा समाज के हर उस दानव से जो उसके दोस्त की जिंदगी तबाह करना चाहते हैं।

अमन ने अपने पैंट की जेब से एक सिम कार्ड निकाला और उसे अपने फोन में लगाया। दरअसल अमन इस प्रकार के कई फर्जी सिम कार्ड रखता है और मसखरी के लिए अपने दोस्तों को लड़की की आवाज़ में फोन किया करता है। फ़िलहाल अमन ने मारूफ को लड़की की आवाज़ में फोन किया।

“हेलो! मारूफ से बात हो रही है?" अमन ने लड़की की आवाज़ में कहा।

“जी हाँ...आप कौन?" मारूफ ने कहा।

“वही....जिसके नाम को आधार बना कर आप करण को धमकी दे रहे हैं।" अमन ने कहा।

“ये क्या बकवास है, मैंने किसी को कोई धमकी नहीं दिया।" मारूफ ने कहा।

“आप क्या कर रहे हो, मैं सब जानती हूँ।" अमन ने कहा।

“मैं आपको नहीं जानता और इस प्रकार के किसी भी बकवास के लिए मेरे पास वक्त नहीं है...आप फोन रख सकती हैं।" मारूफ ने कहा।

“सोच लीजिए...आपके फायदे की बात है...दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है।" अमन ने कहा।

“मेरा कोई दुश्मन नहीं..आप किस दुश्मन की बात कर रहे हैं?" मारूफ ने हकलाते हुए कहा।

“मेरा और आपका एक ही दुश्मन है, वो है करण।" लड़की की आवाज में अमन ने कहा।

“करण से आपकी कैसी दुश्मनी?" मारूफ ने हैरानी में पूछा।

“वो आप मिलेंगे तो बताउंगी।" अमन ने कहा।

मारूफ...करण को आमिरा की नजर में गिराने का कोई मौका छोड़ना नहीं चाहता है। और ये बात स्वाभाविक भी है। दिलों में मोहब्बत के जज्बात होनी चाहिए....हो चाहे जैसे भी दुश्मन की मात होनी चाहिए।

“कहाँ और कब मिलना है?" मारूफ ने कहा।

“अभी..बेलाल के ढाबे के पास और हाँ अकेले।" अमन ने कहा।

“ठीक है..मैं आता हूँ।" मारूफ ने कहा।

चूँकि बेलाल के ढाबे से गए हुए मारूफ को अधिक वक्त नहीं हुआ था, इसलिए 10 मिनट के अंदर ही मारूफ गंतव्य तक पहुंच गया। मारूफ ने चारों ओर देखा...रात में एक ख़ामोशी थी...गहरा सन्नाटा था। बीच-बीच में कुत्तों के भौंकने की आवाज़ मारूफ के क्रूर मन को डरा भी रही थी।

“यहाँ तो कोई भी नहीं है।" मारूफ ने स्वयं से कहा।

“मैं हूँ ना।" मारूफ के पीछे से आवाज़ आई।

मारूफ ने पीछे पलट कर देखा...पिस्टल ताने अमन खड़ा है। दरअसल ये पिस्टल असली नहीं है। ये दीपावली में पटाखे जलाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पिस्टल है, लेकिन रात के अँधेरे में क्या ही पता चलता है।

“अमन तुम?" मारूफ ने हैरानी में कहा।

इससे पहले की मारूफ और कुछ समझ पाता अमन ने मारूफ के जुगुलर वेन(गर्दन के पास वाली नस) को दबा दिया और देखते-देखते मारूफ मूर्छित हो कर गिर पड़ा। 80 के दशक की फिल्मों की तरह अमन ने मारूफ को शहर से दूर ले जा कर एक पुराने टूटे-बिखरे घर में बंद कर दिया।

“हेलो! करण तुम्हारे लिए खुशखबरी है भाई।" अमन ने कहा।

“मारूफ मिल गया क्या?" करण ने कहा।

“हाँ भाई..मिल गया और मैंने उसे ठिकाने भी लगा दिया।" अमन ने कहा।

“ठिकाने लगा दिया मतलब...कहीं तुमने उसे मार तो नहीं दिया?" करण ने हैरानी में कहा।

“अरे नहीं यार...किडनैप कर लिया उसका...अब उसे तुम्हारे निकाह के बाद ही छोडूंगा।" अमन ने कहा।

“लेकिन, ये कैसे संभव हुआ?" करण ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

“आग..पानी और अमन से बच के रहने का है। आग जलाता है, पानी बुझाता है और अमन तड़पाता है। तड़पा दिया बीप(गाली) को। अमन के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।" अमन ने शेखी बघारते हुए कहा।

“थैंक यू सो मच मेरे भाई।" करण ने खुशी से झूमते हुए कहा।

“हाँ..हाँ...चल ठीक है एन्जॉय कर।" अमन ने कहा।

आज 25 जनवरी है। आमिरा और करण के निकाह वाला दिन। करण के दिमाग से फिलहाल कुछ भी अनहोनी होने का डर निकल चुका है। दोनों ही परिवारों में उत्सव व उत्साह का माहौल है। दोनों ही परिवार वाले जोर-शोर से निकाह की तैयारी में लगे हुए हैं। परिवार के सभी लोग इस दिन को स्मरणीय बना लेना चाहते हैं। ये उनदोनों परिवारों के लिए पहली अनूठी जोड़ी है जिनकी शादी और निकाह दोनों होने जा रही है। इनकी शादी के समय नाखुश अशरफ साहब आज निकाह के वक्त सबसे ज्यादा खुश शख्सियत हैं।

एक लड़की का पिता होना आसान नहीं है। लड़की का पिता होना एक बहुत ही महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण भूमिका है। उसे न केवल अपनी बेटी की भलाई और भविष्य के बारे में सोचना होता है, बल्कि समाज की चुनौतियों और नकारात्मक सोच के बावजूद उसे सशक्त और स्वतंत्र बनाने की कोशिश करनी होती है। यह यात्रा आसान नहीं होता है, लेकिन पिता का अपनी बेटी को समर्थन इस जटिल यात्रा को सुगम बना देता है। पिता-पुत्री का रिश्ता बेहद खास होता है। एक पुत्री के लिए पिता उसकी पहली ताकत, पहला रक्षक, पहला हीरो और जीवन का पहला आदर्श होता है। पिता की छांव में लड़की अपने-आप को सबसे सुरक्षित महसूस करती है। समाज में लड़की के लिए कई चुनौतियां होती है। पिता ही वह पहला व्यक्ति होता है जो अपने पुत्री में यह विश्वास जगाता है कि वह किसी से कम नहीं है। जब समाज किसी लड़की को सीमाओं में बांधना चाहता है, तब पिता का साथ उसके लिए ढाल बन जाता है। एक बेटी अपने पति में अपने पिता की छवि को देखने का प्रयास करती है तो वहीँ एक पिता अपने दामाद में एक बेटे को ढूँढने का प्रयास करता है।

अशरफ साहब ने करण में अपने बेटे की छवि को देखा है। करण के अंदर यह छवि देखने में अशरफ साहब को पूरे एक साल लग गए। करण की निष्ठा, समर्पण, अनुशासन व ईमानदारी ने अशरफ साहब को ये सोचने को विवश कर दिया कि आमिरा के लिए करण से बेहतर और कोई हमसफ़र नहीं हो सकता।

करण की बारात नाचते-गाते निकाह के लिए महाराजा पैलेस पहुंच गई है। आज दो शख्स दुल्हन की तरह सजी हुई हैं। पहली- आमिरा तथा दूसरी- महाराजा पैलेस। महाराजा पैलेस गवाह है बहुत-सी घटनाओं का, ये गवाह है करण और आमिरा की शादी में सुलगे चिंगारी का जिसे दोनों पक्षों के कुछ लोगों ने आग का रूप दे दिया था। ये गवाह है इस बात का कि मारूफ ने

इसी जगह पर करण के बर्बादी की कसमें खायी थी I ये गवाह है करण और आमिरा के शादी के पवित्र बंधन में बंधने का। ये गवाह है क़ाज़ी साहब के उस नीतिगत निर्णय का जिसने अशरफ साहब के उलझे मन को सुलझाने का काम किया था। आज फिर से ये पैलेस एक बड़े घटना की गवाही बनने जा रहा है।

बहुत संघर्ष किया है करण और आमिरा ने खुद को इस मुकाम तक पहुँचाने में। मोहब्बत सच्ची ना हो तो ऐसे कॉम्प्लीकेटेड रिश्ते कब का दम तोड़ देते हैं। मध्यम वर्गीय समाज में अंतरधार्मिक विवाह असंभव सा लगता है। अंतरधार्मिक विवाह में केवल दो व्यक्तियों का नहीं, बल्कि दो धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक परम्पराओं का मेल होता है- और यही चीजें टकराव का कारण बनती है। हालाँकि अंतरधर्मीय विवाह करने का निर्णय व्यक्तिगत होता है, लेकिन इसके कुछ सकारात्मक पहलू भी होते हैं, जो इसे एक समझदारी भरा अनुभव बना सकते हैं।

जब दो लोग अलग-अलग धर्मों से होते हुए भी एक-दूसरे को समझते हैं, अपनाते हैं और साथ जीवन बिताना चाहते हैं, तो यह इस बात का प्रमाण होता है कि उनका रिश्ता गहरे भावनात्मक और मानसिक जुड़ाव पर आधारित है, न कि केवल पारंपरिक मान्यताओं पर। ऐसे विवाह सामाजिक स्तर पर धर्मों के बीच समझ, सहिष्णुता और सौहार्द्र को बढ़ाते हैं। जो समाज में एक सकारात्मक बदलाव लाने में मदद कर सकता है. अंतरधर्मीय विवाह में एक जो महत्वपूर्ण चुनौती आती है वो है अंतरधर्मीय विवाह से जन्में बच्चों की परवरिश में धर्म का चयन। बच्चों को किस धर्म में पाला जायेगा, क्या उन्हें दोनों धर्मों के बारे में सिखाया जायेगा या किसी एक का चुनाव करना होगा? ये एक बेहद संवेदनशील मुद्दा होता है, जिसमे मतभेद हो सकते हैं। मतभेद से इतर बात की जाये तो ऐसे बच्चों के पास विभिन्न संस्कृतियों को समझने का मौका ज्यादा होता है क्योंकि ये बचपन से ही विभिन्न

संस्कृतियों के बीच बड़े होते हैं। अंतरधर्मीय विवाह कोई गलत या सही नहीं है- यह सिर्फ एक चुनौतीपूर्ण रास्ता है। लेकिन अगर दोनों साथी परिपक्व, समझदार और एक-दूसरे का सम्मान करने वाले हों तो यह एक बहुत ही सुन्दर और प्रेरणादायक रिश्ता हो सकता है।

महाराजा पैलेस की आज की खूबसूरती किसी परी की खूबसूरती को टक्कर दे रही है। मंच, गेट और रास्ते को पूरी तरह फूलों सजाया गया है. सॉफ्ट लाईटिंग का उपयोग कर माहौल को सुकूनदायक बनाया गया है। मेहमानों के फोटो के लिए एक फोटो बूथ बनाया गया है। स्टेज को आकर्षक पर्दों व झूमर से सजाया गया है। एक बड़े स्क्रीन की व्यवस्था की गई है जिस पर निकाह स्थल का लाइव कवेरज हो रहा है। हल्की-हल्की सुहावनी आवाज़ वाली बैकग्राउंड म्यूजिक किसी भी वर्ग के आदमी को झूमने के लिए मजबूर कर रही है।

दुनिया के सामने अपनी मोहब्बत को साबित कर चुके करण और आमिरा के निकाह की प्रक्रिया एक कमरे में चंद करीबी लोगों की उपस्थिति में खुत्बा-ए-निकाह के साथ शुरू होती है। खुत्बा-ए-निकाह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे इमाम, क़ाज़ी या कोई योग्य मौलाना कुरान की आयतें और हदीसें पढते हैं।

ये निकाह शहर की बहुप्रतीक्षित निकाह है, जिसका इंतजार शहर के छोटे लोगों से लेकर बड़े रसूखदारों को भी था। अशरफ साहब व राकेश साहब ने भी दिल खोल कर शहर के लगभग सभी भद्रजनों व गणमान्यों को इस निकाह में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया है।

खुत्बा-ए-निकाह के बाद ईजाब (कबूल) की प्रक्रिया शुरू की जाती है। अचानक पूरे पैलेस की बिजली कुछ समय के लिए गुल हो जाती है। बिजली आते ही ईजाब की प्रक्रिया पुनः शुरू की जाती है और सभी लोगों की नजरें

उस लाइव फुटेज दिखाने वाले स्क्रीन पर टिक जाती हैं, तथा पूरी महफ़िल हाय अल्लाह तथा हे भगवान की आवाज़ से गूँज उठती है।

अशरफ साहब गुस्से में बौखलाते हुए क़ाज़ी साहब के पास आते हैं।

“ये निकाह नहीं हो सकता क़ाज़ी साहब, रोक दीजिए इस निकाह को।" अशरफ साहब ने क़ाज़ी से कहा।

अशरफ साहब का गुस्से से यूँ बिलबिलाना और निकाह को रोकने की बात करना करण को यह बात समझा गई थी कि जरुर कुछ बड़ा गड़बड़ हुआ है और उसका ध्यान वहीँ आ कर टिक गया जिस वजह से वो निकाह करने से भाग रहा था।

करण ने अमन की ओर देखा...अमन की आँखों में आंसू के साथ-साथ विवशता स्पष्ट नजर आ रही थी...अमन करण से नजरें चुरा रहा था। अमन का इस प्रकार से नजरें चुराना करण को बता गया कि बाहर सभी को उस रात के राज़ के बारे में पता चल चुका है।

“लेकिन अशरफ साहब निकाह को ऐसे बीच में क्यूँ रोका जा रहा है...और बाहर हाय अल्लाह का ये शोर कैसा?" क़ाज़ी ने कहा।

“हाँ अब्बू...क्या हुआ है?" आमिरा ने हैरान होते हुए कहा।

“खुद ही बाहर चल कर देख लो आप दोनों।" अशरफ साहब ने कहा।

पूरी महफ़िल पैलेस में लगे स्क्रीन को निहार रही है तथा आमिरा और करण के परिवार वाले शर्मिंदा हो रहे हैं। स्क्रीन पर दिख रहे दृश्य को देख कर आमिरा के पैरों तले जमीन खिसक जाती है। महफिल में उपस्थित एक-एक व्यक्ति का मुंह खुला-का-खुला रह गया। इस रात महफिल ने देखे एक गहन आलिंगन (हग), करण का एक अनजान लड़की के साथ आलिंगन। बदन पर कोई वस्त्र नहीं...एक-ही चादर में लिपटे दोनों लोगों का आलिंगन एक-दूसरे

की रूह को छुई जा रही थी। दोनों के चेहरे पर एक अद्भुत संतुष्टि ये बयां कर रही थी जैसे मानो दोनों ने किसी जंग को जीत लिया हो।

आग जलाने के लिए एक चिंगारी काफी होती है। पति-पत्नी व प्रेमी-प्रेमिका जैसे रिश्ते में दरार पैदा करने के लिए किसी गैर के साथ आलिंगन सिर्फ एक चिंगारी नहीं अपितु आग का गोला है। पति-पत्नी का रिश्ता बहुत खास और गहरा होता है। यह रिश्ता प्यार, विश्वास, समझ और सहयोग पर आधारित होता है। जब दोनों एक-दूसरे को सम्मान देते हैं, साथ निभाते हैं और एक-दूसरे की भावनाओं की कद्र करते हैं, तो यह रिश्ता और भी मजबूत हो जाता है। इस रिश्ते को बनाये रखने के लिए जरूरी है- पारस्परिक सम्मान, संवाद, समझदारी तथा धैर्य और जो सबसे ज्यादा जरुरी है वो है भरोसा। जब भरोसा टूटता है तो ऐसा लगता है जैसे दिल का कोई सबसे कीमती हिस्सा चुपचाप बिखर गया हो। यह केवल रिश्ते का टूटना नहीं होता, बल्कि आत्मा पर एक गहरा घाव होता है। ये पूछता है कुछ सवाल- मेरी क्या गलती थी? या, उसने ऐसा क्यूँ किया? भरोसा कायम होने में वक्त मांगता है, और टूटने में एक लम्हा भी नहीं लेता। अरसों लग जाते हैं एक भरोसा कायम करने में, पर एक झूठ, एक फरेब- सब कुछ बहा ले जाता है और दे जाता है दो स्थिति- एक गुस्सा और दूसरी ख़ामोशी।

‘‘आप ठीक कहते हैं अब्बू...ये निकाह अब नहीं हो सकता।" आमिरा ने अवचेतन रूप में कहा।

‘‘मैं आप तमाम लोगों से माफ़ी मांगता हूँ...ये फंक्शन यहीं पर खत्म होता है।" अशरफ साहब ने महफिल में उपस्थित सभी व्यक्तियों से कहा।

‘‘शबनम ...घर चलिए, अदनान घर चलो।"अशरफ साहब ने अपनी बीवी और बेटे को घर जाने का आदेश देते हुए कहा।

"माफ कीजियेगा राकेश साहब, मुझे आपके बेटे को पहचानने में भूल हो गई।" अशरफ साहब ने निराशा में सर झुकाए राकेश साहब से कहा।

शर्म से पानी-पानी हुए पड़े राकेश साहब एक पुतला बन कर रह गए थे...उन्हें लग रहा था उनकी सारी इज्जत चली गई। वो कोस रहे थे खुद को कि उन्होंने करण जैसे कुपुत्र को क्यूँ पैदा किया?

"जल्दी चलिए अब्बू..इस जगह पर मुझे घुटन हो रही है।" आमिरा ने रोते हुए कहा।

"आमिरा मेरी बात सुनो...तुम जो देख रही हो वो सच नहीं है....पापा अंकल आपलोग जो देख रहे हैं वो सच नहीं है...अमन बोल न तू तो जानता है न कि ये जो कुछ भी दिख रहा है ये सच नहीं है।" करण ने रोते हुए कहा।

"हाँ..आमिरा ये सच नहीं है, सच कुछ और है।" अमन ने कहा

"अरे चुप करो करण के दलाल...तुम दलाली कर सकते हो इसकी, मैं नहीं..चलिए पापा।" आमिरा ने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा।

"आमिरा...आमिरा मेरी बात सुनो, मुझे समझने का प्रयास करो...मैं हाथ जोड़ता हूँ तुम्हारे आगे...जो तुम देख रही हो वो सच नहीं है, प्लीज़ मुझे समझने का प्रयास करो।" करण ने विनती करते हुए कहा।

भारतीय औरत दुनिया का सारा दर्द झेल सकती है, लेकिन वो इस बात को बिलकुल बर्दाश्त नहीं कर सकती कि उसका पति किसी गैर औरत की बाँहों में हो।

"अब मुझे कुछ नहीं समझना है करण...समझ मुझे उस दिन ही जाना चाहिए था जिस दिन तुम निकाह के लिए मना कर रहे थे...मुझे समझ जाना

चाहिए था कि तुम एक वासनालोलुप व्यक्ति हो जो पत्नी के होते हुए गैर लड़कियों के जिस्म का भूखा है। और प्रत्यक्ष को ना तो किसी प्रमाण की आवश्यकता पड़ती है और ना ही किसी दलील की। आज से हमारे और तुम्हारे रास्ते अलग हैं।" आमिरा ने कहा।

"आमिरा मैं बुरा नहीं हूँ...प्लीज़ मेरा यकीन करो।" करण ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

"निकाह तो हमारा हो नहीं पाया...शादी अवश्य हुई थी...अब्बू का मुझे तुम्हारे घर नहीं भेजने का फैसला बिलकुल सही था। मुझे तलाक चाहिए करण, कल तलाक के पेपर तुम्हारे घर भेज दूंगी।" आमिरा ने कहा।

"आमिरा...प्लीज़ मुझे माफ कर दो...तुम मुझे गलत समझ रही हो। प्लीज़ मुझसे तलाक मत लो...तुम्हारे बगैर मैं अपनी जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर पाता हूँ आमिरा।" करण ने कहा।

"तो मर जाओ करण....लेकिन मुझे बख्श दो..तुम्हारे लिए बहुत-सी लड़कियों की बाहें खुली हुई है। किसी एक की बाहों में खुद को सेट कर लो।" आमिरा ने कहा।

इतना कहने के बाद आमिरा व उसके परिवार वाले पैलेस से अपने घर की ओर चले गए।

"चलो उषा और स्वाति...हमारे लिए भी अब कुछ नहीं है यहाँ।" राकेश साहब ने नम आँखों से कहा।

"पापा...आप मुझे समझो न.....जो दिख रहा है वो सच नहीं है...वो झूठ है...वो साज़िश है।" करण ने राकेश साहब के आगे हाथ जोड़ते हुए कहा।

“गलती हुई मुझसे...जिस दिन तुम पैदा हुए मैंने मिठाई बाँट दी...मुझे उस दिन तुम्हारा गला घोंट देना था।" राकेश साहब ने गुस्से में कहा।

“पापा मैं गलत नहीं हूँ...माँ मैं गलत नहीं हूँ....बहन मैं गलत नहीं हूँ।" करण ने रोते हुए कहा।

“गलत तुम नहीं हो...गलत हमारे संस्कार हो गए, हमारा तुम्हें लेकर जो भरोसा था वो गलत हो गया...तुम कहीं भी गलत नहीं हो।" उषा ने कहा।

“उषा इससे कह दो...कि इसका हमारे घर में अब कोई स्थान नहीं है और यदि ये उस घर में कभी आया तो मैं उस दिन से उस घर में नहीं रहूँगा।" राकेश साहब ने कहा।

“सुन लिया होगा आपने....भैया आपने अच्छा नहीं किया...आपने तो पूरे खानदान की इज्जत ही नीलाम करवा दी।" स्वाति ने करण से मुंह चिढ़ाते हुए कहा।

जब इंसान सच्चाई के लिए लड़ रहा होता है, और उसके सबसे अपने- उसकी पत्नी और माता-पिता ही उस पर यकीन ना करें, तो वो दर्द लफ़्ज़ों से बहुत आगे चला जाता है। जब इंसान सच्चा होता है, और वो अपनी बेगुनाही साबित करने की कोशिश करता है, फिर भी लोग उसकी बात को ना समझें तो वो तकलीफ अंदर तक चुभती है। ऐसा लगता जैसे कोई आपकी आत्मा को ही झुठला रहा हो।

अमन को छोड़कर इस निकाह में शामिल प्रत्येक व्यक्ति करण को कोसते हुए अपने-अपने घर की ओर जा रहा था और देखते-ही-देखते चंद मिनटों में पूरा पैलेस खाली हो गया। अब वहाँ जो बच गए थे वो थे- करण, अमन, होटल के स्टाफ्स और कभी नहीं भरने वाले जख्म। वो जख्म जो पैलेस ने करण को दिए हैं।

“करण चल..तू मेरे साथ चल।" अमन ने बुत बने हुए करण से कहा।

करण ने ना में सर हिलाया और अमन को इशारे में ही उसे अकेला छोड़ देने को कहा।

6. पीड़ा

रिश्ते जीवन की सबसे सुन्दर और संवेदनशील डोर होते हैं। ये डोर जब मजबूत होती है, तो जीवन को एक नई दिशा देती है, लेकिन जब यह टूटती है, तो इंसान को अंदर से तोड़ देती है। ऐसे व्यक्ति जो रिश्तों में हार जाते हैं, उनकी हार केवल किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होती, बल्कि वह अपने विश्वास, उम्मीद और कभी-कभी खुद से भी हार जाते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने सबसे करीबी रिश्ते में हार जाता है, तो वह न केवल उस रिश्ते को खोता है, बल्कि अपनी भावनात्मक स्थिरता भी गँवा देता है। एक टूटे हुए रिश्ते का दर्द अक्सर शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उस व्यक्ति का हर किसी से विश्वास उठने लगता है, और उसे लगता है कि वह प्यार और अपनापन पाने के काबिल नहीं रहा। समाज भी अक्सर ऐसे व्यक्ति को समझाने के बजाय सवाल करता है- “क्यों टूटा रिश्ता”?, “क्या अब फिर से किसी से जुड़ पाओगे?” “जरुर तुम्हारी गलती रही होगी..तभी तो सब लोग तुमसे दूर हो गए”। ऐसे प्रश्न व ताने उस व्यक्ति के घावों पर नमक छिड़कने का काम करते हैं। समाज की असंवेदनशीलता उसे और भी अकेला कर देती है।

रिश्तों से हारने वाला व्यक्ति कोई कमजोर इंसान नहीं होता, बल्कि वह सबसे अधिक संवेदनशील और सच्चा होता है। वह जिसने पूरे दिल से किसी को अपनाया, और जब वही रिश्ता टूट गया, तो वह भीतर तक बिखर गया। ऐसे व्यक्तियों को न तो दया की जरूरत है, न ही तिरस्कार की- उन्हें चाहिए बस थोड़ा समझना, थोड़ी सहानुभूति और ढेर सारा आत्मबल।

रिश्तों से हारकर जब आप लंबी दूरी पर चले जाते हो, तो सिर्फ भौगोलिक दूरी नहीं बनती। उस दूरी में चुप्पियाँ बस जाती हैं, आँखों में सवाल रह जाते हैं, और दिल में एक अधूरी सी पीड़ा घर कर जाती है। यह दूरी कोई गाड़ी, हवाई जहाज़ या ट्रेन से तय नहीं होती- यह दूरी दिल-से-दिल तक की होती है, जो सबसे ज्यादा तकलीफ देती है।

लोग कहते हैं कि समय सब कुछ ठीक कर देता है। मगर कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं जो वक्त के साथ और भी धुंधले हो जाते हैं। उनमें ना शिकायत बचती है, ना कोई उम्मीद। बस एक ख़ामोशी होती है जो हर अनकही बात को खुद में समेटे रहती है। कभी-कभी लम्बी दूरी हमें सोचने का मौका देती है- अपने फैसलों पर, अपने जज्बातों पर, और उन रिश्तों पर जिनके लिए हमने खुद को खो दिया। कुछ लोग उस दूरी से लौट आते हैं- समझदारी के साथ, माफ़ी के साथ और दुबारा कोशिश के साथ। जबकि कुछ रिश्ते वहीं, उसी दूरी पर हमेशा के लिए ठहर जाते हैं।

अपनों से हारने के बाद करण के लिए सभी के दरवाज़े बंद हो गए। शांति व सुकून करण की जिंदगी से रूठ गई। एक-एक पल करण की जिंदगी पर भारी पड़ने लगा। करण अपनी मानसिक संतुलन को धीरे-धीरे खो रहा था।

“करण...करण....उठो. तुम यहाँ पर क्यूँ सो रहे हो?" एक अनजान महिला ने सड़क के किनारे लगे विशाल बरगद की छांव में सोये करण से कहा।

करण के कानों के लिए ये आवाज़ नई नहीं थी, करण ने इस आवाज़ को पहले भी सुन रखा था। ये आवाज़ सुन कर करण चौंक गया....यहाँ उसके घर से सैंकडों किलोमीटर दूर उसे उसके नाम से किसने आवाज़ दी?

“क..कौन?" करण ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा।

“अरे...मैं प्रगति...मुझे भूल गए तुम।" अनजान लड़की ने अपना परिचय देते हुए कहा।

“कौन प्रगति...क्या हमलोग पहले मिल चुके हैं?" करण ने कहा।

“तुम मुझे नहीं जानते....हमलोग पिछले साल ही तो मिले थे पटना में।" प्रगति ने हैरानी में कहा।

“मुझसे क्या चाहिए?" करण ने कहा।

“मुझे तुमसे क्या चाहिए होगा...मेरा तो इस दुनिया में होना ही तुम्हारी वजह से है....अच्छा वो सब छोड़ो ये बताओ दिल्ली (रोहिणी) कब आये, और यहाँ खुले में क्यूँ सो रहे हो तुम?" प्रगति ने कहा।

“मैं दिल्ली में हूँ?" करण ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।

“क्यूँ...तुम्हें पता नहीं की तुम कहाँ हो....तुम्हारी तबियत तो ठीक है?" प्रगति ने हैरानी में पूछा।

“सब ठीक है।" करण ने इग्नोर करने का प्रयास करते हुए कहा।

“तो तुमने अपनी हालत ऐसी क्यूँ बना रखी है...ये फटे कपड़े, बिखरे से गंदे से बाल, धूलों से लिपटी हुई तुम्हारी काया....ये सब क्या है करण?" प्रगति ने कहा।

“वो मैं चक्कर खा कर गिर गया था....इसलिए ऐसी हालत हो गई है।" करण ने कहा।

“मैं यहीं पर पास में ही रहती हूँ...मेरे घर चलो...वहाँ आराम कर लेना। तुम्हारी तबियत बिलकुल भी ठीक नहीं है।" प्रगति ने कंसर्न दिखाते हुए कहा।

“मैं यहीं ठीक हूँ...थोड़ी देर यहीं आराम करूँगा फिर अपने सफर पर निकल चलूँगा।" करण ने कहा।

“कैसा सफर....तुम्हें तो ये भी नहीं पता है कि तुम इस वक्त कहाँ हो, किस सफर पर निकलने की बात कर रहे हो तुम? तुम्हें आराम की जरुरत है और मैं तुम्हें इस हालत में कहीं जाने ही नहीं दूंगी।" प्रगति ने कहा।

इंसान जब दर-दर की ठोकरें खा रहा होता है, तब उसकी हालत समझना आसान नहीं होता। बाहर से देखने वाले को बस एक भटका हुआ इंसान नजर आता है, लेकिन उस इंसान के अंदर चल रहे तूफ़ान को कोई नहीं समझ पाता। वो जो कल तक अपने घर का चिराग था, आज अजनबियों की निगाहों में पहचान ढूँढ रहा है। कभी किसी की मुस्कान की वजह बनने वाला शख्स, आज खुद मुस्कुराना भी भूल गया है। ऐसी स्थिति में उस शख्स को चाहिए होता है एक मजबूत हाथ व एक सच्चा साथ।

“क्यूँ फेवीकॉल की तरह चिपक गई हो? और जब मैं तुम्हें जानता ही नहीं तो मैं तुम्हारे साथ कहीं भी क्यूँ जाऊं?" करण ने डांटते हुए कहा।

जब आप किसी को दिल से समझते हैं, तो उसके गुस्से के पीछे छुपा दर्द, थकावट व बेबसी भी समझ में आने लगती है। तब गुस्सा बुरा नहीं लगता, बल्कि उसे सँभालने का मन करता है।

“ठीक है! ठीक है! गुस्सा मत करो...मैं तुम्हें कहीं ले कर नहीं जाउंगी। पानी पियोगे? " प्रगति ने पानी का बोतल करण की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

“हूँ.. पियूँगा"। करण ने मासूमियत से कहा।

प्रगति ने करण को पानी का बोतल दिया और और पानी पीते हुए करण की मासूमियत को निहारती रही।

“लो हो गया।" पानी पीने के बाद करण ने पानी का बोतल प्रगति को वापस करते हुए कहा।

“खाओगे कुछ? " प्रगति ने पूछा।

“नहीं।" करण ने जवाब दिया।

“चलोगे घर पर?" प्रगति ने करण को घर पर ले जाने का एक और प्रयास करते हुए कहा।

“बोला न...नहीं....एक बार में नहीं समझ आता तुम्हारे।" करण ने चिल्लाते हुए कहा।

“ठीक है...गुस्सा मत करो, मैं जा रही हूँ।" प्रगति ने कहा।

घर की ओर प्रगति के बढ़ते कदम प्रगति के मन में करण की फ़िक्र को भी बढ़ाये जा रहे हैं। करण से प्रगति का जुड़ाव मन का है...दिल का है। वह कभी नहीं भूल सकती उस भयानक रात को..जिस रात करण ने प्रगति को मौत की गोद से निकाल कर एक नई जिंदगी दिया था, और वक्त की विडंबना तो देखिये वो रात जहाँ मृत्यु शय्या पर लेटी प्रगति के लिए नई जिंदगी की रात बन गई तो वहीँ दूसरी ओर उस रात प्रगति को नई जिंदगी देने वाले करण के लिए वह रात बर्बादी का बीज बोने वाली रात बन गई। प्रगति के मन मस्तिष्क पर करण का बेबस चेहरा घूम रहा है, तथा उस बेबसी भरे चेहरे ने प्रगति के मन में कुछ सवाल पैदा कर दिया। आखिर ऐसी कौन-सी घटना घटी होगी जिसने करण की मासूमियत छीन ली? क्या हुआ होगा करण के साथ जिसने इसे अकेला कर दिया? क्या हुआ होगा करण के साथ जिसने इसे मानसिक रूप से अस्थिर कर दिया? क्या मैं उसे उसकी बेबसी के साथ इस हालत में छोड़ सकती हूँ? नहीं, मैं उसे अकेला नहीं छोड़ सकती...यदि उस रात उसने मुझे अकेला छोड़ दिया होता तो आज ये सोचने

के लिए मैं जिन्दा भी नहीं होती। उसे मेरी जरुरत है, मेरे साथ की जरुरत है. मैं हर कदम पर उसका साथ दूंगी....उसकी मासूमियत, उसकी खुशियाँ सब उसे वापस दूंगी....वो फिर से मुस्कुराएगा फिर से खिलखिलायेगा।

'अपनों की फ़िक्र' हमें सोने नहीं देती, बिना उसकी फ़िक्र किये मिल जाये चैन.... ये ऐसा होने नहीं देती। नतमस्तक है पूरी दुनिया इसके आगे...ये खुद तो खो जाती है, लेकिन हमें खोने नहीं देती। जब मन का बोझ शब्दों में नहीं ढलता, तब वह रात की ख़ामोशी में करवटें बनकर बिखर जाता है। हर करवट एक अनकहा सवाल, और हर एक सवाल एक अधूरी पुकार बन जाता है। और हम पूरी रात तड़पते रहते हैं 'अपनों की फ़िक्र' में।

सूरज की पहली किरण के साथ प्रगति अपने घर से निकलती है, और पहुँचती है उसी बरगद के पेंड़ के पास जिसकी पनाह में उसे पिछली रात करण सोया हुआ मिला था। आज भी कुछ लोग उस पेंड़ की पनाह में सोये हुए हैं, लेकिन करण उसे कहीं नहीं दिख रहा। पिछली रात की करण की बेबसी ने प्रगति के हिम्मत को तोड़ दिया था और प्रगति के लिए इस फेज को महसूस कर पाना स्वाभाविक भी है। एक खुशनुमा चेहरा जब आपको बेबस व लाचार दिखने लग जाये तो आपकी हिम्मत जवाब दे जाती है। प्रगति ने खुद को कोसना शुरू किया कि- काश वो करण को कल ही अपने साथ ले जाती तो करण को यूँ भटकना नहीं पड़ता। कितनी तकलीफ में है वो और उसकी तकलीफ में उसका साथ देने के बजाय वो अपने घर चली गई। कितनी बदनसीब है वो कि किस्मत ने उसे उस इंसान की मदद करने का मौका दिया जिसने उसे नई जिंदगी दी थी, और वो इस मौके का फायदा नहीं उठा पायी। खुद को कोसती हुई प्रगति बेबसी भारी निगाहों से बरगद के उस वृक्ष को देखती है...जैसे मानो उससे पूछ रही हो कि क्या तुमने करण को कहीं देखा है? वृक्ष की ख़ामोशी मानों यह कहना चाह रही है कि- उसके पास प्रगति के सवाल का कोई जवाब नहीं है। वृक्ष से बीच-बीच में झड़ते पत्ते

मानों यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि वो खुद करण से बिछड़ने के बाद रो रहे हैं। वृक्ष के झुके डाल यह कहने का प्रयास कर रहे हैं जैसे उसका अपना कोई दूर चला गया हो उससे।

यह बूढ़ा बरगद न केवल जीवन से भरा है, बल्कि संवेदनाएं भी इसमें कूट-कूट कर भरी हुई है। यह जानता है बिछड़ने का दुःख क्योंकि यह महसूस करता है उस समय के दर्द को- जब उसका कोई हिस्सा टूटता है- चाहे एक पत्ता हो या प्रिय शाखा, तो वह चुपचाप थरथरा उठता है, जैसे भीतर कहीं कोई करुणा का दीप बुझा हो। वह कुछ नहीं कहता, ना शोर करता है, बस जड़ों के भीतर एक लंबी सिसकी सी उठती है, हवा से लिपटकर वह अपने बिछड़े हिस्से को ढूंढता है। उसकी हर हरियाली में एक स्मृति बसी है, हर झुकी डाल पर एक बीते रिश्ते की छाया है। वह जानता है- बिछड़ना सिर्फ एक घटना नहीं, एक यात्रा है.... जहाँ प्रेम, पीड़ा और स्वीकार का संगम होता है। यह वृक्ष भी हम-सा ही है- अपने खोये को अपने भीतर समेटे। मौन में भी पूर्ण, टूटकर भी खड़ा।

“किसी को ढूँढ रही हो बेटी?" बरगद के वृक्ष के समीप पानी का ठेला लगाने वाले एक बुजुर्ग ने पूछा।

“हाँ बाबा।" प्रगति ने करूणामयी स्वर में कहा।

“किसे?" बुजुर्ग ने कहा।

“यहाँ पर एक व्यक्ति सोये हुए थे....नवयुवक से थे 30-32 की उम्र होगी उनकी, मुझे उन्हीं की तलाश है।" प्रगति ने कहा।

“ये बरगद तो हर किसी को अपनी छाँव देता है क्या नवयुवक और क्या बुजुर्ग, कोई तस्वीर है उसकी?" बुजुर्ग ने कहा।

“तस्वीर तो नहीं है उनकी मेरे पास, लेकिन मैं रच सकती हूँ उनके व्यक्तित्व को।

“वो कैसे”? बुज़ुर्ग ने उत्साहित होते हुए पूछा।

प्रगति ने बुज़ुर्ग व्यक्ति के सवाल के जवाब में कहा- “वो- जिनकी मुस्कान में कोई शोर नहीं, बस एक गहरी तसल्ली है...जिनकी आँखों में मासूमियत ऐसे ठहरी है जैसे किसी शांत झील पर चांदनी...

दिल उनका ऐसा कि किसी अनजान दर्द को भी अपना बना लें...

हर मोड़ पर, हर मुश्किल में...बिना कुछ कहे, बिना कोई हिसाब रखे वो लोगों के साथ खड़े रहते हैं...उनकी मौजूदगी खुद में एक भरोसा है, एक अदृश्य सहारा...

उनकी मासूमियत, दुनिया की भीड़ में उन्हें अलग चमक देती है...जैसे किसी उजाड़ रास्ते पर अचानक खिल आई एक सफ़ेद गुलाब की कली।"

प्रगति के इस करुणामयी जवाब ने बुज़ुर्ग व्यक्ति को अचंभित कर दिया।

“तुम प्रेम में हो बेटी, अन्यथा किसी भिखारी के लिए इतनी करुणा किसी में नहीं होती।" बुज़ुर्ग व्यक्ति ने कहा।

“भिखारी से आपका क्या मतलब है बाबा?" प्रगति ने कहा।

“यहाँ वही आता है बेटी जिसका कोई नहीं होता...रिश्तों से हारा हुआ व्यक्ति ही इस बूढ़े बरगद की शरण में आता है, और लोगों के दान-दक्षिणा से ही यहाँ के लोगों का पेट भरता है।" बुज़ुर्ग ने कहा।

“उफ्फ! तो इतना कष्ट सहा है करण ने।" प्रगति ने दर्द भारी आवाज़ में कहा।

“क्या बोला...करण...हाँ उस लड़के का नाम करण ही था।" बुजुर्ग ने कहा।

“क्या आप उसे पहचान पा रहे हो?" प्रगति ने उम्मीद में पूछा।

“हाँ उसने कल मुझसे पानी माँगा था, पैसे नहीं थे उसके पास। उसने कहा था करण के नाम से लिख लेना, कभी जिंदगी में पैसे कमाने लायक हो जाऊंगा तो आपको दे दूँगा।" बुजुर्ग ने कहा।

“हाँ...तो वो किधर गया आपको कुछ पता है क्या बाबा”? प्रगति ने कहा।

“लगता है कल रात किसी ने उससे रिश्ता जोड़ने का प्रयास किया है...क्यूंकि रिश्तों में हारे व्यक्ति किसी भी नए रिश्ते में नहीं फसना चाहते। शायद यही उसके यहाँ से चले जाने की वजह रही होगी।" बुजुर्ग ने कहा।

“तो मैं उन्हें कहाँ ढूँढू बाबा?" प्रगति ने चिंतित होते हुए कहा।

बुजुर्ग व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा-

“उसे ढूँढो सच्चे मन से, पास खड़े पाओगे

जब थक जाओ हर दर पर दस्तक देकर,

जब टूटने लगे उम्मीदों के भी पर,

तब आँखें मूँद लेना एक पल के लिए,

अपने दिल की आवाज़ को सुन लेना...

वो दूर नहीं जो तुम खोज रहे हो,

वो तो तुम्हारी धड़कन में, तुम्हारी सांस में बसा है...

उसे ढूँढो सच्चे मन से,

कसम से, पास खड़े पाओगे।"

बुज़ुर्ग व्यक्ति के इस अभिप्रेरण ने प्रगति के मन-मस्तिष्क में एक नए उर्जा का संचार किया। प्रगति का हतोत्साहित मन अब पूरी उर्जा के साथ करण को ढूँढने के लिए तैयार हो गया।

बरगद के वृक्ष के करीब 100 मीटर दूर एक चौराहा है, चौराहे के दायीं तरफ कुछ लोगों की भीड़ सड़क पर पड़े एक आदमी को घेरे हुए खड़ी है। भीड़ में से ही किसी ने कहा-

“लगता है मर गया”!

“नहीं बेहोश है शायद”! भीड़ में से ही एक अन्य व्यक्ति ने कहा।

“चेहरे से तो अच्छे घर का लगता है, पता नहीं क्या हुआ होगा इसके साथ?" भीड़ में से एक व्यक्ति ने कहा।

“लगता है नशा कर के पड़ा हुआ है!" भीड़ में से ही आवाज़ आई।

कुछ लोग अपने-अपने स्मार्टफोन को निकाल कर वीडियो बनाने में लग गए। आमतौर पर भीड़ ऐसा ही करती है। भीड़ अक्सर संवेदनशीलता दिखाने के बजाय तमाशबीन बन जाती है। किसी भी शहर की सड़क पर अगर कोई असहाय व्यक्ति गिरा हुआ दिखाई दे जाये, तो भीड़ का रवैया देखने लायक होता है- और सोचने लायक भी। कोई मोबाइल निकाल कर वीडियो बनाने लगता है, कोई खड़े हो कर चर्चा करता है, कोई अपने अनुमान लगाता है: “शायद नशे में है”, “किसी लड़ाई का शिकार हुआ होगा”, “अपने कर्मों का फल है”. लेकिन उस भीड़ में से बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो झुककर पूछते हैं- “भाई क्या हाल है? कोई मदद करूँ?”

यह विडंबना ही है कि भीड़ का आकार जितना बड़ा होता है, मदद करने का जज्बा उतना ही छोटा होता जाता है। शायद इसलिए क्योंकि

जिम्मेदारी व्यक्तिगत होती है, और भीड़ में हर कोई उसे दूसरों पर टाल देता है।

"किसी और ने मदद नहीं की, तो मैं क्यूँ करूं"? - यह सोच हमारे भीतर गहरी जड़ें जमा चुकी है। कभी-कभी तो ये तमाशबीन भीड़ उस घायल या असहाय व्यक्ति के लिए और बड़ी मुसीबत बन जाती है। मदद देर से पहुंचती है, हालात बिगड़ जाते हैं, और फिर दोष देने के लिए वही भीड़ सबसे आगे रहती है।

असल में इंसानियत की पहचान भीड़ में नहीं, एक व्यक्ति के फैसले में होती है। वही एक व्यक्ति जो डर, असुविधा या सामाजिक नजरों की परवाह किये बिना आगे बढ़ता है और किसी की जान बचा सकता है। समाज को बदलने के लिए भी हजारों लोगों की जरूरत नहीं, बल्कि एक-एक जागरूक इंसान की जरुरत है जो मुश्किल वक्त में भी हाथ बढा सके।

इकट्ठी भीड़ के समीप जा कर प्रगति ने देखा- करण अचेत मुद्रा में सड़क पर गिरा पड़ा था। वह घबरायी हुई दौड़ी और करण को गले से लगा लिया, जैसे उसकी दुनिया वहीं ठहर गई हो। उसकी आँखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे।

"करण...उठो न....देखो, मैं आ गई हूँ," वह फूट-फूट कर रोती रही। करण का चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ सूखे थे। आसपास भीड़ जमा होने लगी थी, पर उसे किसी की परवाह नहीं थी। कांपते हाथों से उसने करण की नब्ज टटोली- धड़कन बहुत धीमी थी, पर थी। उसे लगा जैसे उम्मीद की एक छोटी-सी लौ फिर से जल उठी हो।

"कोई एम्बुलेंस बुलाओ!" वह चिल्लाई। भीड़ में से किसी ने फोन निकाला।

वह करण के माथे को सहलाती रही, उसके कान में फुसफुसाती रही, “कुछ नहीं होगा...मैं हूँ न...तुम हार नहीं मान सकते...”

सड़क के किनारे, उस भीड़ और शोर के बीच, मानों उनके बीच एक अलग ही दुनिया बस गई थी- सिर्फ दर्द, डर और बेपनाह मोहब्बत की दुनिया।

एम्बुलेंस के सायरन की आवाज़ दूर से सुनाई देने लगी। कुछ ही पलों में एम्बुलेंस वहाँ आ पहुंची। दो मेडिकल स्टाफ दौड़ते हुए आये और करण को स्ट्रेचर पर लिटा दिया। प्रगति उनके पीछे-पीछे दौड़ती रही, उसकी हथेली अब भी करण के हाथ से बंधी हुई थी, जैसे अगर वह छोड़ देगी तो करण उससे दूर चला जायेगा।

“आप इनके साथ हैं?” एक नर्स ने पूछा।

उसने तेज़ी से हाँ में सर हिलाया, आँखों में आंसू चमक रहे थे।

“चिंता मत कीजिये, हम इन्हें जल्दी अस्पताल ले चलेंगे।” नर्स ने प्रगति को तसल्ली देते हुए कहा।

एम्बुलेंस के अंदर ऑक्सीजन मास्क पहनाते हुए, करण की धडकनों को मॉनिटर पर देखते हुए, डॉक्टर ने गंभीर आवाज़ में कहा, “इनकी हालत नाजुक है, टाइम वेस्ट नहीं कर सकते।”

प्रगति करण का हाथ थामे बैठी रही, लगातार भगवान से प्रार्थना करती रही। एम्बुलेंस के भीतर हर बीप की आवाज़, हर मशीन की हलचल उसे डरा रही थी।

अस्पताल पहुंचते ही करण को इमरजेंसी वार्ड में ले जाया गया। स्ट्रेचर दूर चला गया और वह दरवाज़े पर खड़ी रह गई- बेबस, डरी हुई। वक्त का बहाव उसे विचलित कर रहा था। समय के कुछ मिनट उसे सदियों बीत जाने

जैसे महसूस हो रहे थे। वह हर आती-जाती नर्स को सवाल भरी निगाहों से देखती रही, पर कोई जवाब नहीं मिला। अचानक एक डॉक्टर बाहर आया।

“आप इनकी क्या लगती हैं?” डॉक्टर ने पूछा।

“मैं... वह एक पल को रुकी, फिर कहा, “मैं इनसे बहुत प्यार करती हूँ।”

डॉक्टर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, “इन्हें वक्त पर लाया गया, अब ये खतरे से बाहर हैं। मगर इन्हें अभी भी बहुत देखभाल की जरूरत है। आप इनका सहारा बनिये, इन्हें आपकी सबसे ज्यादा जरुरत है।”

यह सुनते ही वह फूट पड़ी, मगर इस बार उसके आंसू डर के नहीं, राहत के थे। वह जानती थी- अब वह करण को कभी अकेला नहीं छोड़ेगी।

अस्पताल के इमर्जेंसी वार्ड में हल्की-हल्की दवाइयों की महक थी। मशीनों की बीप-बीप आवाज़ अब धीमी-सी पृष्ठभूमि में गूँज रही थी। करण की पलकों में हलचल हुई, फिर धीरे-धीरे उसने आँखें खोलीं। प्रगति वहीं बिस्तर के पास बैठी थी, उसकी उँगलियाँ करण की हथेली को थामे हुए थीं। करण की आँखे खुलते ही उसकी आँखों में चमक आ गई।

प्रगति धीरे-धीरे कदम बढ़ाती हुई करण के सिरहाने आकर बैठ गई। करण के पीले पड़े चेहरे अब पहले से ठीक थे...कमजोरी की वजह से आँखों के नीचे काले घेरे बन आये थे। प्रगति ने कांपते हाथों से करण के माथे को छुआ। उसकी हथेली की गर्माहट में दुआओं की पूरी किताब छिपी थी। वह धीरे-धीरे करण के बालों को सहलाने लगी, मानों हर स्पर्श के साथ उसे अपनी ताकत और प्यार सौंप रही हो।

“करण....” उसकी आवाज़ में कम्पन्न था, लेकिन आँखों में अपार स्नेह की नमी।

“करण....तुम जान भी नहीं सकते कि तुम्हारी ऐसी हालत देख कर मेरा क्या हाल हो गया है...मैं हर पल तुम्हारी सलामती की दुआ करती रही हूँ। अब तुम्हें जल्दी से ठीक होना है, और तुम जब तक ठीक नहीं हो जाते तुम मेरे घर रहोगे।” प्रगति ने कहा।

करण ने कांपते होठों से कहा, “मैं मरना नहीं चाहता....मैं लड़ना चाहता हूँ। मैं जानता था कि जिंदगी आसान नहीं होगी, लेकिन इतनी जल्दी टूट जाऊंगा इसका अंदाज़ा नहीं था।" उसकी आँखों में आंसू थे, लेकिन उनमें हार नहीं थी। उनमें लड़ने का, टिके रहने का संकल्प था।

“कोई नहीं करण...मैं हूँ न तुम्हारे साथ, मैं तुम्हारा साथ दूंगी। मैं तुम्हारे साथ मिल कर इस जिंदगी को आसान बनाउंगी।" प्रगति ने फर्श पर पड़े इंजेक्सन की शीशी को किनारे लगाते हुए कहा।

“ये परेशानी मेरी है और इससे लडूँगा मैं अकेला ही।" करण ने प्रगति के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा।

“दुनिया कि भीड़ में जब तक मैं हूँ तब तक खुद को अकेला मत समझना करण।" प्रगति ने करण के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

“जिंदगी ने इस परेशानी को मेरे दरवाज़े पर लाकर मुझे चुनौती दिया है...तो फिर इसमें मैं तुम्हें कैसे शामिल कर सकता हूँ?” करण ने अपनी आँख को बंद करते हुए कहा।

“परेशानी मेरी हो या तुम्हारी..मैं उसे अपनी परेशानी समझती हूँ करण।” प्रगति ने भावुक होते हुए कहा।

प्रगति के आंसू की एक बूँद करण के माथे पर गिरी। आंसू के स्पर्श ने करण को पुनः आँख खोलने के लिए मजबूर कर दिया। करण ने प्रगति का हाथ पकड़ते हुए कहा-

“परेशानी... मेरी जिंदगी का हिस्सा है, और रो तुम रही हो?”

“रो नहीं रही, आँखों में धूल आ गए थे।” प्रगति ने अपने आंसू को पोंछते हुए कहा।

धूल की बात सुन कर करण मुस्कुराया, मुस्कुराते हुए उसने कहा-

“बंद कमरे में धूल? यहाँ तो दवाई और इंजेक्सन के सिवा कुछ भी नहीं है, फिर तुम्हारी आँखों में धूल कैसी?”

“मैंने कहा न करण, मैं तुम्हारी परेशानी को अपनी परेशानी समझती हूँ.” प्रगति ने भारी आवाज़ में कहा।

“लेकिन क्यूँ?” करण ने पूछा।

“वो इसलिए कि यदि उस रात तुम मेरी परेशानी को नहीं समझे होते तो आज मैं तुम्हारे पास जिंदा नहीं बैठी होती”। प्रगति ने भर्रायी हुई आवाज़ में कहा।

“अच्छा, तो तुम उस रात के लिए पारितोषिक देना चाहती हो? लेकिन मैं तुम्हे बता दूँ मैं किसी काम के लिए पारितोषिक नहीं लेता।” करण ने कहा।

प्रगति के आँखों से भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। सच्चे, निष्कलुष आंसू उसकी पलकों से ढुलकने लगे, जो चांदनी में चमकते मोतियों जैसे प्रतीत हो रहे थे- निर्मल, अमूल्य और अव्यक्त सुख-दुःख के प्रतीक। प्रगति की भीगी पलकें चुपचाप बयां कर रही थीं उन भावनाओं को, जिन्हें शब्दों ने कभी छू भी न पाया था। हर आंसू मोती बन कर गिर रहा था- जैसे आत्मा ने अपना सबसे पवित्र अंश बहा दिया हो।”

“क्या हुआ तुम चुप क्यूँ हो गई?” करण ने कहा।

“मैं पारितोषिक नहीं बल्कि खुद को तुम्हें सौंप देना चाहती हूँ करण।" प्रगति ने भर्राये आवाज़ में कहा।

“रेत में महल बनाना चाहती हो?” करण ने अपने सिर से प्रगति का हाथ छिट्काते हुए कहा।

“महल रेत में बने या मिट्टी पर,

महल तुम्हारे साथ बनना जरूरी है।” प्रगति ने दोबारा से करण के सर को सहलाते हुए कहा।

करण- “ये असंभव है।”

प्रगति- “क्यूँ?”

“मत पूछो इतने सवाल, मैं जवाब नहीं दे पाउँगा.” करण ने खीजते हुए कहा।

“अच्छा...ठीक है, नहीं पूछती।

तुम्हारे पैर के छाले पर मरहम लगा दूँ?

देखो तो उस छाले से वैसा ही खून रिस रहा,

जैसा कि मेरी आँखों से।” प्रगति ने मेज पर रखे मरहम के डब्बे को उठाते हुए कहा।

करण कि स्थिति को सुधरता देख डॉक्टर ने करण को सख्त हिदायत के साथ अस्पताल से छुट्टी दे दी कि वह पूरी तरह आराम करे, दवाइयों का समय पर सेवन करे, किसी भी प्रकार का मानसिक या शारीरिक तनाव न ले और नियमि रूप से जांच के लिए अस्पताल आता रहे।

प्रगति की दुनिया की इस वक्त के सबसे बड़े प्राथमिकताओं में शामिल था ‘करण’। वह नहीं चाहती थी कि करण अपने घावों व तकलीफों के साथ अकेला जूझे। उसे लगता था, जब तक करण पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाता, उसे उसकी देखभाल और साथ की जरुरत है।

लेकिन करण...करण के मन में एक अलग ही संघर्ष चल रहा था। प्रगति के घर पर रहना, वो बोझ सा समझता था। वह उसके एहसान तले दबना नहीं चाहता था। शायद वह अपनी तकलीफों के साथ अकेला रहना ज्यादा बेहतर समझता था, बजाय इसके कि हर पल किसी की चिंता व सहानुभूति को महसूस करे। वह जानता था, सहानुभूति जितनी मीठी लगती है, उतनी ही गहरी चुभन भी देती है। इसलिए, वह हर संभव कोशिश कर रहा था कि प्रगति के आग्रहों से बच सके और जल्द-से-जल्द अपना रास्ता अलग कर ले। काफी समझाने-बुझाने के बाद करण, प्रगति के घर पर आता है।

एक शांत कमरा। हल्की रोशनी। प्रगति ने करण को बिस्तर पर बिठाया। करण के तबियत में कमजोरी उसके चेहरे पर साफ़ झलक रही है। प्रगति पास खड़ी कुर्सी पर बैठ जाती है।

“तुम जब तक पूरी तरह ठीक नहीं हो जाते तब तक तुम यहीं मेरे घर में मेरी देख-रेख में रहोगे।” प्रगति ने करण से चेतावनी भरे लफ़्ज़ों में कहा।

करण (धीमे स्वर में)- “मैं अब ठीक हूँ और तुम क्यों मेरे लिए इतना परेशान होती हो?”

प्रगति (हल्की मुस्कान के साथ)- “क्या किसी की फ़िक्र करना गुनाह है?”

करण (नजरें झुकाते हुए)- “नहीं....बिल्कुल नहीं।"

प्रगति (गंभीरता से)- "तो फिर क्यों रोकते हो मुझे तुम्हारी फ़िक्र करने से?"

करण (थोड़ी झिझक के साथ)- "मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से कोई तुम्हारे चरित्र पर ऊँगली उठाये।"

कुछ पल के लिए कमरे में ख़ामोशी छा जाती है। प्रगति करण की ओर देखती है, उसकी आँखों में विश्वास झलकता है। फिर वह मुस्कुराकर करण का हाथ थाम लेती है।

प्रगति (धीरे से)- "जो लोग सच्चाई नहीं समझ सकते, उनके शब्द हमारे रिश्ते को कैसे परिभाषित कर सकते हैं?"

करण की आँखों में नमी आ जाती है। वह पहली बार खुद को हल्का महसूस करता है।

प्रगति- "अच्छा ये बताओ....तुम दिल्ली तक कैसे पहुंचे? और तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हो गई?"

करण(धीरे से)- मुझे नहीं पता। मेरी पत्नी से मेरा निकाह टूटने के बाद मुझे कुछ भी होश नहीं था। जब होश आया, तो मैंने खुद को यहाँ, दिल्ली में पाया।

प्रगति का दिल जोर से धड़कने लगा. "निकाह?" वह बुदबुदाई, जैसे अपने आप से सवाल कर रही हो। उसने करण की ओर देखा- उसकी आँखों में टूटी हुई उम्मीदों और बेमिसाल दर्द की एक धुंध थी। वो समझ गई थी कि कहानी कहीं बहुत गहरी है, कहीं ऐसा दर्द छिपा है जिसे करण ने अब तक शब्दों में पिरोया नहीं था। लेकिन एक हिंदू लड़के का निकाह? यह बात उसकी समझ से परे थी। प्रगति ने धीरे से उसका काँपता हुआ हाथ थामते हुए पूछा,

“करण.... क्या तुम मुझसे सच बताओगे?”

प्रगति ने अपने सवाल को आँखों में ही समेट लिया, शब्दों में बयां करने की हिम्मत नहीं जुटा पायी। करण ने उसकी नजरों को पढ़ लिया था. वो कुछ पल चुप रहा, फिर गहरी सांस लेकर बोला,

“वो....आमिरा थी. मेरी दुनिया. एक मुस्लिम लड़की। हम दोनों ने सोच लिया था, मजहब से ऊपर उठकर एक नई जिंदगी शुरू करेंगे। लेकिन... किस्मत को हमारा साथ मंजूर नहीं था।"

करण की आवाज़ में टूटी हुई उम्मीदें साफ़ झलक रही थी। उसकी आंखे नम हो चली थी। उसके चेहरे पर दिल के दर्द दस्तक दे चुके थे। प्रगति....करण के तमाम दर्द को अपना बना लेना चाहती थी। वह करण के दिल में दबे सभी दर्द को जानना चाहती थी। उसने नम आँखों से करण से पूछा-

“फिर क्या हुआ करण, क्या परिवार वाले नहीं माने या मजहब ने तुम दोनों को अलग होने के लिए मजबूर कर दिया?”

करण की आँखों से आंसू मोतियों की तरह गिरने लगे। वैसे तो वह आमिरा को कभी भूल नहीं पाया था, लेकिन प्रगति के सवाल ने करण को उसके फ्लैशबैक में धकेल दिया था। उसकी आप-बीती यकायक एक चलचित्र की तरह सामने घूमने लगी। उसने देखा- कैसे पहली बार आमिरा से उसकी मुलाकात हुई थी।

कॉलेज की लाइब्रेरी में, किताबों के बीच छुपी एक मासूम मुस्कान...कैसे धीरे-धीरे दोनों की बातें बढ़ी, और फिर एक अनकहा रिश्ता दिलों में जगह बनाने लगा। उनकी छोटी-छोटी मुलाकातें, छुप-छुप कर

देखना, बेखबर हँसना- सब कुछ जैसे कल की ही बात हो। लेकिन, फिर वो दिन भी आया जब एक खुशनुमा रिश्ते का दर्दनाक अंत हुआ।

प्रगति ने देखा, करण का चेहरा दुःख में डूबा हुआ था। वह कुछ पल चुप रही, फिर बड़े ही कोमल स्वर में बोली-

"करण, शायद कुछ जख्म कभी नहीं भरते...लेकिन मैं चाहती हूँ कि तुम जानो, अब तुम अकेले नहीं हो।"

करण ने गहरी सांस ली, मानों बीते लम्हों का सारा बोझ उसी एक सांस में समेट लेना चाहता हो। उसकी आवाज़ काँप रही थी, लेकिन उसने खुद को संभालते हुए कहा-

"हमें ना मजहब जुदा कर सका था और ना ही परिवार। भरोसे ने हमें एक-दूसरे से दूर कर दिया।"

"क्या उसे तुम पर भरोसा नहीं था?" प्रगति ने पूछा।

करण हल्के से मुस्कुराया, एक ऐसी मुस्कान जिसमें दुःख भी था और कबूलियत भी। उसने गहरी आवाज़ में कहा-

"भरोसा तो था, लेकिन हालात ने उस भरोसे को हिला दिया था।"

प्रगति- "कैसे हालात करण"?

करण- "वो मैं तुम्हें नहीं बता सकता।"

वास्तव में, करण जानता था कि सच्चाई प्रगति को आहत कर देगी। वह नहीं चाहता था कि प्रगति को निकाह टूट जाने का वास्तविक कारण कभी पता चले क्योंकि करण के साथ अलिंगन वाली वो अनजान लड़की कोई और नहीं बल्कि प्रगति ही थी। तथा, करण यह सच्चाई बता कर उसे

दोषी महसूस नहीं कराना चाहता था। इसलिए उसने सच को अपने सीने में दबा लिया।

प्रगति- “क्या तुमने उससे फिर बात करने की कोशिश नहीं की? माफ़ी मांग लेते करण, माफ़ी बड़े-से-बड़े विवाद को पल भर में सुलझा देती है और यदि रिश्तों को बचाने के लिए झुकना ही विकल्प है तो झुक जाना चाहिए करण।"

करण ने प्रगति की बात सुनी, उसकी आँखों में गहराई से देखा, और एक लंबी सांस ली। उसके लफ़्ज़ थरथरा रहे थे, मगर उसने खुद को समेटते हुए कहा-

“मैंने उससे माफ़ी मांगी थी,

टूटे हुए शब्दों में, कांपती आवाज़ में, डूबती आँखों से।

पर उसने माफ नहीं किया।

उसने मेरी तरफ देखा था,

ठीक वैसे ही जैसे कोई अपनी सबसे प्यारी चीज़ के बिखरने को देखता है- बेबस मगर शांत और कभी-कभी आक्रामक।

उसकी आँखों में वो आंसू नहीं थे, जो कभी मेरे लिए बहते थे। अब वहाँ खालीपन था, जैसे सब कुछ कह कर भी अब कुछ कहने लायक नहीं बचा हो।

मैंने उससे कहा था-

“मुझे अपनी गलती का एहसास है...”

पर उसने कहा-

"मेरे विश्वास का क्या?

जिसे तुमने तोड़ा,

बिना ये सोचे कि मैं उसे कैसे जोड़ऊँगी?"

मैं चुप रहा।

क्योंकि अब मेरे पास कहने को कुछ नहीं था।

जो कुछ था, वो मैं पहले ही कह चुका था।

मैंने जो किया, उसकी नजर में वो कोई एक गलती नहीं थी-

वो उसके प्रेम का अपमान था,

उसकी मासूमियत पर दिया गया तमाचा था।

वो माफ कर सकती थी, पर वो भूल नहीं सकती थी।

माफ़ी माँगना आसान होता है,

पर किसी के अंदर टूटी चीजों को वापस भर पाना बेहद मुश्किल।

मैंने कई बार खुद से कहा-

"काश उसने माफ कर दिया होता।"

पर अब समझ आता है, कि कुछ माफियाँ हमारे लिए नहीं होतीं,

वो सिर्फ उस इंसान के लिए होती हैं,

जो अब और टूटना नहीं चाहता।

अब मैं हर दिन जीता हूँ,

उस एक चुप लम्हें के साथ,

जब उसने कुछ नहीं कहा था- बस मेरी आँखों में देखा और चली गई।"

प्रगति (भारी स्वर में)- “ऐसी क्या गलती हुई थी तुमसे?”

करण (नम आँखों से)- “एक असहाय की मदद करना मेरी गलती थी।"

प्रगति- “ये तो पुण्य का काम है, इसमें तो कोई गलती नजर नहीं आती।"

करण- “सब समय का दोष है।"

प्रगति- “क्या वो तुम्हें समझ नहीं सकी?”

करण- “मैं उसे समझा नहीं सका।”

प्रगति (हल्की मुस्कराहट व दर्द के साथ)- “अब भी उससे प्यार है तुम्हें?”

करण उसकी ओर देखता है, उसकी आँखों में अनकही कहानियां तैर रहीं हैं। जवाब नहीं देता, बस एक गहरी सांस ले कर सिर झुका लेता है।

प्रगति (मन ही मन मुस्कुराती है, दर्द छुपाते हुए)- “कुछ रिश्ते खत्म नहीं होते...थम जाते हैं।"

करण (प्रगति की ओर देखते हुए)- मैं सहमत हूँ तुमसे।

प्रगति (धीमे से) - "याद आती है उसकी?"

करण (नजर को नीचे करते हुए) - "बहुत ज्यादा।"

प्रगति - "फिर कैसे जियोगे?"

करण - "जी लूंगा, उसकी यादों के सहारे।"

प्रगति- "यादें तो वक्त के साथ दफन हो जाएंगी।"

करण- "यादें कभी मरती नहीं, ये तब तक जिंदा रहती हैं जब तक सांसे चल रही होती हैं। हाँ, वक्त के साथ इसका प्रभाव जरूर कम हो जाता है।"

प्रगति की आवाज़ में अचानक एक कड़वाहट और चिंता आ जाती है। वह करण की आँखों में सीधे देखती है, जैसे जवाब खींच लेना चाहती हो।

प्रगति (बेचैनी से)- "लेकिन तुम्हारे परिवार वाले? तुम्हारे माँ-पापा वो सब कहाँ हैं? क्या उन्होंने तुम्हारी कोई मदद नहीं की?"

करण हल्की हंसी हंसता है- एक ऐसी हंसी जिसमें दुःख ज्यादा है, हंसी कम।

करण (धीरे, खाली आवाज़ में)- "मैंने कहा न...जब इंसान का बुरा वक्त आता है तो सबसे पहले उसके अपने ही उससे किनारा कर लेते हैं।"

(एक क्षण रुककर, आँखें भींगती हैं)

"और दोष उनका भी नहीं है....मैं ही उन्हें समझाने में नाकाम रहा।"

प्रगति कुछ पल उसे देखती रहती है- जैसे उसके टूटे शब्दों में उसकी पूरी पीड़ा पढ़ लेना चाहती हो। प्रगति की आँखें भींग गई थीं। उसे समझ आ गया था- करण का टूटा हुआ हाल और उसकी बिखरी हुई रूह किस आग से होकर गुजरी थी। उसने करण के कांपते कंधे पर अपना हाथ रखा। शायद वो कुछ नहीं कह सकती थी, लेकिन उसकी मौन उपस्थिति एक मरहम थी, उस जख्म पर जिसे वक्त भी नहीं भर पाया था। तभी बादलों की तेज गरजन के साथ मूसलाधार बारिश शुरू हो जाती है मानों आसमान भी करण के दर्द को

महसूस कर रो रहा हो। हवा में भी उदासी घुल जाती है। दूर किसी मंदिर की घंटी बजती है, जैसे टूटे दिलों के लिए कोई दुआ कर रहा हो।

आमिरा का घर:

दिल्ली से सैंकडों किलोमीटर दूर पटना में आमिरा आज भी उन पुराने जख्मों को अपने सीने में संजोए हुए है। बरस बीत गए, लेकिन वह दर्द, वह सदमा जैसे उसकी साँसों में रच-बस गया है। हर धड़कन के साथ बीती हुई वह पीड़ा फिर से जिन्दा हो उठती है, मानो वक्त थम सा गया हो। यह शहर, इसकी गलियां, इसकी बोझिल हवाएं- सब कुछ आमिरा के जख्मों पर जैसे नमक छिडकता रहता था। हर मोड़ पर उसे करण की मुस्कान दिखती, हर भीड़ में उसे उसकी आवाज़ सुनाई देती।

करण- उसकी दुनिया, उसका सपना, जो एक दिन अचानक टूट कर बिखर गया था। यहाँ की आवो-हवा आमिरा के मन में करण की यादों को बार-बार ताज़ा कर देती थी। कुछ भी बदलता नहीं था- न रास्ते, न दुकानों के नाम, न हवा में घुला वह अजीब सा खालीपन। यह शहर अब उसे काटने को दौड़ता था। दीवारें जैसे उस पर झुकने लगतीं, सड़कों की भीड़ उसे घेरने लगती। हर रोज उसे लगता, जैसे कोई अदृश्य डोर उसे बार-बार उसी दर्द की गहराइयों में खींच लेती है जहाँ से वह बाहर नहीं निकल सकती। अब वह एक ही बात सोचती थी-

“यहाँ से निकल जाना है, दूर कहीं, जहाँ करण की यादें हवा में न तैरती हों, जहाँ हर कदम पर दिल न टूटे।”

आमिरा जानती थी, भाग जाना किसी हल का नाम नहीं होता। पर कभी-कभी एक नई हवा, एक अनजान जगह इंसान को जीने का बहाना दे देती है। उसे बस एक मौका चाहिए था- खुद को फिर से समेटने का, फिर से

जीने का। और शायद, कहीं दूर उस अजनबी रास्ते पर...उसे खुद से फिर मुलाक़ात होनी थी।

"अम्मी मैं निगार के पास दिल्ली जाना चाहती हूँ। वहीँ छोटी-मोटी नौकरी करूंगी। फिर से अपनी जिंदगी की शुरुआत नए सिरे से करूंगी।" आमिरा ने अपनी माँ शबनम से कहा।

"हाँ बेटा हमलोग चाहते भी हैं कि तू सब कुछ भूलकर अपनी जिंदगी की शुरुआत नए तरीके से कर, लेकिन तुम्हारे अब्बू चाहते हैं कि पहले तुम्हारा निकाह करा दिया जाए।" शबनम ने फर्श की सफाई करते हुए कहा।

निकाह शब्द जो आमिरा के जीवन में उजाले की बजाय अँधेरे की दस्तक लेकर आया था। जहाँ औरों के लिए यह रिश्तों की मिठास और नए अरमानों का आगाज़ होता है, वहीँ आमिरा के लिए यह बस एक दर्द भरी दास्तान बन चुका था। हर बार जब यह शब्द उसके कानों में गूंजता, उसका दिल किसी अनजाने डर से सिहर उठता। जैसे उसकी रूह पर किसी ने जंजीरें डाल दी हों, जैसे उसके ख्वाब को किसी ने बेरहमी से कुचल डाला हो। निकाह उसके लिए प्रेम या अपनापन नहीं, बल्कि एक अनकही पीड़ा, एक घुटन भरा बंधन था, जिसे वह चाहकर भी कभी तोड़ नहीं पायी थी।

"अम्मी आप निकाह के बारे में सोच भी कैसे सकती हैं?" आमिरा की आवाज़ काँप रही थी, आँखों में नाराजगी नहीं, बस टूटी हुई उम्मीदों का सैलाब था।

"मैं शादीशुदा हूँ, करण से मेरा अब तक तलाक नहीं हुआ है, और अगर हो भी जाता, तब भी मैं निकाह नहीं करती।" वह बोली।

उसकी बातों में एक ऐसी थकान थी जो सिर्फ जिंदगी से हार कर ही आती है। शबनम कुछ कहने को आगे बढ़ीं, लेकिन आमिरा ने नजरें फेर लीं।

उसके लिए निकाह अब सिर्फ एक ज़ंजीर थी- एक ऐसा बंधन जो उसे अपने अस्तित्व से ही काट देता था। जिस आमिरा ने कभी प्यार पर भरोसा किया था, वो आज रिश्तों के नाम से भी डरती थी। उसकी आत्मा जैसे बार-बार उसी दर्दनाक मोड़ पर लौट आती थी, जहाँ से उसने अपने सपनों को खो दिया था।

“बेटा, जिंदगी यूँ खाली नहीं कटती, तुम अकेली हो, तुम्हें सहारे की जरुरत है।" शबनम ने धीमे से कहा।

“अकेली हूँ, तो क्या? कम से कम अब किसी नए बंधन में घुटने से तो बची हूँ,” वह फुसफुसाई।

“लेकिन..” शबनम ने कुछ कहने का प्रयास किया।

“मैं शादी-शुदा हूँ।” आमिरा ने तेज़ी से कहा।

कमरे की हवा भारी हो गई थी। आमिरा ने अपनी अम्मी शबनम की ओर देखा- वे उम्र से पहले झुक गई थीं, चिंता की लकीरें चेहरे पर गहरी हो चुकी थीं। आमिरा का दिल दर्द से भर उठा, फिर भी वह पीछे नहीं हटी।

“मैं अब किसी रिश्ते के लिए तैयार नहीं हूँ अम्मी,” उसकी आँखों से आंसू बह निकले, “अब नहीं”।

एक लम्बी ख़ामोशी कमरे पर छा गई। दीवार की घड़ी टिक-टिक कर रही थी, लेकिन अब उसकी आवाज़ भी आमिरा के दिल की धडकनों में गुम हो गई थी।

“ठीक है तुम दिल छोटा मत करो, मैं तुम्हारे अब्बू से बात कर के तुम्हारे दिल्ली जाने की बात करती हूँ।” शबनम ने आमिरा के हाथ को अपने हाथों में लेते हुए कहा।

रात गहराती जा रही थी। कमरे की हल्की पीली रोशनी में अशरफ साहब अपने पलंग पर लेटे हुए थे, थकान उनके चेहरे पर साफ़ झलक रही थी। शबनम चुपचाप उनके पैरों को हल्के हाथों से दबा रही थी। कमरे में बस पंखे की धीमी आवाज़ और बीच-बीच में अशरफ साहब की हल्की सांसों की आवाज़ गूँज रही थी। थोड़ी देर बाद शबनम ने हिम्मत जुटा कर धीरे से कहा-

"सुनिए मुझे आपसे एक बात कहनी थी।"

अशरफ साहब ने आँखें बंद किये हुए ही 'हूँ' में जवाब दिया।

शबनम ने प्यार और संकोच से आमिरा की बात छेड़ी,

"आमिरा उस हादसे से अब तक उबर नहीं पायी है...वह निगार के पास दिल्ली जाना चाहती है और वहीँ कुछ काम करना चाहती है. मैं सोच रही थी, अगर आप इजाजत दें तो..."

अशरफ साहब ने धीरे से आँखें खोलीं। कुछ पल चुप रह कर उन्होंने गहरी सांस ली। शबनम की आवाज़ में जो उम्मीद और माँ का दर्द था, वह उसे अनसुना नहीं कर सके। कमरे में एक अजीब सी ख़ामोशी छा गई थी- जिसमें एक पिता का सोचता मन और एक माँ की दुआएं गूँज रही थीं। अशरफ साहब ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा-

"क्या वो निकाह नहीं करेगी?"

"मुझे लगता है हमें उसे थोड़ा और वक्त देना चाहिए इस सदमे से निकलने के लिए।" शबनम ने अशरफ साहब का पैर दबाते हुए कहा।

"आप ठीक कहती हैं, लेकिन मैं चाहता हूँ आप भी उसके साथ दिल्ली जाएँ।" अशरफ साहब ने शबनम से कहा।

"ठीक है।" शबनम ने कहा।

पुरानी यादों और गमों को पीछे छोड़कर, एक नई जिंदगी की शुरुआत करने के लिए आमिरा अपनी माँ शबनम के साथ दिल्ली पहुंचती है। दिल्ली की भीड़-भाड़ भरी सड़कों पर, आमिरा ने गहरी सांस ली। हर कोने से आती तेज आवाजों और अजनबी चेहरों के बीच, उसे एक नई शुरुआत की उम्मीद दिखाई दी। अतीत की टूटी यादें और दिल पर लगी चोटें अब पीछे छूट चुकी थीं। उसकी माँ, शबनम ने उसकी हथेली थाम रखी थी- जैसे हर आंधी में एक स्थिर सहारा। नए सपनों, नई राहों और खुद को फिर से खोजने की चाहत लिए, आमिरा ने राजधानी के खुले आसमान के नीचे अपने भविष्य के लिए पहला कदम बढ़ाया।

“भैया रोहिणी सेक्टर 8 चलेंगे?” आमिरा ने ऑटो वाले को हाथ दिखाते हुए पूछा।

धूप तेज थी, सिर पर बंधी दुपट्टे की गाँठ ढीली पड़ चुकी थी। ऑटो धीरे-धीरे किनारे लगने लगा। ऑटो वाला चश्मे के ऊपर झांकते हुए बोला-

“चलेंगे मैडम, मीटर से या फिक्स?”

आमिरा ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया- “मीटर से भैया, बहुत दूर है।"

ऑटो वाला सिर हिलाकर सहमति जताता है। आमिरा और शबनम बैग को पास में टिकाकर तेज़ी से ऑटो में बैठती है। एक हल्की खडखडाहट के साथ ऑटो स्टार्ट होता है। रास्ते में ट्रैफिक का शोर, होर्न की आवाजें और गर्म हवा का थपेड़ा आमिरा के चेहरे से टकराता है, लेकिन उसके मन में किसी और ही ख्यालों का तूफ़ान चल रहा है।

“आपलोग कहाँ से आ रहे हैं?” ऑटो वाले ने बातचीत शुरू करने के लिए पूछा।

“हमलोग बिहार से हैं।" शबनम ने जवाब दिया।

“दिल्ली में कोई रिश्तेदारी है क्या?” ऑटो वाले ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“हाँ, इसकी एक सहेली यहाँ के एक बड़े कम्पनी में काम करती है।” शबनम ने आमिरा की तरफ इशारा करते हुए कहा।

“अच्छा, आपलोग उन्हीं के पास जा रहे हो?” ऑटो वाले ने पूछा।

“फिलहाल तो उसी के पास जा रही हूँ, जैसे इसकी कहीं बात बन जायेगी तो ये अपना अलग कमरा किराये पर ले लेगी।” शबनम ने कहा।

“अच्छा...आपलोग काम की तलाश में दिल्ली आये हो?” ऑटो वाले ने कहा।

“जी भैया आपकी नजर में कोई काम है क्या?” आमिरा ने दुपट्टे से चेहरे पर आये पसीने को पोंछते हुए कहा।

“दिल्ली में काम ही काम है...आप बताओ आप किस तरह का काम कर पाने में सक्षम हो?” ऑटो वाले ने होर्न बजाते हुए कहा।

“कोई भी काम हो चलेगा, ऐसा कुछ विशेष नहीं है।"

“ठीक है..आप अपना नंबर दे दो...कुछ जुगाड़ लगते ही आपको फोन करूँगा।” ऑटो वाले ने कहा।

“ठीक है, नोट कीजिये।” आमिरा ने कहा।

“आपको आपके गंतव्य तक पहुंचा देता हूँ, फिर नोट कर लूँगा।” ऑटो वाले ने कहा

धूल उड़ाती ऑटो, झटकों से भरी सड़कों को पार करती हुई रोहिणी सेक्टर 8 पहुँच गई। थमते ही ड्राईवर ने मुस्कुराते हुए पीछे मुड कर कहा-

“ये लीजिए मैम, आपका गंतव्य आ गया।"

सड़क के किनारे ढलती धूप में सब कुछ सुनहरा चमक रहा था, और सफर के झटके अब मीठी याद की तरह दिल में उतरने लगे थे।

आमिरा ने ऑटो से उतरते ही ऑटो वाले को बिल और अपना नंबर दिया। और बहुत जल्द दोबारा मुलाकात की बात कह कर ऑटो वाले से विदा लिया।

“निगार को फोन कर...उसे कह कि हमलोग उसके दिए पते पर आ गए हैं।" शबनम ने आमिरा से कहा।

आमिरा ने हाँ में सर हिलाया और फोन निकाल कर निगार को फोन करने लगी. फोन से कस्टमर केयर वाले की आवाज़ आई-

“आपने जिस व्यक्ति को कॉल किया है वो अभी दूसरी कॉल पर व्यस्त है, कृपया कुछ समय बाद पुनः प्रयास करें।”

“उफ्फ! ये लड़की...कहाँ व्यस्त है?” आमिरा ने झुंझलाते हुए बैग जमीन पर पटका।

पीछे से चहकती आवाज़ आई- “हेल्लो आमिरा....अस्सलामवालेकुम आंटी!”

आमिरा और शबनम एक साथ पीछे पलटी। शबनम ने वालेकुम अस्सलाम के साथ निगार के सलाम का जवाब दिया। “अरे निगार कहाँ थी तू? आधे घंटे से तेरा इंतजार कर रही हूँ।” आमिरा ने कहा।

“चल झूठी...अभी-अभी तो तुम दोनों को ऑटो वाले भैया ने यहाँ पर ड्रॉप किया है।” निगार ने ठहाका लगाते हुए कहा।

“ये बता कहाँ पर है तुम्हारा फ्लैट? मैं और अम्मी बहुत थक गए हैं।" आमिरा ने अपनी थकान जाहिर करते हुए कहा।

“हाँ चलो न.... इसी बिल्डिंग में है मेरा फ्लैट।" निगार ने पास की बिल्डिंग की ओर इशारा करते हुए कहा।

“आपलोगों का सफर कैसा रहा?” निगार ने फ्लैट के अंदर प्रवेश करते हुए कहा।

“सफर तो ठीक ही रहा...बस यहाँ तू काम लगवा दे मेरा 1-2 दिनों के अंदर तो आगे का सफर भी ठीक-ठाक तय हो जायेगा।” आमिरा ने कहा।

“हाँ...हाँ..लगवा दूंगी यार, पहले आज आराम तो कर ले या आज से ही काम पर शुरू हो जायेगी।” निगार ने मुस्कुराते हुए कहा, जैसे तंज कस रही हो।

“आराम तो कब का खत्म हो चुका है जिंदगी से।” आमिरा ने धीमे लेकिन थके हुए स्वर में कहा।

निगार की हंसी कुछ पल को ठिठक गई। उसने देखा- आमिरा की आँखों में एक पुरानी सी थकावट थी...जैसे हर सपना, हर उम्मीद खुद ही उठकर कमरे से बाहर चली गई हो।

“तू फिर भी मुस्कुराती है?” निगार ने थोड़ी गंभीरता से कहा।

“क्या करूँ?” आमिरा ने एक गहरी सांस ली, “आदत हो गई है. जैसे लोगों को सुबह चाय की आदत होती है, मुझे मुस्कुराने की हो गई है। वरना टूट जाउंगी।"

“ठीक है..तुम और आंटी एक अच्छी नींद ले लो. मैं यहाँ के अपने संपर्कों से बात कर के तुम्हारे लिए काम का इंतजाम कराती हूँ।” निगार ने कहा।

आमिरा के लिए काम की तलाश किसी आर्थिक संकट की मजबूरी नहीं थी, और न ही यह किसी शौक की उपज थी। उसके लिए काम पाने का एक ही मकसद था- अपने भीतर के तूफानों को शांत करना, बीते हुए दर्दनाक अनुभवों से उबरना और मानसिक सुकून की तलाश। लम्बी खोज और कई असफल प्रयासों के बाद, अंततः वह दिन भी आ गया जब आमिरा को एक अस्पताल में नौकरी मिल गई।

अस्पताल की सफ़ेद दीवारें, एम्बुलेंस की आवाजें और रोगियों की बेचैन सांसें...यह सब आमिरा के लिए एक नई दुनिया का प्रवेशद्वार था। यहाँ हर दिन जीवन और मृत्यु की आँख-मिचौली चलती थी, और हर एक चेहरा एक नई कहानी कहता था।

आमिरा ने बतौर रिसेप्शनिस्ट काम संभाला। यह पद भले ही साधारण था, लेकिन हर दिन उसे इंसानों की पीड़ा, उम्मीद और रिश्तों के असली रूप से रूबरू करवाता था। धीरे-धीरे, दूसरों का दर्द उसकी अपनी पीड़ा पर मरहम लगाने लगा। वह काम में इतना डूब गई कि अतीत के घाव धीरे-धीरे धुंधले पड़ने लगे। पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। रोज की तरह आज भी आमिरा रिशेप्सन पर बैठी थी। हॉस्पिटल की हलचल, मरीजों का आवागमन, बाहर चलती गाड़ी के शोर-शराबे के बीच आमिरा को किसी महिला ने आवाज़ दिया-

“हेलो मैम, एक नंबर लगाना है।"

“जी, किस डॉक्टर के लिए?” आमिरा ने बिना सिर उठाये लैपटॉप में डाटा एंट्री करते हुए कहा।

“जी, डॉ रुस्तम के पास।" नंबर लगाने आई महिला ने कहा।

“ठीक है, वो शाम 4 बजे से देखेंगे।” आमिरा ने कहा।

“जी कोई दिक्कत नहीं है।” महिला ने कहा।

“ठीक है, आप पेशेंट का नाम बताइए। " आमिरा ने कहा।

“करण...करण शर्मा.” महिला ने कहा।

करण...नाम सुनते ही आमिरा का हाथ अचानक की-बोर्ड पर ठिठक गया। जैसे वक्त कुछ पल के लिए थम सा गया हो। ‘करण...करण शर्मा’ ये नाम उसके जेहन में गूंजने लगा। आँखें अब भी स्क्रीन पर थीं, लेकिन दिमाग किसी और ही वक्त में लौट चुका था।

“मैम, क्या हुआ?” सामने खड़ी महिला की आवाज़ ने उसे वर्तमान में खींच लिया।

“जी...कुछ नहीं,” आमिरा ने जल्दी से खुद को संभाला, “मैं नंबर लगा देती हूँ।”

उसने जैसे-तैसे नाम फॉर्म में दर्ज किया और कंप्यूटर स्क्रीन पर नजरें जमाकर बैठी रही। बाहर से शांत दिखने वाली आमिरा के अंदर एक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ था। मन में कुछ सवाल पैदा होने लगे थे-

“क्या यह वही करण है? और, यदि यह वही करण है तो फिर ये महिला कौन है जो करण के नंबर के लिए आई है? क्या अतीत फिर से मेरे सामने खड़ा होगा या यह सिर्फ एक संयोग है?

“एक्सक्यूज मी मैम!” आमिरा ने वापस जाती महिला को रोकते हुए कहा।

“जी कहिये।" उस महिला ने कहा।

“आपका शुभ नाम”। आमिरा ने कहा।

“प्रगति।" प्रगति ने मुस्कुराकर जवाब दिया।

7. खण्डिता

शाम के चार बजने में कुछ ही मिनट बचे थे। आमिरा की नज़र बार-बार दरवाज़े की ओर उठ जाती, फिर खुद को डाँटकर लैपटॉप की स्क्रीन पर लौटा लेती। लेकिन दिल था कि मानने को तैयार नहीं था—हर पल एक बेचैनी, एक डर, और एक उम्मीद उसके भीतर हलचल मचाए हुए थे।

और फिर... दरवाज़ा खुला।

सधी हुई चाल, हल्की दाढ़ी, गहरे भूरे रंग की टी-शर्ट और आँखों में एक थकी हुई बेचैनी लिए वह प्रगति के साथ अंदर आया।

"करण..." आमिरा ने मन ही मन कहा।

हाँ, वही था। वही चेहरा, जिसे वह लाख कोशिशों के बाद भी कभी भूल नहीं पाई थी।

उसकी नजरें सामने रिसेप्शन की ओर उठीं। कुछ क्षणों के लिए उसकी आँखें आमिरा से टकराईं। आमिरा ने फाइल से अपने चेहरे को छिपा लिया...

"डॉ रूस्तम के पास अपॉइंटमेंट है," करण ने कहा।

"जी... हाँ। आप अंदर जा सकते हैं," आमिरा ने स्वर को यथासंभव संयमित रखा, लेकिन उसकी उंगलियाँ कंप्यूटर माउस पर काँप रही थीं।

करण चला गया... मगर आमिरा की आँखें अब भी उस रास्ते को देख रही थीं, जहाँ से वह गया था। उसके मन में एक ही सवाल गूंज रहा था—क्या अतीत सच में खत्म होता है, या सिर्फ लौटने के लिए कहीं छिप जाता है?

कुछ मिनट बीते। शायद बीस, शायद तीस- आमिरा को समय का कोई अंदाजा नहीं रहा। सिर्फ एक बात तय थी- करण यहीं कहीं था, उसी इमारत में, उसी हवा में सांस ले रहा था जहाँ वह थी। फिर, दरवाज़ा फिर से खुला। करण बाहर आया। आमिरा के व्यथित मन में यह सवाल आया- "कौन है प्रगति, करण के साथ क्या रिश्ता है उसका जो वह करण का साया बन कर उसके साथ खड़ी है? और, करण को ऐसी क्या बीमारी हुई है जो उसे हॉस्पिटल का चक्कर काटना पड़ रहा है?" आमिरा ने उनदोनों का पीछा करने का फैसला किया। करण और प्रगति के हॉस्पिटल से बाहर निकलते ही आमिरा ने अपने साथी रिशेप्शनिस्ट पूजा से कहा-

"मेरी तबियत ठीक नहीं लग रही, मैं घर जा रही हूँ।"

"तुम हॉस्पिटल में काम करती हो...दिन भर डॉक्टरों से घिरी रहती हो...यदि तबियत ठीक नहीं लग रही है तो यहीं किसी डॉक्टर से दिखा लो।" पूजा ने मुस्कुराते हुए कहा।

"नहीं... थोड़ा सिरदर्द है...घर जा कर आराम करूँगी तो ठीक हो जायेगा..मैं जा रही हूँ...तू यहाँ मैनेज कर लेना।" आमिरा ने अपना बैग उठाते हुए कहा।

आमिरा ने बाहर निकल कर देखा...सड़क पर गाड़ियों की भारी आवागमन जारी है, करण और प्रगति उसे कहीं दिखाई नहीं दे रहे। तभी उसकी नजर एक टैक्सी पर पड़ी जिसमें करण और प्रगति बैठे हुए हैं। आमिरा जब तक उस टैक्सी के करीब जाती तब तक टैक्सी खुल चुकी थी। आमिरा

ने फ़ौरन दूसरी टैक्सी को बुक किया, तथा उसे करण वाली टैक्सी का पीछा करने को कहा।

टैक्सी धड़-धड़ करती हुई शहर की व्यस्त सड़कों पर दौड़ने लगी। आमिरा की नजरें सामने वाली टैक्सी पर टिकी थीं जिसमें करण और प्रगति बैठे थे। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था- गुस्सा, उलझन और एक अजीब बेचैनी से भरा हुआ।

"भैया, तेज चलाइए...टैक्सी छूट न जाए!" आमिरा ने घबराते हुए कहा।

ड्राईवर ने सिर हिलाया और एक्सीलेरेटर पर जोर दिया। दोनों टैक्सियां अब ट्रैफिक में एक अजीब दौड़ में शामिल थीं। थोड़ी देर बाद करण की टैक्सी एक पुराने, सुनसान इलाके की ओर मुड गई। आमिरा चौंक गई- वे लोग शहर के उस हिस्से में क्यों जा रहे थे जहाँ अमूमन कोई यूँ ही नहीं जाता?

करीब 10 मिनट बाद, करण और प्रगति की टैक्सी एक सुनसान गली में रुकी। आमिरा की टैक्सी भी कुछ दूरी पर जा कर रुकी। उसने ड्राईवर को यहीं रुकने को कहा और खुद धीरे-धीरे टैक्सी से उतर कर आगे बढ़ी। उसने देखा करण और प्रगति किसी पुराने मकान की ओर बढ़ रहे हैं। आमिरा ने गली के कोने में छिपकर उनकी हरकतें देखनी शुरू कर दी। तभी प्रगति ने जेब से कुछ निकाला- वह कोई चाबी थी। दरवाज़ा खोलते ही दोनों अंदर चले गए। आमिरा ने सड़क से लगी मकान की खिड़की से छिपकर देखा-

"करण कुर्सी पर बैठा है...कमरे के अंदर उसे प्रगति कहीं नहीं दिख रही। आमिरा ने थोड़ा इन्तजार किया कि शायद उसे प्रगति नजर आ जाये, तभी उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखा....आमिरा डर से चौंक गई और पीछे

मुड़ी...ये हाथ प्रगति के थे। आमिरा पसीने से तरबतर हो गई उसे कुछ नहीं सूझ रहा था कि वो प्रगति को अब क्या जवाब देगी?"

"मैम आप यहाँ वो भी इस तरह?" प्रगति ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।

"जी...जी...आप वो हॉस्पिटल में अपनी रिसीप्ट भूल आये थे, तो मैं वही देने आपके पीछे चली आई।" आमिरा ने नर्वसनेस में पसीना पोंछते हुए कहा।

"प्रगति ने हल्की मुस्कान से कहा- "बस इतनी सी बात के लिए आप इतना परेशान हो गए....अब आ ही गए हैं तो अंदर आइये, पानी पी लीजियेगा।"

"नहीं, इट्स ओके। मैं भी यहीं पास में ही रहती हूँ, अपने घर लौट रही थी...सोची आपको ये देते चलूं। आप ये अपना रिसीप्ट रखिये मैं बाद में कभी आउंगी।" आमिरा ने अपने पर्स में से रिसीप्ट निकालते हुए कहा।

करण के कानों में प्रगति की आवाज़ के साथ आती दूसरी आवाज़ उसे विचलित कर रही थी। उसे यह आवाज़ जानी-पहचानी लगी...उसने प्रगति को आवाज़ दिया-

"प्रगति...कौन है दरवाज़े पर?"

करण की आवाज़ ने आमिरा के धड़कन को तेज कर दिया था, वो अभी करण का सामना करने की स्थिति में नहीं थी। लेकिन वह करण और प्रगति की सारी सच्चाई जान लेना चाहती थी।

"जी ये कौन हैं आपके?" आमिरा ने उत्सुकतावश पूछा।

“ये मेरे सब कुछ हैं, यदि ये ना होते तो मैं भी ना होती।” प्रगति ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

प्रगति के ये शब्द आमिरा के मन और मस्तिष्क पर हथौड़े की तरह बरस रहे थे। हर शब्द जैसे उसकी आत्मा में गूँज रहा था- तीखा, निर्विकार और अंतिम। उसने इस बात की रत्तीभर भी कल्पना नहीं की थी कि करण कभी किसी और के साथ अपने जीवन की नई कहानी लिख सकता है।

आमिरा ने हमेशा करण को अपना माना था- निकाह के टूट जाने के बावजूद। उसके लिए वह संबंध महज एक कानूनी बंधन नहीं था, वह एक आत्मिक जुड़ाव था, जो किसी दस्तखत या अदालत की मुहर से समाप्त नहीं हो सकता था। वह आज भी खुद को करण की पत्नी मानती थी, और यह कल्पना ही उसे तोड़ रही थी कि करण अब किसी और की जिंदगी में अपना नाम दर्ज करा रहा है।

“ठीक है, मैं चलती हूँ।” आमिरा ने बुझे मन से कहा।

आमिरा के जाने के बाद करण ने प्रगति से पूछा-

“कौन थी...और क्या कह रही थी?”

“हॉस्पिटल की रिशेप्शनिस्ट थी... ये रिसीप्ट हमलोग वहीं भूल आये थे... वही देने को आई थी।” प्रगति ने कहा।

“इतनी सी बात के लिए इतना दूर तक चली आई?” करण ने हैरान होते हुए पूछा।

“बोल रही थी...यहीं कहीं पास में ही रहती है, इसलिए देने को चली आयी।" प्रगति ने कहा।

"अच्छा! उसे पता था कि हमलोग यहाँ रहते हैं?" करण ने उत्सुकतावश पूछा।

"अब ये तो पता नहीं...जाने दो न क्यूँ इतना दिमाग लगाना?" प्रगति ने कहा।

वक्त गुजरता गया करण की तबियत भी वक्त के साथ ठीक होती गई। लेकिन वह हमेशा यह महसूस कर रहा था कि कोई शख्स साये की तरह उसका पीछा कर रहा है। वह उसे देख नहीं पा रहा था, लेकिन महसूस कर रहा था...कि कोई है- कहीं आस-पास, जैसे उसकी हर हरकत पर निगाह रखे हुए हो। करण कि तबियत तो सुधर रही थी, लेकिन मन का यह डर अब धीरे-धीरे उसकी दिनचर्या में शामिल होने लगा था। रात को अक्सर उसे ऐसा महसूस होता जैसे कोई उसकी खिड़की के बाहर खड़ा है, या फिर कमरे में उसके पीछे कोई साया गुजरता है। वह पीछे मुड़कर देखता, पर वहाँ कुछ नहीं होता। धीरे-धीरे यह अहसास डर में बदलने लगा। करण ने प्रगति से बात करना चाहा, पर वह खुद नहीं समझ पा रहा था कि वह कहे तो क्या कहे. यह उसका वहम था या सच में कोई उसकी परछाई बन चुका था?

एक रात करण देर तक जागता रहा। तेज हवा के साथ बारिश हो रही थी और खिड़की पर पानी की बूँदें गिरकर एक अजीब-सी ध्वनि बना रही थी। कमरे की बत्तियाँ बुझी थीं, सिर्फ एक टेबल लैम्प जल रहा था। तेज हवा से खिड़की बार-बार खुल रही थी और बंद हो रही थी। करण बिस्तर से उठकर खिड़की की छिटकनी लगाने को आगे बढ़ा, तभी खिड़की से तेज हवा का झोंका आया और उस हवा से टेबल पर रखे किताबों के पन्ने उड़ने लगे।

आमतौर पर हमलोग किताब के पन्नों के बीच कुछ-कुछ कागजों को जरुरी कागज समझ कर रख देते हैं, फिर हमें वर्षों तक इन कागजों का ख्याल

नहीं रहता। और, फिर किसी दिन अचानक ये कागज़ हमारे आँखों के सामने आ जाते हैं।

किताबों के पन्नों के बीच से कुछ कागज़ निकल कर हवा में उड़ने लगे। करण ने सभी कागज़ को एक-एक कर इकट्ठा किया तथा उसमें से जरुरी व बेकार कागजों को छांटने लगा। इस दौरान उसकी नजर उसी अस्पताल की रिसीप्ट पर पड़ती है जो उस दिन आमिरा...प्रगति को दे गई थी। करण ने उस रिसीप्ट को उलट-पलट कर देखा, उसकी नजर सिग्नेचर वाले सेक्शन पर पड़ी। उस सिग्नेचर को देख कर वो दंग रह गया। उसने घबराहट में प्रगति को आवाज़ दिया-

“प्रगति..प्रगति जल्दी यहाँ आओ।”

“क्या हुआ...इतनी रात में क्यूँ इतना शोर कर रहे हो?” अपने कमरे से घबराकर भागती हुई आई प्रगति ने कहा।

“आमिरा यहीं है...दिल्ली में।” करण ने हाँफते हुए कहा।

“पहले तुम घबराना बंद करो और बैठ जाओ।” प्रगति ने करण को सहारा दे कर बिठाते हुए कहा।

करण की साँसे तेज थीं। उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें और आँखों में घबराहट साफ़ झलक रहा था।

“प्रगति...आमिरा यहीं दिल्ली में है।" वह घबराहट में बोला।

प्रगति ने करण की हथेली को अपनी हथेली में कस कर जकड़ लिया जैसे मानों आंधी कितनी भी तेज क्यूँ न हो जाए, वो करण को गिरने नहीं देगी।

“तो क्या हुआ यदि आमिरा दिल्ली में है तो...और तुम्हें कैसे पता कि वो दिल्ली में है?” प्रगति ने करण से एक साथ दो सवाल पूछ लिए।

“वो इस घर पर भी आ चुकी है।" करण ने कहा।

“इस घर पर भी आ चुकी है...मतलब...तुम किसकी बात कर रहे हो?” प्रगति ने हैरानी में पूछा।

“तुम्हें याद है उस रोज हॉस्पिटल की रिशेप्शनिस्ट एक रिसीप्ट ले कर आई थी?” करण ने कहा।

“हाँ बिलकुल अच्छे से याद है...तो?” प्रगति ने कहा।

“वही आमिरा थी।" करण ने कहा।

“क्या..... वो आमिरा थी, तुम्हें कैसे पता तुमने तो उसे देखा भी नहीं था?” प्रगति ने चौंकते हुए कहा।

“ये देखो वो रिसीप्ट और ये रहा उसका सिग्नेचर.” करण ने कहा।

प्रगति ने सिग्नेचर की तरफ अपने नजरों को घुमाया...साफ़-साफ़ अक्षरों में आमिरा लिखा हुआ था। प्रगति हैरान थी कि करण का प्यार उसके इतने करीब था और वो उसे पहचान नहीं पायी। वो सोच रही थी-

“काश वो उस रोज ही इस रिसीप्ट के सिग्नेचर कॉलम को पढ़ लेती तो वो अब तक करण को उसके बिछड़े प्यार से मिला दी होती।"

प्रगति ने निर्णय किया कि वो अगले सुबह ही हॉस्पिटल जायेगी और आमिरा को अपने साथ अपने घर ले कर आएगी।

प्रगति सुबह-सुबह तैयार हो कर अस्पताल पहुंची। रिशेप्सन पर उसे आमिरा कहीं नहीं दिख रही है। उसने रिशेप्सन पर बैठी दूसरी लड़की पूजा से कहा-

“एक्सक्यूज मी मैम!”

“जी कहिये।” पूजा ने सर उठाकर जवाब दिया।

“आमिरा मैम कहाँ मिलेंगी।" प्रगति ने कहा।

“जी वो तो कल ही रिजाइन कर के चली गई।” पूजा ने कहा।

“रिजाइन कर के चली गई...कहाँ”? प्रगति ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।

“ये तो पता नहीं...उसने सिर्फ इतना बताया था कि उसे कहीं और इससे बेहतर काम मिल गया है। इसलिए अब वो यहाँ काम नहीं करेगी।” पूजा ने कहा।

“उसका एड्रेस या कोई फोन नंबर तो होगा...क्या आप मुझे वो दे सकती हैं?” प्रगति ने अनुरोध करते हुए कहा।

“जी बिलकुल!” पूजा ने कहा।

पूजा ने हॉस्पिटल स्टाफ्स के रेकर्ड बुक से आमिरा का नंबर व एड्रेस निकाला।

“ये रहा उनका एड्रेस व नम्बर।” पूजा ने रजिस्टर को प्रगति की ओर बढ़ाते हुए कहा।

“थैंक यू सो मच।” प्रगति ने रजिस्टर का फोटो क्लिक करते हुए कहा।

प्रगति ने अपना फोन निकाला और रजिस्टर पर लिखे आमिरा के नंबर पर फोन किया। आमिरा का फोन बंद आ रहा था। प्रगति ने थोड़ी देर इन्तजार किया, शायद आमिरा का फोन चालू हो जाये, लेकिन जब कुछ समय बाद दोबारा कोशिश करने पर भी वही सन्देश आया- “आपके द्वारा डायल किया गया नंबर नेटवर्क कवरेज क्षेत्र से बाहर है”- तो वह थोड़ी चिंतित हो गई। उसे

लगा आमिरा ने या तो जान-बूझ कर फोन को बंद रखा है या उसने हॉस्पिटल प्रशासन को अपना गलत नंबर दिया है। प्रगति ने रजिस्टर पर दर्ज पते पर जाने का निर्णय किया।

“भैया रोहिणी सेक्टर 8 चलेंगे?” प्रगति ने टैक्सी वाले से कहा।

टैक्सी वाले ने प्रगति को उसके बताए पते पर पहुंचा दिया। प्रगति ने रजिस्टर पर लिखे पते के अनुसार हंसराज अपार्टमेंट के फ्लैट नंबर 7 की तरफ रुख किया।

“ये क्या...यहाँ तो ताला लगा हुआ है।" प्रगति ने स्वयं से कहा।

“आप किन्हीं को खोज रहीं हैं?” बगल के फ्लैट में प्रवेश करती एक महिला ने प्रगति से पूछा।

“जी..आमिरा जी फ्लैट नंबर 7 में ही रहती हैं न...मैं उनसे ही मिलने आयी थी?” प्रगति ने कहा।

“ये फ्लैट तो निगार का है, लेकिन हाँ कुछ दिनों पहले बिहार से उनकी फ्रेंड यहाँ पर आई थी। महिला ने कहा।

“निगार जी से कब मुलाक़ात हो सकती है?” प्रगति ने कहा।

“वो तो अभी ऑफिस में होंगी... अमूमन वो रात 10 बजे के बाद ही आती है।" महिला ने कहा।

“जी शुक्रिया मैं रात को आ जाती हूँ।" प्रगति ने कहा।

बुझे मन से प्रगति अपने घर की ओर निकल गई। शाम का सूरज धुंधलके में खो रहा था, जैसे उसकी लालिमा भी प्रगति की दिल की बेचैनी में समा गई हो। सड़कों पर रौशनी की हल्की झालरें टिमटिमा रही थी, मगर प्रगति की आंखों में कोई चमक नहीं थी। वह आमिरा से मिलना चाहती थी,

हर हाल में...हर कीमत पर, क्योंकि उसने महसूस किया था करण की आँखों में छिपी आमिरा की तस्वीर को। एक ऐसी तस्वीर, जो अधूरी थी, मगर गहराई में बसी थी। वो तड़प, वो खामोशियाँ, जो करण की मुस्कान के पीछे छिपी थीं, प्रगति उन्हें महसूस कर चुकी थी। करण से उसका कोई रिश्ता नहीं था, मगर एक अपनापन तो था, एक दोस्ती, जो अब एकतरफा दर्द में बदलने लगी थी। वो चाहती थी कि करण मुस्कुराये, उसके जीवन में फिर से उजाला लौटे. उसका बस चले तो वो करण के सभी तकलीफों को हर ले। लेकिन वह जानती थी कि यह काम बहुत मुश्किल है।

“कहाँ थी तुम?” अभी-अभी दरवाज़ा खोल कर घर के अंदर आई प्रगति से करण ने पूछा। उसकी आवाज़ में चिंता और हल्की झुंझलाहट थी।

“मैं आमिरा से मिलने गई थी...लेकिन उससे मुलाक़ात नहीं हो पाई।" प्रगति ने धीरे से कहा, मानो हर शब्द सोच-समझ कर कह रही हो।

करण की भौंहे सिकुड गई।

“आमिरा से मुलाकात.. क्यूँ?” उसके लहजे में हैरानी के साथ एक कड़वाहट भी थी।

“मैं चाहती हूँ, तुम दोनों फिर से एक हो जाओ।” प्रगति की आवाज़ अब भी नरम थी, मगर उसमें दृढ़ता थी। जैसे उसने ये फैसला खुद के लिए नहीं, करण की खुशी के लिए लिया हो।

यह सुनते ही करण के दिमाग में एक सन्नाटा छा गया। वो जैसे किसी अनसुनी ध्वनि में खो गया- एक ऐसा मौन जिसमें उसकी यादें, पछतावे और अधूरी उम्मीदें सब कुछ गूँज रही थी।

प्रगति के शब्द उसके भीतर गूंजते रहे: ‘तुम दोनों फिर से एक हो जाओ’।

वो कुछ कहना चाहता था, लेकिन शब्द गले में अटक गए। आँखें एकटक प्रगति को देखती रहीं- एक ऐसी लड़की जो उसका दर्द समझती थी, पर उसे वापस उस मोड़ पर ले जाना चाहती थी जहाँ से वो टूट कर निकला था। कमरे में ख़ामोशी थी। सिर्फ दिलों की धडकनों की आवाज़ थी- एक अधूरे रिश्ते की, एक निःस्वार्थ प्रेम की, और एक बेमकसद कोशिश की।

"वो मुझे नहीं अपनाएगी।" करण ने धीरे से कहा।

"यदि तुम्हें अपनाना ना होता तो वो यहाँ तक क्यूँ आती, तुम्हारा पीछा क्यूँ करती? प्रगति ने कहा।

"ये महज एक इत्तेफाक है।" करण ने कहा।

"इत्तेफाक एक दिन हो सकता है...प्रत्येक दिन नहीं।" प्रगति ने कहा।

"प्रत्येक दिन से तुम्हारा क्या मतलब है?" करण ने कहा।

"वो हर रोज आई है इस घर पर..

इस घर की खिड़कियों ने उसे आते देखा है,

हर सुबह की धूप में, हर शाम की परछाईं में,

चुपचाप देखती रही हैं दीवारें उसकी परछाईं को...

उसकी आँखों में एक सवाल था,

उसके क़दमों में कुछ रुकते लम्हें थे,

शायद कोई उम्मीद थी जो इस घर से जुड़ी थी,

कोई किस्सा था जो अधूरा रह गया था।"

प्रगति ने सुबकते हुए कहा।

करण- “वो जिस मोड़ पर मुझसे अलग हुई, वो सामान्य नहीं था। मैंने मिन्नतें की, हाथ जोड़ा, फिर भी वो चली गई। उससे बिछड़े तो महीने बीत गए। वक्त के पहिये ने तो अब मेरी यादों को भी काफी हद तक धुंधला कर दिया होगा। वो अब शायद मुझे भूल चुकी होगी, जीवनसाथी शानदार हो तो प्रेमी को भुला पाना आसान होता है। उससे बिछड़ने के बाद मैंने हमेशा उसके लिए खुशियों की कामना की है। हर उस सपने को उसके लिए उसके जीवनसाथी के साथ जीवंत होने की कामना की है जो हमलोग साथ देखा करते थे। आँखों और दिमाग पर छपी उसकी तस्वीर अब मिट चुकी है, लेकिन ये भी सच है कि दिल पर छपी उसकी तस्वीर मिटाए नहीं मिटती। आज ही के दिन 12 बरस पहले पहली बार हम दोनों की बातें हुई थी, बीमार सी थी उस रोज वो और दवाई लेकर मैं पहुंचा था उसके हॉस्टल। उस दिन पहली दफा मैंने उसकी परवाह की थी और जिंदगी भर उसकी परवाह करने का आकांक्षी हो गया था। किस्मत ने बहुत जल्दी बहुत कुछ देकर सब कुछ छीन लिया।”

प्रगति की आँखों से आंसू फव्वारे की तरह बह रहे थे। इतना निर्मल, निश्छल और पावन प्रेम को उसने अब तक कहीं नहीं देखा था। वो आज आमिरा के लिए करण के दिल में उस प्रेम को महसूस कर रही थी। प्रगति ने धीमे से अपनी आँखें पोंछी। यह जल बहकर उसकी आत्मा को हल्का कर चुका था। वो महसूस कर पा रही थी- सच्चा प्रेम ना तो जोर से पुकारता है और न ही कोई शोर मचाता है- वह बस किसी के ह्रदय में चुपचाप गूंजता है, जैसे कोई प्रार्थना।

“उसने अब तक शादी नहीं की करण फिर जीवनसाथी होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।” प्रगति ने कहा।

“तुम कहना क्या चाहती हो, उसने मेरे लिए अब तक शादी नहीं की?” करण ने कुटिलता से मुस्कुराते हुए कहा।

“हाँ मैं ऐसा समझती हूँ, और तुम्हें भी ऐसा ही समझना चाहिए।" प्रगति ने कहा।

“कोई हम जैसे लोगों के लिए भी अपनी जिंदगी रोक कर रख सकता है क्या?” करण ने कहा।

“किसी का तो पता नहीं...आमिरा ने रोका है अपनी जिंदगी को तुम्हारे लिए।" प्रगति ने धीमे से कहा।

“क्या मजाक करती हो...यदि ऐसा होता तो क्या वो पिछले 1 वर्ष में मुझसे मिलने का प्रयास नहीं करती?” करण ने ठहाका लगाते हुए कहा।

“हो सकता है...उसने इंतजार किया होगा कि तुम मिलोगे! क्या तुमने उससे आखिरी बार मिलने की कोशिश की?” प्रगति ने कहा।

आखिरी मुलाकात अक्सर पहली मुलाक़ात से कहीं ज्यादा याद रहा करती है। आखिरी मुलाकात छोड़ कर जाती है जाने कितने पश्चाताप, जाने कितनी तड़प, जाने कितने सवाल, और उन सवालों को न पूछ पाने का मलाल, और फिर उन सवालों के जवाब न मिल पाने का मलाल।

लगता है मानो अगर वो सवाल पूछ लिए गए होते तो वो मुलाक़ात आखिरी न होती...फिर हम जिंदगी भर खुद ही उन सवालों को मन ही मन दोहराते हैं, और मन ही मन उनके जवाब भी अपने मन मुताबिक खुद ही दे दिया करते हैं। खुद से इन सवाल-जवाबों का सिलसिला अनंत काल तक चलता है...और पहले प्रेम की वो आखिरी मुलाकात साँसों के अंत के साथ ही या तो किसी चिता में जल जाया करती है, या दफना दी जाती है।

“मैं गया था उससे मिलने, मैंने कहा था उससे- “मेरे और तुम्हारे बीच केवल प्रेम नहीं है। मैं और तुम, बहुत कुछ हैं, प्रेमी होने के अलावा। हम वो दोस्त हैं जो जानते हैं एक-दूसरे के दुःख. जिन्हें मालूम है एक-दूसरे की कमजोरियां। वो दोस्त जिन्हें पता है, हंसाने की लाखों तरकीबें।

हम सिर्फ प्रेमी नहीं हैं। मैं और तुम हमसफ़र हैं...जो सफर में साथ चल रहे, एक-दूसरे का सहारा बन कर. हमसफ़र... जिन्हें रास्तों की फ़िक्र नहीं जब तक कि एक-दूसरे के साथ हैं. हमसफ़र... जिनकी कोई मंजिल नहीं, जहाँ कदम रुकेंगे, वहीं हमारा घर होगा। हम दोनों नदी और किनारे की तरह हैं। तुम मुझसे कितनी भी दूर जाओ, मुझ तक ही लौट आओगी। मैं, तुम्हारा किनारा...हमेशा तुम्हारे इंतजार में रहूँगा। हम दोनों कुछ नहीं हैं, एक-दूसरे के बिना। न किनारे के बिना कोई नदी होगी, न नदी के बगैर किनारा।

मेरे और तुम्हारे बीच में केवल प्रेम नहीं है...मेरे और तुम्हारे बीच एक खाली संसार है...जिसे भर देना है हमें, जीवन से, ऋतुओं से और गुलाब से।”

जैसे-जैसे इस संबोधन के शब्द आगे बढ़ रहे थे, करण की पलकें भींगती चली जा रही थी। संबोधन का अंत आते-आते करण फूट-फूट कर रोने लगा।

“मुझे अब तुमसे कोई शिकायत नहीं है...तुम क्यूँ रोते हो...तुमने रिश्ते को बचाने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास किया।" प्रगति ने करण के आंसू को पोंछते हुए कहा।

“मुझे फिर भी एक मलाल है।” करण ने कहा।

प्रगति- “कैसा मलाल?”

“उससे सच नहीं कह पाने का मलाल.” करण के मुंह से ये बात अनायास ही निकल पड़ा।

“कैसा सच?” प्रगति ने कहा।

“जाने दो...मैं इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता।” करण ने कहा।

“नहीं, करण मुझे पूरी बात बताओ...कैसा सच और क्यूँ टूटा तुमलोगों का रिश्ता?" प्रगति ने जिद करते हुए कहा।

“मैंने कहा न मैं इस बारे में कोई बात नहीं करना चाहता।” करण ने झुंझलाते हुए कहा।

प्रगति- “सच जैसा भी हो, कह देना चाहिए।”

करण- “जब सच कहने से रिश्ते में दरार पैदा होने की संभावना हो तो हमें चुप रहना चाहिए।"

प्रगति- “तुम्हारी चुप्पी तुम्हारे और आमिरा के रिश्ते को कहाँ बचा सकी करण।”

करण ने अपने चेहरे को दूसरी दिशा में मोड़ते हुए कहा- “लेकिन, मेरी ये चुप्पी हम-दोनों के रिश्ते को बचा सकती है।”

प्रगति- “क्या ये सच मुझसे जुड़ा हुआ है?”

करण- “मैं इस मामले में बात नहीं करना चाहता।"

प्रगति ने करण के चेहरे को अपनी ओर घुमाते हुए कहा- “लेकिन, मैं जानना चाहती हूँ और तुम्हें बताना होगा।"

करण- “जबरदस्ती करोगी मेरे साथ?”

प्रगति- “कर सकती हूँ.” प्रगति ने करण की आँखों में आँखे डाल कर कहा।

“इससे पहले की करण कुछ कह पाता, दरवाज़े की घंटी बज उठी। प्रगति ने जाकर दरवाज़ा खोला. सामने आमिरा खड़ी थी- उसके हाथों में एक सुन्दर पुष्पगुच्छ था और चेहरे पर बनावटी मुस्कान।"

प्रगति एक पल के लिए चौंक गई. उसे इस बात का बिलकुल अनुमान नहीं था कि जिसकी खोज में वो दिन भर परेशान थी वो शख्स स्वतः ही उसके दरवाज़े पर दस्तक देगा।

प्रगति ने चौंकते हुए कहा- “मैम आप यहाँ?”

“जी, मैं कल अपने नये सफर पर जा रही हूँ तो सोची आज आपसे मिलती चलूँ. पिछली मुलाकात अधूरी रह गई थी...आज सोची आपको और आपके पति को नए जिंदगी की शुभकामना भी दे दूंगी...क्यूँ मेरा यहाँ पर इस तरह आना अच्छा नहीं लगा?” आमिरा ने कहा।

“नहीं मैम आप कैसी बातें कर रही हैं...ये मेरी खुशकिस्मती है कि आपके कदम मेरे घर में पड़े हैं।" प्रगति ने शालीनता भरे स्वर में कहा।

“आपके पति कहाँ हैं? मैं आप दोनों को एक साथ शुभकामनाएं देना चाहती हूँ।" आमिरा ने कहा.

“मैम वो मेरे पति नहीं हैं, वो अंदर कमरे में हैं, मैं उन्हें बाहर बुला देती हूँ. आप खड़ी क्यूँ हैं, बैठिये न..।” प्रगति ने कहा।

बरामदे पर होती हलचल ने करण का ध्यान इस ओर आकृष्ट कर दिया था। इससे पहले कि प्रगति उसे आवाज़ देती वो खुद ही बरामदे पर आ खड़ा हुआ। करण और आमिरा की नजरें एक-दूसरे से टकराई. महीनों बाद आमिरा को देख कर करण थोड़ा संतुष्ट था और थोड़ा भयभीत भी। करण ने डरते हुए धीरे से कहा-

“कैसी हो?”

“ठीक हूँ।” आमिरा ने जवाब दिया।

“अम्मी-अब्बू कैसे हैं?” करण ने मासूमियत से पूछा।

“सब ठीक हैं।” आमिरा ने कहा।

“दिल्ली कब आई?” करण ने पूछा।

“कुछ दिनों पहले।” आमिरा ने धीरे से कहा।

“किसलिए आई थी?” करण ने पूछा.

“अतीत के जख्म को कम करने आयी थी इस शहर में, इस शहर ने उस जख्म को और भी हरा कर दिया।" आमिरा ने कहा।

कमरे में एक सन्नाटा-सा छा गया. आमिरा और करण एक-दूसरे को निहारे जा रहे थे और प्रगति ये सोच कर मन-ही-मन में खुश हुई जा रही थी कि शायद ये बिछड़े जोड़े फिर से एक हो जाएँ।

“तुम्हें और तुम्हारी होने वाली पत्नी प्रगति को इस ‘खण्डिता’ की तरफ से उज्जवल भविष्य की ढेरों मुबारकबाद।” आमिरा ने कंपकपाते होठ लेकिन कड़े स्वर के साथ कहा।

“तुम पागल हो गई हो और खुद को ‘खण्डिता’ क्यूँ कह रही हो?” करण ने कहा।

आमिरा अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सकी, उसके आंसू झरने की तरह बहने लगे, लेकिन वाणी में कठोरता व गुस्सा बना रहा।

“जिस औरत का पति रात किसी पराई स्त्री के साथ गुजारता हो...परायी स्त्री के घर में एक छत के नीचे रहता हो...वो औरत खुद को खण्डिता नहीं तो और क्या कहेगी करण?” आमिरा ने चिल्लाते हुए कहा।

"तुम्हें कुछ नहीं पता, तुम कुछ नहीं जानती हो। मुझे लेकर तुम्हारी सोच कल भी गलत थी और आज भी गलत है।" करण ने आमिरा को समझाने का प्रयास करते हुए कहा।

"किसे मुर्ख बनाने का प्रयास कर रहे हो...मैंने देखा है परायी स्त्री के साथ तुम्हारे आलिंगन को, मैंने क्या...पूरे पटना शहर ने देखा है परायी स्त्री के साथ तुम्हारे आलिंगन को...और तुम अब भी नहीं बदले करण। तुम एक कामुक इंसान हो करण।" आमिरा ने अपने आंसू को पोछते हुए तथा आवाज़ की तीव्रता को बढ़ाते हुए कहा।

"ये आप कैसी बातें कर रहीं हैं मैम...आप जो समझ रही हैं वैसा कुछ भी नही है।" प्रगति ने आमिरा को समझाने के लिए उसे पकड़ने का प्रयास करते हुए कहा।

"तुम चुप रहो...तुम ही हो न वो लड़की जो पटना के मौर्य होटल में करण के साथ रंगरलियाँ मना रही थीं। तुम ही हो न वो लड़की जिसके लिए करण ने मुझे धोखा दिया?" आमिरा ने प्रगति को धक्का देते हुए कहा।

"मैम......"

"आमिरा..." दो आवाज़ एक साथ उस बरामदे पर गूँज उठी- एक आमिरा की व दूसरी करण की।

"तुम्हें जो कुछ कहना है मुझसे कहो, प्रगति की इसमें कोई भूमिका नहीं है।" करण ने कहा।

"ओह रियली, रियली इसकी कोई भूमिका नहीं है? मैंने जब इसे पहली बार तुम्हारे साथ देखा था उस रोज ही मैं इस बात को जान चुकी थी की ये वही लड़की है। इसके कलाई के निशान सब कुछ बता रहे हैं। माफ करना

करना करण मैं मूर्ख नहीं हूँ, और इत्तेफाक से अंधी भी नहीं जो सही गलत का फैसला ना कर पाऊं।" आमिरा ने अपने आंसू को पोंछते हुए कहा।

प्रगति इस बात को समझ चुकी थी कि ये वही सच था जिसे करण उससे छिपा रहा था। उसे इस बात का भी बोध हो चुका था कि आमिरा उसे ही अपने और करण के अलगाव के लिए जिम्मेदार समझती है। प्रगति ने एक लंबा सांस लेकर अपने चित को शांत किया, उसे इस बात का ज्ञान था कि उसके लिए इस वक्त सबसे महत्वपूर्ण कार्य उस सच्चाई को बाहर लाना है जो अब तक सभी से छिपी हुई थी। शायद ये सच्चाई आमिरा के दिल में बने जख्म को भर सकती थी। प्रगति ने आमिरा से कहा-

"सच वो नहीं जो दिखाई गई है..

उसे समझिए जो छिपाई गई है...

हकीकत किसी को पता कैसे होगी..

कहानी बनाकर सुनायी गई है...

बचायी गई थी उस रोज मैं उन दरिंदों से..

आलिंगन में लिपटी दिखाई गई है."

आमिरा: "तो असली सच क्या है?"

प्रगति: "मैं आज भी सिहर जाती हूँ उस रात को याद कर के जब मैं एक सेमिनार में शामिल होने के लिए पटना गई थी। रात के करीब 11 बज रहे थे, मैं एअरपोर्ट से मौर्या होटल की ओर जा रही थी। मैं यह महसूस कर रही थी कि कुछ गुंडे मेरा पीछा कर रहे हैं, जिसमें से एक का नाम मुझे आज भी अच्छे से याद है, मारूफ नाम था उसका। वो लोग मेरा पीछा करते हुए होटल के कमरे तक आ पहुंचे थे। उन गुंडों ने होटल के कमरे में मेरा रेप करने का प्रयास किया और जब वो इसमें असफल रहे तो उन्होंने मेरे शरीर पर आग लगा दिया। मैं नहीं जानती उस रोज करण वहाँ कैसे पहुंचा? लेकिन,

करण वो मसीहा था जिसने मेरे शरीर पर लगे आग को बुझाने का प्रयास किया...आग की लपटों से मेरे कपड़े जल कर खाक हो गए थे...मैं निर्वस्त्र हो चुकी थी...फिर उनलोगों ने विडियो शूट करने का प्रयास किया.. करण ने मेरी इज्जत को ढंकने के लिए अपनी टी-शर्ट को उतार कर मेरी ओर उछाला...उन बदमाशों ने उस टी-शर्ट को भी जला दिया और विडियो शूट करने का प्रयास करने लगे...फिर कोई रास्ता ना सूझता देख करण ने मेरी इज्जत को ढंकने के लिए मुझे कस कर अपनी बाहों में जकड़ लिया।

वो अलिंगन केवल दो शरीरों का मिलन नहीं था, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सम्मान और करुणा का प्रतीक था। जब एक असहाय स्त्री अपमान और संकट के अन्धकार में डूबी हुई थी, तब उस एक अलिंगन ने उसकी मर्यादा को बचाया था। यह अलिंगन न केवल उसके आत्मसम्मान की रक्षा थी, बल्कि समाज को यह सन्देश भी था कि नारी मात्र शरीर नहीं, बल्कि सम्मान की मूर्ति है। यह क्षण पवित्र इसलिए था क्योंकि उसमें कोई वासना नहीं थी, उसमें केवल सुरक्षा और आदर का भाव था।"

प्रगति की आँखों से आंसू सैलाब की तरह बह रहे थे, लेकिन दिल में एक संतुष्टि थी...एक ऐसे संतुष्टि जो केवल सच कहने से आती है। वहीँ आमिरा का मन का बोझ थोड़ा तो हल्का अवश्य हुआ था लेकिन उसे दिल में अब भी कुछ सवाल थे।

आमिरा: “करण तुम्हारे घर में तुम्हारे साथ एक छत के नीचे क्यूँ रहता है?”

करण: “क्या बकवास कर रही हो तुम, अब तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं दिया जायेगा। तुम्हें हमें गलत समझना है तो समझो।" करण ने चिल्लाते हुए कहा।

प्रगति: “इन्हें सवाल करने दो करण, सवाल करना इनका हक है और इनके सवालों का जवाब देना हमारा फ़र्ज़।" आमिरा ने शालीनता पूर्वक कहा।

प्रगति: “मैम, दिल्ली में करण से मेरी मुलाकात जिस अवस्था में हुई वो बेहद ही विकट अवस्था थी... करण बेहद ही बुरे मानसिक स्थिति से गुजर रहा था। डॉक्टर ने करण की अच्छी तरह देख-भाल करने को कहा था। करण का यहाँ कोई ठिकाना नहीं था। इसलिए मैं इसे अपने घर ले आई।”

आमिरा: “मैं कैसे मान लूँ कि एक छत के नीचे तुम्हारे साथ रह कर करण अभी भी पाक (पवित्र) है?”

करण: “तो मत मानो... तुम्हारी झूठी संतुष्टि के लिए क्या कोई अग्नि परीक्षा देगा?” करण ने खीजते हुए कहा।

प्रगति: “मैम, आपको यकीन दिलाने के लिए मैं क्या कर सकती हूँ?” प्रगति ने करण को चुप रहने का इशारा करते हुए कहा।

आमिरा: “तुम्हें हमारी जिंदगी से दूर जाना होगा...इतनी दूर कि वापस आने की कोई संभावना ही ना बचे।"

हॉल में पूरी तरह सन्नाटा छा गया...प्रगति अपने रसोई घर की ओर बढ़ी और उसके रसोई घर पहुँचते ही वहाँ से किसी के फर्श पर गिरने की आवाज़ आई...करण और आमिरा भागते हुए रसोई घर पहुंचे। प्रगति ने चाकू से अपनी कलाई को काट रखा था-

“प्रगति ये क्या किया तुमने”? करण ने घबरा कर रोते हुए कहा।

“ये जिंदगी तुम्हारी जिंदगी थी करण...तुम्हारी खुशियों के लिए कुर्बान हो रही है।” प्रगति ने धीमे से मुस्कुराते हुए कहा।

“तुम्हारी जिंदगी का सौदा कर के मैं कैसे खुश रह सकता हूँ?” करण ने रोते हुए कहा।

“रोना मत करण...तुम्हारी जिंदगी..तुम्हारी आमिरा का ख्याल रखना...उसका साथ कभी मत छोड़ना...उसके साथ रहोगे तो मैं जहाँ भी रहूंगी, मैं समझूंगी की मैं भी तुम्हारे साथ हूँ।” प्रगति ने अपनी आँखों को मूंदते हुए कहा।

आमिरा का बंद दिमाग अब खुल चुका था। पूर्वाग्रह की दीवारें टूट चुकी थीं। सच्चाई ने उसकी आत्मा को झकझोर दिया था। उसे अपनी भूल का अहसास हो चुका था। हर एक घटना, हर एक शब्द जो उसने करण और प्रगति के लिए कहे थे- अब एक-एक करके उसकी स्मृति में लौट रहे थे, जैसे आईना दिखा रहे हों। उसे यह समझ आने लगा था कि उसने करण के साथ कितना अन्याय किया, उसकी भावनाओं को कितना ठेस पहुंचाया। वो अपने किये पर पछता रही थी। उसका दिल अपराधबोध से भारी था। आँखें बार-बार भर आती थीं और आत्मा क्षमा मांगने को व्याकुल थी। उसका पछतावा महज एक औपचारिकता नहीं था, वो भीतर तक टूट चुकी थी। आमिरा ने घबराते हुए एम्बुलेंस को फोन किया। 5 मिनट में सायरन बजाती एम्बुलेंस प्रगति के घर पर पहुँच गई। प्रगति अपने होश गंवा चुकी थी, लेकिन उसके चेहरे पर पीड़ा के नहीं अपितु संतुष्टि के भाव थे जैसे मानो सदियों के प्यासे को जल हाथ लग गया हो। मेडिकल टीम ने बिना देर किये प्रगति को स्ट्रेचर पर लिटाया और तुरंत उसका प्राथमिक इलाज शुरू किया। आमिरा की आँखों में पछतावा के आंसू थे, वो फूट-फूट कर रो रही थी और कह रही थी-

“तुम्हें कुछ नहीं होगा, मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूंगी। प्लीज, प्रगति, आँखें मत बंद करना।"

एम्बुलेंस शहर के सबसे बड़े अस्पताल की ओर सरपट भाग रही थी। आमिरा हर पल प्रगति का हाथ थामे रही, जैसे उसकी पकड़ ही प्रगति की सांसों को थामे हुए थी। रास्ते भर उसकी आँखों के आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। उसे अपने किये पर लगातार पछतावा हो रहा था।

अस्पताल पहुँचते ही डॉक्टरों की टीम ने प्रगति को इमरजेंसी वार्ड में ले लिया। दरवाज़ा बंद हुआ और आमिरा बाहर खड़ी रह गई- बेचैन, असहाय और डरी हुई।

कुछ घंटों बाद...इमरजेंसी वार्ड के बाहर घड़ी की टिक-टिक आमिरा और करण के दिल की धडकनों से होड़ ले रही थी। हर डॉक्टर या नर्स को बाहर आता देख उनकी उम्मीद जागती, लेकिन फिर मायूसी लौट आती। अचानक, दरवाज़ा खुला और डॉक्टर शर्मा बाहर आये।

करण (बेचैनी से): "डॉक्टर साहब...प्रगति कैसी है?"

"खून काफी निकल चुका है....हालत काफी नाजुक है...कुछ कह नहीं सकते।" डॉ शर्मा ने कहा।

यह सुनकर करण के चेहरे पर तनाव और घबराहट और बढ़ जाती है। वह पास रखी बेंच पर बैठ जाता है और अपने सिर को थाम लेता है। तभी अंदर से नर्स बाहर निकलती है और डॉक्टर को इशारे से बुलाती है। डॉक्टर शर्मा तेज़ी से वापस अंदर चले जाते हैं।

करण (धीमे से): "यदि प्रगति को कुछ हुआ तो मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूँगा। तुम्हारी ईगो ने एक पवित्र आत्मा को मौत के मुंह में धकेल दिया।"

आमिरा (रोते हुए): "मैं माफ़ी के लायक हूँ भी नहीं करण। तुम मुझे जो भी सजा दोगे मैं उसे झेलने को तैयार हूँ।"

डॉ. शर्मा भागते हुए इमरजेंसी वार्ड से बाहर निकलते हैं। करण तुरंत उनके पास दौड़ता है।

डॉ शर्मा (थके स्वर में): "मिस्टर करण...प्रगति के शरीर में खून की काफी कमी हो गई है उसे तत्काल खून चढ़ाना पड़ेगा।"

करण (रोते हुए): "डॉ. साहब ...जैसे भी हो उसे बचा लीजिए प्लीज... मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ।"

डॉ शर्मा: "प्रगति को तत्काल O पॉजिटिव ब्लड की आवश्यकता है।"

तभी पीछे से एक आवाज़ आती है, थोड़ी धीमी लेकिन दृढ़। आमिरा, जो अब तक रो रही थी, आगे बढ़ती है। उसकी आँखों में चिंता है, पर आवाज़ में साहस।

आमिरा: "डॉ. साहब मेरा ब्लड ग्रुप O पॉजिटिव है...आप मेरे ब्लड को प्रगति की जान बचाने के लिए ले लीजिए।"

डॉ शर्मा एक पल के लिए आमिरा को देखते हैं, फिर सिर हिलाकर नर्स को इशारा करते हैं।

डॉ शर्मा: "बहुत अच्छा...नर्स इन्हें तुरंत ब्लड डोनेसन वार्ड में ले जाइये।"

आमिरा को स्ट्रेचर पर नहीं बल्कि हिम्मत से चलते हुए वार्ड की ओर ले जाया जाता है। करण उसकी ओर कृतज्ञता भारी नजरों से देखता है।

बाहर आसमान में हलकी सी रौशनी फ़ैल रही है। ICU की मॉनिटर पर दिल की धड़कनों की नियमित बीप सुनाई दे रही है। प्रगति ऑक्सीजन मास्क के साथ बिस्तर पर लेटी है। डॉक्टर और नर्सें आसपास हैं। दो घंटे तक चले

ऑपरेशन के बाद माहौल अब कुछ शांत है। तभी उसकी उंगलियां हिलती हैं...धीरे-धीरे उसकी आँखें खुलती हैं।

डॉ शर्मा (नर्स से): "देखो होश आ गया है। ब्लड प्रेशर भी स्टेबल है।"

प्रगति की नजरें चारों ओर घूमती हैं, जैसे किसी को ढूँढ रही हो। उसकी आवाज़ धीमी है लेकिन साफ़।

प्रगति (धीरे-धीरे): "अ..आमिरा मैम...? कर...करण...कहाँ है?"

डॉ शर्मा मुस्कुराते हैं। वह नर्स को इशारा करते हैं। कुछ ही देर में करण और आमिरा कमरे में आते हैं। करण की आँखों में खुशी के आंसू हैं, जबकि आमिरा की आँखों में खुशी की आंसू के अलावा पछतावा है, लेकिन चेहरे पर एक गहरा सुकून।

करण (आगे बढ़कर): "मैं यहीं हूँ प्रगति..तुम ठीक हो..सब ठीक हो गया..।"

प्रगति की आँखों से एक आंसू बह निकलता है। उसकी नजर आमिरा पर टिकती है।

प्रगति (कमजोर मुस्कान के साथ): "मैम यहाँ आइये...मेरे पास।"

आमिरा (धीरे से प्रगति का हाथ थाम कर रोते हुए): "तुम मुझे मैम मत कहो...तुम तो मेरी बहन हो। मुझे माफ कर दो प्रगति...मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई।"

प्रगति (हल्की मुस्कान के साथ): "स्त्री के लिए प्रेम का अर्थ है कि कोई उससे प्रेम करे, पुरुष में थोड़ी पशुता होती है, जिसे वो इरादा कर के भी नहीं हटा सकता, वही पशुता उसे पुरुष बनाती है। पुरुष और स्त्री की आत्माएं दो विभिन्न पदार्थों की बनी है।

करण तो सिर्फ आपका है दीदी...जो इंसान आपके लिए पागल हो सकता है...वो किसी और का कैसे हो सकता है?”

आमिरा की आंखों में खुशी के आंसू छलक जाते हैं, वह करण की ओर देखती है और कहती है- "तुमने कहा था न करण कि जिस दिन मुझे सच पता चलेगा तो उस दिन मुझे तुम पर गर्व होगा। मुझे गर्व है कि- “मैं तुम्हारी 'खण्डिता' हूँ।"

तीनों के बीच एक गहरा भावनात्मक क्षण पसर जाता है। डॉ शर्मा दूर खड़े यह दृश्य देख रहे होते हैं- एक मरीज़ और एक रिश्ते को बचा लेने की तसल्ली उनके चेहरे पर साफ़ झलकती है।

क्या आप अगली कड़ी के लिए तैयार हैं?
यदि हैं तो मुझे इस नंबर पर मैसेज करें-

फोन नंबर: 7992206169

ई-मेल: nirjarvrind9931@gmail.com